बिखरे मोती

अव्वल

लेखक
मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी

बिखरे मोती

(अव्वल)

लेखक

मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपूरी

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

NEW DELHI-110002

बिखरे मोती (1)

लेखक

मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी

प्रूफ़ रीडिंग

सईद अख़्तर

प्रस्तुत कर्ता

(अल-हाज) मुहम्मद नासिर ख़ान

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off : 2158, M.P. Street, Pataudi House, DaryaGanj, New Delhi-2
Phone : (011) 23289786, 23289159 Fax : +91-11-23279998
E-mail : faridexport@gmail.com - Website : www.faridexport.com

Bikhre Moti (Vol. I)

Author:

Maulana Muhammad Yunus Sahab Palanpuri

Edition: **2015**

Pages: **256**

Our Branches:

Delhi : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.: 23256590

Mumbai : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
216-218, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan,
Dongri, Mumbai-400009
Ph.: 022-23731786, 23774786

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

विषय-सूची

बिखरे मोती

(अव्वल)

पेश लफ़्ज़

इस साल इज्तेमाअ-ए-राएविंड के मौक़े पर मौलाना मुहम्मद यूनुस पालनपूरी इब्ने हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपूरी रहमतुल्लाहि अलैहि से बंदे की मुलाक़ात हुई। मुलाक़ात के दौरान आलमी उमूर पर गुफ़्तगू हुई, चलते चलते मौलाना की एक कापी पर नज़र पड़ी। पूछने पर बताया कि वह मुख़्तलिफ़ किताबों के मुतालअे के दौरान जो मुफ़ीद और अहम नादिर बात सामने आती उस को अपनी कापी में लिखते रहते ताकि ज़रूरत के वक़्त इससे फ़ायदा उठाया जा सके यह हमारे अकाबिर और अहल-ए-इल्म का तरीक़ भी रहा है। वर्ना कभी कभी बहुत सी मुफ़ीद और अहम बातें मुतालअे के दर्मियान आकर गुज़र जाती हैं और बाद में याद करने पर भी याद नहीं आतीं कि कहाँ पढ़ी थीं और उस वक़्त अफ़्सोस के अलावा कुछ हासिल नहीं होता। इसलिए कहा गया है:

اَلْعِلْمُ صَيْدٌ وَالْكِتَابَةُ قَيْدٌ

(इल्म एक शिकार है और लिखना उसके लिए बेड़ी है!
यानी लिखने से इल्म महफ़ूज़ हो जाता है)

और यह मुतालअे का ज़ौक़ बज़ाहिर मौलाना को अपने वालिद-ए-मुहतरम लिसानुद्दावत हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपूरी रहमतुल्लाहि अलैहि से विरासत में मिला है कि **'अल् वल-दु सिर्रुन लि-अबीहि'** और बंदे ने अक्सर हज़रत पालनपूरी रहमतुल्लाहि अलैहि को देखा कि मुतालअे के दौरान इस्तिग़राक़ की कैफ़ियत

होती और पूरे तौर से किताब की तरफ़ मुतवज्जह हो जाते। तफ़्सीर का हज़रत को इंतिहाई ज़ौक़ था। एक मर्तबा मुझसे फ़रमायाः जी चाहता है अब हदीस की किताबें देखूं लेकिन क्या करूं क़ुरआन-ए-करीम ऐसा गहरा समंदर है कि इसमें ग़ोता खाते जाओ और मोतियाँ निकालते जाओ, वह मोतियाँ निकलती ही रहती हैं। क़ुरआन-ए-करीम के समंदर में ग़ोता खाने से फ़ुरसत नहीं मिल रही कि हदीस के समंदर में ग़ोते खाऊं, लेकिन वह तफ़्सीर क़ुरआन में अव्वल दर्जा में तफ़्सीरूल क़ुरआन बिल् क़ुरआन (क़ुरआन करीम की आयात की तफ़्सीर दूसरी आयात से) दूसरे दर्जे में तफ़्सीरूल क़ुरआन बिल् हदीस और फिर तफ़्सीरूल क़ुरआन ब-अक़वालुस्-सहाबा वत्-ताबिईन के क़ायल और दाओ भी थे और तफ़्सीर बिर-राय से बहुत डरा करते थे और उस पर रोते और लरज़ते और काँपते देखा है। अरबों के मजमा में भी फ़रमाते थे कि तुमको नसीहत करता हूँ और तुम भी अपनी औलाद को और नसलों को नसीहत कर देना कि क़ुरआन करीम को हदीस और सहाबा के वास्ते के बग़ैर न समझना वरना गुमराह हो जाओगे और गुमराह कर दोगे।

मुतालआ और कुतुब बीनी के ज़ौक़ व शौक़ का यह हाल था कि एक मर्तबा निज़ामुद्दीन में बंदा हज़रतजी रह० के साथ उनके कमरे में दाख़िल हुआ। कमरे की अलमारियों में किताबें सजी हुई थीं। पलंग पर बैठते हुए रो दिये और उन किताबों की तरफ़ इशारा करते हुए बंदे से फ़रमायाः "अल्लाह तआला इनके मुसन्निफ़ीन को जज़ा-ए-ख़ैर मरहमत फ़रमाये, उन्होंने कितनी मेहनत से यह किताबों लिखी थीं और आज सिर्फ़ इनका पढ़ना मुश्किल हो रहा है, लेकिन मौलवी उस्मान! इनको बेकार न

समझना कि ख़्वाह मख़्वाह इतनी किताबें लिख दीं।" और फिर फ़रमायाः "दिल में भी यह बात न लाना बल्कि दावत व तब्लीग़ के ज़रिये अल्लाह तआला उन किताबों की एक एक लाईन और एक एक मस्ले व जुज़ईये को इंसानों की ज़िंदगियों में ज़िंदा करेगा और कर रहा है, और फिर फ़रमाया, मुझे जीने और ज़िंदा रहने की तमन्ना सिर्फ़ इसी वजह से होती है कि अपनी ज़िंदगी मे एक मर्तबा तो इन किताबों को पढ़ ही डालूँ।"

एक दूसरे मौक़े पर फ़रमाया : "कुछ लोग समझते हैं कि इन किताबों का क्या फ़ायदा? हालांकि सोचने की बात है कि अगर बुख़ारी व मुस्लिम को इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि और इमाम मुस्लिम रहमतुल्लाहि अलैहि लिखकर हम पर एहसान न फ़रमाते तो हमें यह हदीसें कैसे पहुंचती, इसी तरह बाक़ी किताबों का हाल है।" दुआओं में हज़रत रहमतुल्लाह का यह जुमला बार-बार कानों में गूंजता है। "ऐ अल्लाह! क़ुरआन व हदीस के अल्फ़ाज़ ज़बान पर जारी फ़रमा दे। क़ुरआन व हदीस की हक़ीक़त दिल में उतार दे। क़ुरआन व हदीस का अमल बदन से जारी फ़रमा दे। क़ुरआन व हदीस को आलम में लेकर फिरने वाला बना दे।" आमीन

जब कोई मुफ़ीद किताब बतलाई जाती तो फ़ौरन उसको ख़रीद कर भेजने का हुक्म फ़रमाते और अपनी किताबों की अल्मारी में उसको रखते, कई बार बंदे से पाकिस्तान में छपी हुई किताबें मंगवाई और इल्मी ज़ौक़ ही का नतीजा था कि ख़ुसूसन अहल-ए-इल्म व उल्मा, दीन व मदारिस के तलबा से इंतिहाई मोहब्बत और तवाज़ो व ख़ुश ख़लक़ी से पेश आते जिसकी तफ़्सील का यह मौक़ा नहीं। लेकिन लिखते वक़्त क्या करूँ उनकी वह मोहब्बत व

शफ़क़्क़त, इल्मी इंहिमाक, तफ़्सीरी ज़ौक़, दुआ में इस्तिग़राक़ की कैफ़ियत और तज़र्रो-व-वज़ारी, उम्मत का ग़म व दर्द, उनका रोज़ाना सुबह निज़ामुद्दीन का बयान, और इज्तिमाअ-ए-राएविंड के बयानात और जमाअतों को रवानगी की हिदायात और अल्लाह तआला की अज़मत व क़ुदरत व जलाल को बयान करते वक़्त मजूमअ पर सन्नाटे का छा जाना और दीन के पूरे आलम में ज़िंदा होने की दिलों में उम्मीद का वाबिस्ता हो जाना और बातिल की तमाम ताक़तों और क़ूव्वतों का मकड़ी का जाला महसूस होना, ग़रीबों की हमदर्दी व ग़म ख़्वारी, ख़ुशहाल घरानों की फ़िक्र, नौजवानों पर ख़ास नज़र। हर एक की सलाहियत से फ़ायदा उठाना और उसकी सलाहियत के इस्तेमाल का मस्रफ़ तलाश करना, उनका तवाज़ो व इज्ज़ व मस्कनत, उनकी सादगी, उनकी नसीहतें और उनका अपने बारे में डर। उनकी फ़िक्र-ए-आख़िरत, उनका क़ुरआन करीम की आयात से हर वक़्त के हालात में रहबरी का लेना, उनकी इज्तिमाअी माल में एहतियात का हाल, उनकी पूरे आलम के हालात से जानकारी, इरतिदाद की ख़बरों से बैचेन हो जाना और फ़ौरी तौर पर जमाअतों का वहाँ भेजना, उनका पुराने काम करने वालों के जोड़ों में उम्मत पर मेहनत और उम्मत की फ़िक्र के साथ हक़ तआला शानुहू के साथ ख़ुसूसी तअल्लुक़ हासिल करने और अपनी रज़ाइल रूहानिया हसद, बुग़ज़, कीना वग़ैरह के दूर करने पर, और इज्तिमाईयत की फ़िक्र पर ज़ोर देना, उनका अमरीका और दूसरे मुल्कों के औक़ात-ए-नमाज़ के सही कराने की फ़िक्र, और फ़ल्कियात में महारत और माहिर-ए-फ़ल्कियात की ग़लतियों पर मुतनब्बह करना, उनकी अपने अमीर की इताअत उनके मश्वरे की पाबंदी, उनका उल्मा व मशाइख़ से

अपने बयानात में ग़लतियों की निशानदही के लिए पूछना और उलमा व मशाइख़ का उनको इत्मीनान दिलाना, और उनका दुनिया भर के उलमा व मशाइख़ के पास जहाँ तक हो सके हर साल हदिया भेजना, उनका हज़रत मौलाना यूसुफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि के बयानात का एहतिमाम से मुतालआ करना, उनका सफ़र से पहले मरकज़ में रहने वालों से मिलकर जाना और मआफ़ी मांगना, यहाँ तक कि अपने छोटों से भी, उनके बयान से हर तबक़े का मुस्तफ़ीद होना और यह समझना कि यह हमारे ही लिए फ़रमा रहे हैं, उनका हज़रत जी मौलाना इनआमुल हसन रहमतुल्लाहि अलैहि के सामने इंतिहाई अदब व तवाज़ो के साथ पेश आना और उनका बंदे को यह फ़रमाना कि मैंने हज़रत जी रहमतुल्लाहि अलैहि को चूस लिया है, उनका हर वक़्त घड़ी को सामने रखकर एक-एक लम्हा को क़ीमती बनाना और वसूल करना और इस सिलसिले में शैख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया रहमतुल्लाहि अलैहि का हवाला देना।

उनका हज़रत शैख़ रहमतुल्लाहि अलैहि से तअल्लुक़ और हज़रत शैख का उनसे तअल्लुक़, उनको सरकार-ए-दो-आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़्वाबों में ब-कसरत ज़ियारतों का होना, उनकी सीरत-ए-नब्वी पर निगाह, उनका सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन की ज़िन्दगी और अक़वाल से इंफ़िरादी व इज्तिमाई उसूलों की इस्तिंबात। उनके अपने रात-दिन के इज्तिमाई व इन्फ़िरादी मामूलात, उनका बुढ़ापे और कमज़ोरी की हालत में मरकज़ की सारी मश्ग़ूलियतों के साथ हिफ़्ज़-ए-क़ुरआन हज़रत जी रहमतुल्लाहि अलैहि की इजाज़त के साथ करना, उनका बयान से पहले और बयान के बाद एहतमाम से हज़रत जी

रहमतुल्लाहि अलैहि के पास जाना और हर बात में हज़रत जी रहमतुल्लाहि अलैहि की तरफ़ रूजूअ करना।

उनका रमज़ानुल मुबारक में ऐतिकाफ़, उनके क़ुरआन करीम पढ़कर सुनाने से मुर्दा दिलों का ज़िन्दा हो जाना, और सख़्त से सख़्त दिलों का मोम होना, और शराबियों, डाकुओं, ज़ालिमों वग़ैरह की उनकी दावत सुनकर तौबा करना। उनके बयान में मज़मून का इर्तिबात वग़ैरह वग़ैरह यह सब पहलू उमड-उमड कर सामने आ रहे हैं और मजबूर कर रहे हैं कि उन सब पर लिखा जाए, अगर अल्लाह के फ़ज़ल और तौफ़ीक़ ने दस्तगीरी की तो उनके क़ुरआनी इफ़ादात पर लिखने का इरादा है।

قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْئٍ قَدْرًا.

बुज़ुर्गों की सवानेह और वाक़िआत बड़े रहबर होते हैं। हज़रत जुनैद रहमतुल्लाहि अलैहि का क़ौल है:

الحكايات جند من جنود الله يثبت الله بها قلوب اولياء ه.

कि इन वाक़िआत के ज़रिए अल्लाह तआला अपने दोस्तों के दिलों को मज़बूत करता और जमाता है। यह ख़ुदाई लश्कर हैं और इसी पर क़ुरआन करीम की आयत से दलील है।

وكلا نقص عليك من انباء الرسل ما نثبت به فؤادك.

तर्जुमाः– और सब चीज़ बयान करते हैं हम तेरे पास रसूलों के अहवाल से जिससे तसल्ली दें तेरे दिल को।" इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि का क़ौल है उलमा के क़िस्से अदब सिखाते हैं, और इसकी दलील क़ुरआन करीम की आयत है:

اولئك الذين هدى الله فبهداهم اقتده.

तर्जुमाः– यह वह लोग थे जिनको हिदायत की अल्लाह ने, सो

तू चल उनके तरीक़े पर।"

और इर्शाद है:

لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِأُوْلِي الْأَلْبَابِ.

तर्जुमा:– अलबत्ता उनके अहवाल से अपना हाल क़्यास करना है अक़्ल वालों को।"

मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाहि अलैहि का क़ौल है। اَلْحِكَايَاتُ تُحَفُ الْجَنَّةِ: हिकायात व वाक़िआत जन्नत के तोहफ़े हैं। दूसरा क़ौल है हिकायात ज़्यादा से ज़्यादा बयान करो कि यह मोती हैं और बहुत मुमकिन है कि इसमें कोई नादिर मोती हाथ आ जाये।

सुफ़ियान बिन ऐनिया रहमतुल्लाहि अलैहि का क़ौल है।

عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ.

सुलहा और नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रहमत बरसती है।

यह सब बातें हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर रहमतुल्लाहि अलैहि का नाम लिखते ही नोक-ए-क़लम पर आ गई और जी चाह रहा है कि इस पर लिखता चला जाऊं लेकिन इसी पर इक्तिफ़ा करता हूँ।

मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब की इस कापी को देखा तो इसमें कुतुब के हवालों के साथ बहुत मुफ़ीद और अहम मज़ामीन थे जिसको जमा करना उनके ज़ौक़ की निशानी है। बंदे ने अर्ज़ किया कि इसको अगर छपवा दिया जाये तो बेहतर होगा। मौलाना मना करते रहे कि यह तो अपनी ज़ाती याद्दाश्त के लिए लिखा है लेकिन बंदे ने इस्रार किया कि अगर इससे दूसरों को भरपूर फ़ायदा पहुँच जाये तो क्या हर्ज है और यह हमारे अकाबिर का मामूल चला आ रहा है। कश्कोल ज़र्री ख़ज़ाने वग़ैरह के नाम से

वह अपने अर्क़-ए-मुताला छपवाते रहे हैं। अलहम्दु लिल्लाह उनके वालिद साहब के तअल्लुक़ की वजह से भी उन्होंने मेरी आजिज़ाना दरख़्वास्त को क़ुबूल कर लिया और कापी मुझे दे दी। यह अलग अलग मज़ामीन का मजमूआ है जिसमें बाहमी इर्तिबात तलाश न किया जाये जैसे जैसे कोई मुफ़ीद बात सामने आती रहे वह जमा करते रहे। इससे जो जिस मज़मून का फ़ायदा उठा ले वह उठा सकता है इसलिए नाम "बिखरे मोती" रखा है। अल्लाह तआला मौलाना को जज़ा-ए-ख़ैर मरहमत फ़रमाये। और उसको उनके लिए और उनके वालिदीन के लिए सदक़ा-ए-जारिया बनाये। अभी एक हिस्सा इसका पेश किया जा रहा है, आइंदा इंशाअल्लाह दूसरा हिस्सा भी सामने आएगा जिसमें मुफ़ीद मालूमात होंगी।

हक़ तआला शानुहू बंदे के लिए भी इस मामूली सी कोशिश को क़ुबूल फ़रमा कर ज़रिय-ए-निजात बनाये और सुलहा और नेक लोगों में इसकी बरकत से शामिल फ़रमाये। وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ. इसकी तसहीह और नज़र-ए-सानी का काम बंदे के बड़े भाई मौलाना उमर फ़ारूक़ साहब ज़ैद मजदहु ने किया है। वह और हमारे मुहसिन दोस्त भाई जावेद हज़ारवी इसको छपवाने का एहतिमाम कर रहे हैं। अल्लाह तआला दोनों को अपनी शान के मुताबिक़ जज़ा-ए-ख़ैर मरहमत फ़रमाये। आमीन

وصلى الله على النبى الامى وعلى آله وصحبه اجمعين.

मोहम्मद उस्मान

27, रमज़ानुल मुबारक, यौमुस्सुलसा, बाद ज़ोहर 1423 हि०

ब-मुक़ाम हरम, मदनी मस्जिद, मदीना मुनव्वरा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इस्लाम की मेहनत

इस्लाम हक़ है इसकी मेहनत के लिए 4 महीने मांगते हैं, इसके लिए चार लाईन की मेहनत है।

❶ सुनने की मेहनत — तालीम
❷ बोलने की मेहनत — दावत
❸ सोचने की मेहनत — ज़िक्र
❹ मांगने की मेहनत — दुआ

ईमान मुजाहिदा से पकेगा, दावत देने से बनेगा, हिजरत-ए-सफ़र से फैलेगा, हुक़ूकुल इबाद से बचेगा।

(—मौलाना अहमद लाट साहब इज्तिमाअ भोपाल)

दाओी अपनी इज्तिमाओी फ़िक्रों के साथ इंफ़िरादी नेकियाँ भी करता रहे

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया! तुममें से आज रोज़ा किसने रखा है? हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा मैंने। फिर आप सल्ल० ने पूछा तुममें से आज किसने किसी बीमार की इयादत की है? हज़रत अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु ने कहा मैंने।

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा तुममें से आज कौन किसी जनाज़े में शरीक हुआ है? हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा मैं। फिर आप सल्ल० ने पूछा आज किसने किसी मिस्कीन को खाना खिलाया है? हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, मैंने। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो आदमी एक दिन में यह सारे काम करेगा वह जन्नत में ज़रूर जाएगा। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 648

अम्र बिल् मारूफ़, नही अनिल मुन्कर की अजीब ख़स्लतें

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः क्या मैं तुम्हें ऐसे लोग न बतलाऊं जो न नबी होंगे और न शहीद, लेकिन उनको अल्लाह के वहाँ इतना ऊंचा मुक़ाम मिलेगा कि क़्यामत के दिन नबी और शहीद भी उन्हें देखकर खुश होंगे और वह नूर के ख़ास मिम्बरों पर होंगे और पहचाने जाएंगे। सहाबा ने पूछा या रसूलुल्लाह! वह कौन लोग हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह वह लोग हैं जो अल्लाह के बंदों को अल्लाह का महबूब बनाते हैं और अल्लाह तआला को उसके बंदों का महबूब बनाते हैं और लोगों के ख़ैरख़्वाह बनकर ज़मीन पर फिरते हैं। मैंने अर्ज़ किया यह बात तो समझ में आती है कि वह अल्लाह को उसके बंदों का महबूब बनायें। लेकिन यह बात समझ में नहीं आ रही कि वह अल्लाह के बंदों को अल्लाह का महबूब कैसे बनायेंगे? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः यह लोग अल्लाह के बंदों

को उन कामों का हुक्म देंगे जो काम अल्लाह को महबूब और पसंद हैं और उन कामों से रोकेंगे जो अल्लाह को पसंद नहीं हैं, वह बंदे जब उनकी बात मानकर अल्लाह के पसंदीदा काम करने लग जाएंगे तो यह बंदे अल्लाह के महबूब बन जाएंगे।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 805

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया या रसुलुल्लाह! अम्र बिल् मारूफ़ और नही अनिल् मुन्कर नेक लोगों के आमाल के सरदार हैं इन दोनों को कब छोड़ दिया जाएगा? आप सल्ल० ने फ़रमाया जब तुममें वह ख़राबियाँ पैदा हो जाएंगी जो बनी इस्राईल में पैदा हुई थीं।

मैंने पूछा या रसूलुल्लाह! बनी इस्राईल में क्या ख़राबियाँ पैदा हो गई थीं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम्हारे नेक लोग दुनिया की वजह से फ़ाजिर लोगों के सामने दीनी मआमलात मे नर्मी बरतने लगें और दीनी इल्म बद्तरीन लोगों में आ जाये और बादशाहत छोटों के हाथ लग जाये तो फिर उस वक़्त तुम ज़बरदस्त फ़िल्ने में मुब्तला हो जाओगे। तुम फ़िल्नों की तरफ़ चलोगे और फ़ितने बार बार तुम्हारी तरफ़ आएंगे।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 806

हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम अपने रब की तरफ़ से एक वाज़ेह रास्ते पर होगे जबतक तुम में दो नशे ज़ाहिर न हो जाएं। एक जहालत का नशा, दूसरा ज़िंदगी की मोहब्बत का नशा और तुम अम्र बिल् मारूफ़ और नही अलिन् मुन्कर करते रहोगे और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते रहोगे लेकिन, जब दुनिया

की मोहब्बत तुममें ज़ाहिर हो जायेगे तो फिर तुम अम्र बिल् मारूफ़ और नही अनिल् मुन्कर नहीं कर सकोगे, और अल्लाह के रास्ते में जिहाद न कर सकोगे, उस ज़माने में क़ुरआन और हदीस को बयान करने वाले उन मुहाजिरीन और अंसार की तरह होगे जो शुरू में इस्लाम लाये थे। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 805

नज़र-ए-बद दूर करने का वज़ीफ़ा

हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने नज़र-ए-बद दूर करने का एक ख़ास वज़ीफ़ा हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सिखाया और फ़रमाया कि हज़रत हसन व हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा पर पढ़कर दम किया करो।

इब्ने असाकर में है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तशरीफ़ लाये। आप सल्ल० उस वक़्त ग़मज़दा थे। सबब पूछा तो फ़रमाया हसन और हुसैन को नज़र लग गई है। फ़रमाया! यह सच्चाई के क़ाबिल चीज़ है। नज़र वाक़ई लगती है।

आपने यह कलिमात पढ़कर उन्हें पनाह में क्यों नहीं दिया? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा वह कलिमात क्या हैं? फ़रमायाः यूँ कहोः

اَللّٰهُمَّ ذَا السُّلْطَانِ الْعَظِيْمِ وَالْمَنِّ الْقَدِيْمِ ذَا الْوَجْهِ الْكَرِيْمِ وَلِيَّ
الْكَلِمَاتِ التَّامَّاتِ وَالدَّعَوَاتِ الْمُسْتَجَابَاتِ عَافِ الْحَسَنَ
وَالْحُسَيْنَ مِنْ اَنْفُسِ الْجِنِّ وَاَعْيُنِ الْاِنْسِ.

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह दुआ पढ़ी। वहीं दोनों

बच्चे उठ खड़े हुए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने खेलने कूदने लगे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमायाः लोगो! अपनी जानों को, अपनी बीवियों को और अपनी औलाद को उसी पनाह के साथ पनाह दिया करो, उस जैसी और कोई पनाह की दुआ नहीं।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 5, पेज 416

ख़ुदा के रास्ते में क़ुरआन पढ़ने की एक ख़ास फ़ज़ीलत

मुस्नद अहमद में है जिसने अल्लाह की राह में एक हज़ार आयतें पढ़ीं वह इंशाअल्लाह क़्यामत के दिन नबियों, सिद्दीक़ों, शहीदों और सालेहों के साथ लिखा जाएगा।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 1, पेज 597

(और हम अल्लाह के रास्ते में एक चिल्ले में सूरः यासीन की रोज़ाना तिलावत करें तो इंशाअल्लाह तआला यह फ़ज़ीलत हमें भी हासिल हो जाये।)

तहज्जुद के वक़्त अल्लाह की तरफ़ से निदा

मैं नूर के तड़के में जिस वक़्त उठा सोकर!
अल्लाह की रहमत के दरवाज़े खुले पाये!

आती थी सदा पैहम जो मांगने वाला हो!
हाथ अपनी अक़ीदत से आगे मेरे फैलाये!

जो रिज़्क़ का तालिब हो मैं रिज़्क़ उसे दूंगा!
जो तालिब-ए-जन्नत हो जन्नत की तलब लाये!

जिस जिसको गुनाहों से बख़्शिश की तमन्ना हो!
वह अपने गुनाहों की कसूरत से न घबराये!

वह माइल-ए-तौबा हो मैं माइल-ए-बख़्शिश हूँ!
मैं रहम से बख़्शूंगा वह शर्म से पछताये!

यह सुन के हुए जारी आँखों से मेरी आँसू!
क़िस्मत है मुहब्बत में रोना जिसे आ जाये!

आक़ाए गदा परवर साइल हूँ तेरे दर पर!
मैं और तो क्या मागूं तू ही मुझे मिल जाये!

ईमान और इस्लाम की ख़ुदा के यहाँ क़द्र है, हर 10 साल पर मोमिन-ए-कामिल का भाव और क़ीमत बढ़ती जाती है और मोमिन का दर्जा ख़ुदा के यहाँ बढ़ता रहता है

मुस्नद अहमद और मुस्नद अबू यअ़ला में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बच्चा जब तक बालिग़ नहीं होता उसके नेक अमल उसके वालिद या वालिदैन के हिसाब में लिखे जाते हैं और जो कोई बुरा अमल करे तो वह न उसके हिसाब में लिखा जाता है न वालिदैन के। फिर जब वह बालिग़ जो जाता है तो क़लम-ए-हिसाब उसके लिए जारी हो जाता है और दो फ़रिश्ते जो उसके साथ रहने वाले हैं उनको हुक्म दिया जाता है कि उसकी हिफ़ाज़त करें और क़ुव्वत बहम पहुंचाये, जब हालत-ए-इस्लाम में चालीस साल की उम्र को पहुंच जाता है तो अल्लाह तआला उसको (तीन क़िस्म की बीमारियों से) महफ़ूज़ कर देते हैं। जुनून, जज़ाम और बर्स से, जब पचास साल की उम्र को पहुंचता

है तो अल्लाह तआला उसका हिसाब हल्का कर देते हैं, जब साठ साल को पहुंचता है तो अल्लाह तआला उसको अपनी तरफ़ रूजूअ की तौफ़ीक़ दे देते हैं। जब सत्तर साल को पहुचंता है तो सब आसमान वाले उससे मोहब्बत करने लगते हैं और जब अस्सी साल का पहुंचता है तो अल्लाह तआला उसके हसनात का लिखते हैं और सय्यिआत को मआफ़ फ़रमा देते हैं।

फिर जब नव्वे साल की उम्र हो जाती है तो अल्लाह तआला उसके सब अगले पिछले गुनाह मआफ़ फ़रमा देते हैं और उसको अपने घर वालों के मामले में शफ़ाअत करने का हक़ देते हैं और उसकी शफ़ाअत क़ुबूल फ़रमाते हैं और उसका लक़ब अमीनुल्लाह और असीरूल्लाह फ़िल् अर्ज़ि (यानी ज़मीन में अल्लाह का क़ैदी) हो जाता है। (क्योंकि इस उम्र में पहुंचकर अक्सर इंसान की क़ूव्वत ख़त्म हो जाती है किसी चीज़ में लज़्ज़त नहीं रहती, क़ैदी की तरह उम्र गुज़ारता है और जब अरज़ल उम्र को पहुंचता है तो उसके तमाम वह नेक अमल नामा-ए-आमाल में बराबर लिखे जाते हैं जो अपनी सेहत व क़ूव्वत के ज़माने में किया करता था और अगर उससे कोई गुनाह हो जाता है तो वह लिखा नहीं जाता।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 3, पेज 419-410, मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 1, पेज 230

ख़ुदा की क़ुदरत

इब्ने अबी हातिम की मरफ़ूअ हदीस में है कि मुझे इजाज़त दी गई है कि मैं तुम्हें अर्श के उठाने वाले फ़रिश्तों में से एक फ़रिश्ते की निस्बत ख़बर दूँ कि उसकी गर्दन और कान के नीचे की लौ के दर्मियान इतना फ़ासला है कि उड़ने वाला परिंदा सात सौ साल तक उड़ता चला जाये, इसकी इसनाद बहुत उम्दा हैं और इसके

सब रावी सक़ा हैं। —तफ़सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 5, पेज 420

हुज़ूर-ए-अकरम सल्ल० का अपने साथियों के साथ मआमला

हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, हुज़ूर सल्ल० एक घर में थे जो सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से भरा हुआ था। हज़रत जरीर दरवाज़े पर खड़े हो गये उन्हें देखकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दाएँ-बाएँ जानिब देखा। आपको बैठने की कोई जगह नज़र न आई। हुज़ूर सल्ल० ने अपनी चादर उठाई उसे लपेट कर हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ फेंक दिया और फ़रमाया इस पर बैठ जाओ। हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु अन्हु ने चादर लेकर अपने सीने से लगा ली और उसे चूमकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस कर दिया और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! अल्लाह आप सल्ल० का ऐसे इक्राम फ़रमाये जैसे आप सल्ल० ने मेरा इक्राम फ़रमाया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम्हारे पास किसी क़ौम का क़ाबिल-ए-एहतिराम आदमी आये तो तुम उसका इकराम करो।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 563

मख़्सूस आमाल जो मख़्सूस मुसीबतों से निजात दिला देते हैं

अबु अब्दुल्लाह हकीम तिर्मिज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपनी

किताब नवादिरूल उसूल में यह बात ज़िक्र की है कि कि सहाबा की जमाअत के पास आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीने की मस्जिद में फ़रमाया कि पिछली रात मैंने अजीब बातें देखीं, देखा कि मेरे एक उम्मती को अज़ाब-ए-क़ब्र ने घेर रखा है आख़िर उसके वुज़ू ने आकर उसे छुड़ा लिया, मैंने एक उम्मती को देखा कि शैतान उसे वहशी बनाये हुए है लेकिन अल्लाह के ज़िक्र ने आकर उसे छुटकारा दिलाया, एक उम्मती को देखा कि अज़ाब के फ़रिश्तों ने उसे घेर रखा है, उसकी नमाज़ ने आकर उसे बचा लिया, एक उम्मती की देखा कि प्यास के मारे हलाक हो रहा है जब हौज़ पर जाता है धक्के लगते हैं उसका रोज़ा आया और उसने उसे पानी पिला दिया और आसूदा कर दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक और उम्मती को देखा कि अम्बिया हलक़े बांध बांधकर बैठे हैं यह जिस हलक़े में बैठना चाहता है वहां वाले उसे उठा देते हैं उसी वक़्त उसका ग़ुस्ल-ए-जनाबत आया और उसका हाथ पकड़कर मेरे पास बिठाया, एक उम्मती को देखा कि चारों तरफ़ से उसे अंधेरा घेरे हुए है और ऊपर नीचे से भी वह उसमें घिरा हुआ है कि उसका हज और उमरा आया और उसे अंधेरे में से निकालकर नूर में पहुंचा दिया, एक उम्मत को देखा कि वह मोमिनों से कलाम करना चाहता है लेकिन वह उससे बोलते नहीं उसी वक़्त सिल-ए-रहमी आई और ऐलान किया कि इससे बातचीत करो, चुनांचे वह बातचीत करने लगे। एक उम्मती को देखा कि वह अपने मुँह पर से आग के शोले हटाने के लिए हाथ बढ़ा रहा है, इतने में उसकी ख़ैरात आई और उसके मुँह पर पर्दा और ओट हो गई और उसके सर पर साया बन गई, अपने एक उम्मती को देखा कि अज़ाब के फ़रिश्तों

ने उसे हर तरफ़ से क़ैद कर लिया है, लेकिन उसका नेकी का हुक्म और बुराई से मना करना आया और उनके हाथों से उसे छुड़ाकर रहमत के फ़रिश्तों से मिला दिया, अपने एक उम्मती को देखा कि घुटनों के बल गिरा हुआ है और ख़ुदा में और उसमें हिजाब है उसक अच्छे अख़्लाक़ आये और उसका हाथ पकड़कर अल्लाह के पास पहुंचा आए, अपने एक उम्मती को देखा कि उसका नामा-ए-आमाल उसके बाँए तरफ़ से आ रहा है लेकिन उसके ख़ौफ़-ए-ख़ुदा ने आकर उसे उसके सामने कर दिया, अपने एक उम्मती को मैंने जहन्नम के किनारे खड़ा देखा, उसी वक़्त उसका ख़ुदा से कपकपाना आया और उसे जहन्नम से बचा ले गया, मैंने अपने उम्मती को देखा कि उसे औंधा कर दिया गया है कि जहन्नम में डाल दिया जाए, लेकिन उसी वक़्त ख़ौफ़-ए-ख़ुदा से उसका रोना आया और उन आँसुओं ने उसे बचा लिया, मैंने एक और उम्मती को देखा कि पुल-ए-सिरात पर लुढ़कनियाँ खा रहा है कि उसका मुझ पर दुरूद पढ़ना आया और हाथ थामकर सीधा कर दिया और वह पार उतर गया। एक को देखा कि जन्नत के दरवाज़े पर पहुँचा, लेकिन दरवाज़ा बन्द हो गया, उसी वक़्त **ला इला-ह इल्लल्लाह** की शहादत पहुंची, दरवाज़े खुलवा दिया और उसे जन्नत में पहुंचा दिया। क़ुर्तबी रहमतुल्लाहि अलैहि इस हदीस को ज़िक्र करके फ़रमाते हैं कि यह हदीस बहुत बड़ी है, इसमें उन मख़्सूस आमाल का ज़िक्र है जो मख़्सूस मुसीबतों से निजात दिलवाने वाले हैं।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 3, पेज 71-72

क़ुरआन की एक ख़ास आयत इज़्ज़त दिलाने वाली

इमाम अहमद ने मुस्नद में और तिबरानी में उम्दा सनद के साथ हज़रत मआज़ जहनी रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत से बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थेः

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى
الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا۟

यह आयत आयत-ए-इज़्ज़त है। —तफ़्सीर मज़हरी, हिस्सा 7, पेज 166

कौन सी मख़्लूक़ किस दिन पैदा की गई

सही मुस्लिम और नसाई में हदीस है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरा हाथ पकड़ा और फ़रमाया मिट्टी को अल्लाह तआला ने हफ़्ते वाले दिन पैदा किया और पहाड़ों को इतवार के दिन और दरख़्तों को पीर के दिन, और बुराइयों को मंगल के दिन और नूर को बुध के दिन और और जानवरों को जुमेरात के दिन और आदम अलैहिस्सलाम को जुमे के दिन अस्र के बाद, जुमे की आख़िरी घड़ी में अस्र के बाद से रात तक के वक़्त में।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 1, पेज 106

अल्लाह के लिए एक दिरहम ख़र्च कर, अल्लाह के ख़ज़ाने से दस दिरहम लो

हज़रत उबैदुल्लाह बिन मुहम्मद बिन आइशा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक मांगने वाला अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आकर खड़ा हुआ। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु या हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि अपनी वलिदा के पास जाओ और उनसे कहो कि मैंने आपके पास छः दिर्हम रखवाये थे उनमें से एक दिर्हम दे दो, और उन्होंने वापस आकर कहा कि अम्मी जान कह रही हैं कि वह छः दिर्हम तो आपने आटे के लिए रखवाये थे, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा किसी भी बंदे का ईमान उस वक़्त तक सच्चा साबित नहीं हो सकता जब तक कि उसको जो चीज़ उसके पास है उससे ज़्यादा ऐतिमाद उस चीज़ पर न हो जाये, जो अल्लाह के ख़ज़ानों में है। अपनी वलिदा से कहो कि छः दिर्हम भेज दें, चुनांचे उन्होंने छः दिर्हम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को भिजवा दिए जो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस मांगने वाले को दे दिए।

बयान करने वाले कहते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी महफ़िल भी नहीं बदली थी कि इतने में एक आदमी उनके पास से एक ऊँट लिए गुज़रा जिसे वह बेचना चाहता था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा यह ऊँट कितने में दोगे? उसने कहा 140 दिर्हम में। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा इसे यहाँ बांध दो, अलबत्ता इसकी क़ीमत कुछ अर्से के बाद देंगे। वह आदमी ऊँट वहाँ बांधकर चला गया। थोड़ी ही देर में एक आदमी

आया और उसने कहा: यह ऊँट किसका है? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा मेरा। उस आदमी ने कहा क्या आप इसे बेचेंगे? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, हाँ, उस आदमी ने कहा कितने में? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा 200 दिर्हम में। उसने कहा मैंने इस क़ीमत में यह ऊँट ख़रीद लिया और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को 200 दिर्हम देकर वह ऊँट लेकर चला गया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने जिस आदमी से ऊँट ख़रीदा था उसे 140 दिर्हम दिये और बाक़ी 60 दिर्हम लाकर हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को दिये, उन्होंने पूछा यह क्या है? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा यह वह है जिसका अल्लाह तआला ने अपनी नबी की ज़बानी हमसे वादा किया है।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا.

तर्जुमाः– जो शख़्स नेक काम करेगा, उसको उसके दस हिस्से मिलेंगे। —सूरः इनआम, आयत 16, हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 202

ग़मगीन के कान में अज़ान देना

जो शख़्स किसी रंज व ग़म में मुब्तला हो उसके कान में अज़ान देने से उसका रंग व ग़म दूर हो जाता है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे ग़मगीन देखकर फ़रमायाः इब्ने अबी तालिब! मैं तुम्हें ग़मगीन देख रहा हूँ? मैंने कहाः जी हाँ। आप सल्ल० ने फ़रमायाः

فَمُرْ بَعْضَ اَهْلِكَ يُؤَذِّنْ فِىْ اُذُنِكَ فَاِنَّهٗ دَوَاءٌ لِلْهَمِّ.

तर्जुमाः– तुम अपने घर वालों में से किसी से कहो कि वह तुम्हारे कान में अज़ान दे क्योंकि यह ग़म का इलाज है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने यह अमल किया तो मैरा ग़म दूर हो गया, इसी तरह इस हदीस के तमाम रावियों ने इसको आज़माकर देखा तो सबने इसको मुजर्रब पाया।

—कन्ज़ुल उम्माल, हिस्सा 2, पेज 458

बद्-अख़्लाक़ के कान में अज़ान देना

जिसकी आदत ख़राब हो जाये, ख़्वाह इंसान हो या जानवर, उसके कान में भी अज़ान दी जाये, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

مَنْ سَاءَ خُلُقُهُ مِنْ اِنْسَانٍ اَوْ دَابَّةٍ فَاَذِّنُوْا فِيْ اُذُنِهٖ.

तर्जुमाः– जो बद्-अख़्लाक़ हो जाये, ख़्वाह इंसान हो या चौपाया, उसके कान में अज़ान दो।

—रिवाहुददयलमी, मिर्क़ात शरह मिश्कात, हिस्सा 2, पेज 149

शैतान के परेशान करने और डराने के वक़्त अज़ान कहना

जब शैतान किसी को परेशान करे और डराये उस वक़्त बुलन्द आवाज़ से अज़ान कहनी चाहिए, क्योंकि शैतान अज़ान से भागता है, हज़रत सुहैल बिन अबी सालेह कहते हैं कि मेरे वालिद ने मुझे बनू हारिसा के पास भेजा, और मेरे साथ हमारा एक बच्चा या साथी था। दीवार की तरफ़ से किसी के पुकारने वाले ने उसका नाम लेकर आवाज़ दी, और उस शख़्स ने जो मेरे साथ था दीवार

की तरफ़ देखा तो उसको कोई चीज़ नज़र नहीं आई, फिर मैंने अपने वालिद साहब से इसका तज़्किरा किया तो उन्होंने फ़रमायाः अगर मुझे पता होता कि तुम्हें य बात पेश आएगी तो मैं तुमको न भेजताः

وَلٰكِنْ إِذَا سَمِعْتَ صَوْتًا فَنَادِ بِالصَّلٰوةِ فَإِنِّىْ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ يُحَدِّثُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: إِنَّ الشَّيْطَانَ إِذَا نُوْدِىَ بِالصَّلٰوةِ وَلّٰى وَلَهُ حُصَاصٌ.

तर्जुमाः– लेकिन (यह बात याद रखो कि) जब तुम कोई आवाज़ सुनो तो बुलंद आवाज़ से अज़ान कहो, क्योंकि मैंने हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह हदीस बयान करते हुए सुना कि जब अज़ान कही जाती है तो शैतान पीठ फैरकर गौज़ मारता हुआ भागता है।

–मुस्लिम शरीफ़, हिस्सा 1, पेज 167

ग़ौल-ए-बयाबानी (भूतों) को देखकर अज़ान कहना

अगर कोई शख़्स भूत-प्रेत देखे तो उसको बुलन्द आवाज़ से अज़ान कहनी चाहिए। हज़रत सअ़्द बिन अबी वक़ास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने रसूल-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना किः

إِذَا تَغَوَّلَتْ لَكُمُ الْغِيْلَانُ فَأَذِّنُوْا.

तर्जुमाः– जब तुम्हारे सामने भूत-प्रेत अलग-अलग शक्लों में नमूदार हों तो अज़ान कहो। –मुसन्निफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़, हिस्सा 5, पेज 163

अज़ान के चन्द और मवाक़े

मज़्कूरा मौक़ों के अलावा अज़ान के नीचे दिए गये मौक़े भी बुज़ुर्गों ने ज़िक्र किये हैं: 1. आग लगने के वक़्त। 2. कुफ़्फ़ार से जंग करने के वक़्त। 3. ग़ुस्से के वक़्त। 4. जब मुसाफ़िर रास्ता भूल जाये 5. जब किसी को मिर्गी का दौरा पड़े, लिहाज़ा इलाज और अमल के तौर पर इन मौक़ों पर भी अज़ान कहने में कोई हर्ज नहीं है। इम्दादुल फ़तावा में लिखा है: इन मौक़ों में अज़ान सुन्नत है: 1. फ़र्ज़ नमाज़ (के लिए) 2. बच्चे के कान में पैदा होने के वक़्त, 3. आग लगने के वक़्त, 4. जंग-ए-कुफ़्फ़ार के वक़्त, 5. मुसाफ़िर के पीछे जब शयातीन ज़ाहिर होकर डरायें, 6. ग़म के वक़्त, 7. ग़ज़ब के वक़्त, 8. जब मुसाफ़िर रास्ता भूल जाये, 9. जब किसी को मिर्गी आये, 10. जब किसी आदमी या जानवर की बद्-अख़्लाक़ी ज़ाहिर हो, उसको साहब-ए-रद्दुल मुख़्तार ने अपनी किताब में ज़िक्र किया है। —इम्दादुल फ़तावा, हिस्सा 1, पेज 165

हर इंसान के साथ 24 घंटों में 20 फ़रिश्ते रहते हैं

तफ़्सीर इब्ने जरीर में आया है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आये और आप सल्ल० से पूछा कि फ़रमाइये बंदे के साथ कितने फ़रिश्ते होते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया एक तो दाँए तरफ़ नेकियों का लिखने वाला जो बाँए तरफ़ वाले पर अमीर है। जब तू कोई नेकी करता है वह एक के बजाये दस लिखता है। जब तू कोई बुराई करे तो बाँए वाला दाँए वाले से उसको लिखने की इजाज़त तलब करता है, वह कहता है कि ज़रा ठहर जाओ, शायद

तौबा व इस्तिग़फ़ार करे।

तीन मर्तबा वह इजाज़त मांगता है तब भी अगर उसने तौबा न की तो यह नेकी का फ़रिश्ता उससे कहता है कि अब लिख ले। (अल्लाह हमें इस से छुड़ाये) यह तो बड़ा बुरा साथी है, इसे ख़ुदा का लिहाज़ नहीं यह उससे नहीं शरमाता। अल्लाह का फ़रमान है कि इंसान जो बात ज़बान पर लाता है उस पर निगहबान मुक़र्रर और मुहय्या हैं और दो फ़रिश्ते तेरे आगे पीछे हैं। फ़रमान-ए-ख़ुदा है : لَهٗ مُعَقِّبَاتٌ...الخ और एक फ़रिश्ता तेरे माथे के बाल थामे हुए है। जब तू ख़ुदा के लिए तवाज़ो और फ़रावानी करता है वह तुझे बुलंद दर्जा कर देता है और जब तू अल्लाह के सामने सरकशी और तकब्बुर करता है वह तुझे पस्त और आजिज़ कर देता है और दो फ़रिश्ते, तेरे होंटों पर हैं। जो दुरूद तू मुझ पर पढ़ता है उसकी वह हिफ़ाज़त करते हैं। एक फ़रिश्ता तेरे मुँह पर खड़ा है कि कोई साँप वग़ैरह जैसी चीज़ तेरे हल्क़ में न चली जाये और दो फ़रिश्ते तेरी आँखों पर हैं। यह दस फ़रिश्ते हर बनी आदम के साथ हैं। फिर दिन के अलग हैं और रात के अलग हैं, यूँ हर शख़्स के साथ 20 फ़रिश्ते मिन जानिबिल्लाह मुवक्कल हैं।

—तफ़सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 3, पेज 32

मामूली इक्राम-ए-मुसलिम पर सारे गुनाह मआफ़

हज़रत अनस बिन मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आये, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु

तकिये पर टेक लगाये हुए थे। हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु को देखकर उन्होंने वह तकिया हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए रख दिया। हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सच फ़रमाया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा ऐ अबु अब्दुल्लाह! अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वह फ़रमान ज़रा हमें भी सुनाएं। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहाः एक मर्तबा मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आप सल्ल० एक तकिये पर टेक लगाये हुए थे। आप सल्ल० ने वह तकिया मेरे लिए रख दिया। फिर मुझ से फ़रमायाः ऐ सुलैमान! जो मुसलमान अपने मुसलमान भाई के पास जाता है और वह मेज़बान उसके इक्राम के लिए तकिया रख देता है तो अल्लाह तआला उसकी मग़्फ़िरत ज़रूर फ़रमा देते हैं।

—हयातुस्साहाबा, हिस्सा 2, पेज 561

बुरी मौत से बचने का एक नब्वी नुस्ख़ा

हज़रत उस्मान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं हज़रत हारिसा बिन नुअ्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की आँखों की रौशनी जा चुकी थी, उन्होंने अपनी नमाज़ की जगह से लेकर अपने कमरे के दरवाज़े तक एक रस्सी बाँध रखी थी। जब दरवाज़े पर कोई मिस्कीन आता तो अपने टोकरे में से कुछ लेते और रस्सी को पकड़कर दरवाज़े तक जाते और ख़ुद अपने हाथ से उस मिस्कीन को देते। घर वाले उनसे कहते आप की जगह हम जाकर मिस्कीन को दे आते हैं। वह फ़रमाते मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि मिस्कीन को अपने हाथों से देना बुरी

मौत से बचाता है।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 234

मुतकब्बिर की तरफ़ अल्लाह तआला नज़र-ए-रहमत नहीं करते

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं: मैंने एक मर्तबा अपनी एक नई क़मीज़ पहनी, मैं उसे देखकर खुश होने लगी, वह मुझे बहुत अच्छी लग रही थी। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया क्या देख रही हो? इस वक़्त अल्लाह तुम्हें (नज़र-ए-रहमत से) नहीं देख रहे हैं। मैंने कहा यह क्यों? हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया क्या तुम्हें मालूम है कि जब दुनिया की ज़ीनत की वजह से बन्दा में उजब (खुद को अच्छा समझना) पैदा हो जाता है तो जब तक वह बन्दा ज़ीनत (सजना-संवरना) छोड़ नहीं देता उस वक़्त तक उसका रब उससे नाराज़ रहता है। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं मैंने वह क़मीज़ उतारकर उसी वक़्त सदक़ा कर दी तो हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया शायद यह सदक़ा तुम्हारे इस उजब के गुनाह का कफ़्फ़ारा हो जाये। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 399

बीवी के मुँह में लुक़्मा देने पर सदक़े का सवाब

हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज्जतुल विदाअ वाले साल, बहुत बीमार हो गया था, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरी इयादत के लिए तशरीफ़ लाये तो मैंने कहा मेरी एक बेटी है तो क्या मैं अपना दो तिहाई माल सदक़ा कर दूँ? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं,

मैंने कहा आधा माल सद्क़ा कर दूँ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया नहीं। मैंने कहा कि तिहाई माल सद्क़ा कर दूँ? आप सल्ल० ने फ़रमाया हाँ, तिहाई माल सद्क़ा कर दो और तिहाई भी बहुत है, तुम अपने वारिसों को मालदार छोड़कर जाओ यह इससे बेहतर है कि तुम उनको फ़क़ीर छोड़कर जाओ और वह लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें, और तुम जो भी ख़र्चा अल्लाह की रज़ा के लिए करोगे उस पर तुम्हें अल्लाह की तरफ़ से अज्र ज़रूर मिलेगा यहां तक कि तुम जो लुक़्मा अपनी बीवी के मुँह में डालोगे उस पर भी अज्र मिलेगा। मैंने कहा या रसूलुल्लाह! मुझे तो ऐसा लग रहा है और मुहाजिरीन तो आप के साथ मक्का से वापस चले जाएंगे मैं यहाँ ही मक्के में रह जाऊंगा और मेरा इंतिक़ाल यहां मक्के में हो जाएगा और चूँकि मैं मक्के से हिजरत करके गया था तो मैं अब यह नहीं चाहता कि मेरा यहाँ इंतिक़ाल हो। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं तुम्हारी ज़िन्दगी लम्बी होगी (और तुम्हारा इस मर्ज़ में इंतिक़ाल न होगा) और तुम जो भी नेक अमल करोगे उससे तुम्हारा दर्जा भी बुलन्द होगा और तुम्हारी इज़्ज़त में इज़ाफ़ा होगा और तुम्हारे ज़रिए से इस्लाम का और मुसलमानों का बहुत फ़ायदा होगा और दूसरों का बहुत नुक़्सान होगा (चुनाँचे इराक़ के फ़तह होने का यह ज़रिया बने।)

ऐ अल्लाह! मेरे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की हिजरत को आख़िर तक पहुंचा (दर्मियान में मक्का में फ़ौत (मरना) होने से टूटने न पाये) और (मक्का में मौत देकर) उन्हें ऐड़ियों के बल वापस न कर। हाँ क़ाबिल-ए-रहम सअ्द बिन ख़ौला है (कि वह मक्का से हिजरत करके गये थे और अब यहाँ फ़ौत हो गये हैं उनके मक्का में फ़ौत होने की वजह से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम को उन पर तरस आ रहा था।) —हयातुस्साहाब, हिस्सा 2, पेज 645

सलफ़-ए-सालेहीन की अपने दोस्तों को तीन नसीहतें

❶ مَنْ عَمِلَ لِاٰخِرَتِهٖ كَفَاهُ اللّٰهُ اَمْرَ دُنْيَاهُ.

1. जो आदमी आख़िरत के कामों में लग जाता है अल्लाह तआला उसके दुनिया के कामों की ज़िम्मेदारी ले लेते हैं।

❷ وَمَنْ اَصْلَحَ سَرِيْرَتَهٖ اَصْلَحَ اللّٰهُ عَلَا نِيَتَهٗ.

2. जो शख़्स अपने बातिन को सही कर ले अल्लाह उसके ज़ाहिर को सही फ़रमा देते हैं।

❸ وَمَنْ اَصْلَحَ فِيْمَا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ اللّٰهِ اَصْلَحَ اللّٰهُ مَا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ النَّاسِ.

3. जो अल्लाह से अपना मआमला सही कर लेता है, अल्लाह तआला उसके और मख़्लूक़ के दर्मियान के मामलात को सही कर देते हैं। —मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 4, पेज 679

हज़रत उमर रज़ि० का तक़्वा

हज़रत अयास बिन सल्मा अपने वालिद (हज़रत सलमा) से नक़ल करते हैं कि उन्होंने कहा कि एक मर्तबा हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु बाज़ार से गुज़रे, उनके हाथ में कोड़ा भी था, उन्होंने आहिस्ता से वह कोड़ा मुझे मारा जो मेरे कपड़े के किनारे को लग गया और फ़रमाया, रास्ते से हट जाओ। जब अगला साल आया तो आप की मुझ से मुलाक़ात हुई, मुझसे कहा ऐ सलमा! क्या तुम्हारा हज का इरादा है। मैंने कहा जी हाँ। फिर मेरा हाथ पकड़कर अपने घर ले गये और मुझे 600 दिर्हम दिये

और कहा इन्हें अपने सफ़र-ए-हज में काम ले आना और यह उस हल्के कोड़े के बदले में हैं जो मैंने तुमको मारा था। मैंने कहा कि ऐ अमीरूल मोमिनीन! मुझे तो वह कोड़ा याद भी नहीं रहा। फ़रमाया लेकिन मैं तो उसे नहीं भूला। यानी मैंने मार तो दिया लेकिन सारा साल खटकता रहा। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 145

ज़ालिम के ज़ुल्म से हिफ़ाज़त का नब्वी नुस्ख़ा

हज़रत अबू राफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने (मजबूर होकर) हज्जाज बिन यूसुफ़ से अपनी बेटी की शादी की और बेटी से कहा जब वह तुम्हारे पास अन्दर आये तो तुम यह दुआ पढ़ना।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ.

तर्जुमाः— अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं जो हलीम व करीम है, अल्लाह पाक है जो अज़ीम अर्श का रब है, और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है।"

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कोई सख़्त अम्र पेश आता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह दुआ पढ़ते। रावी कहते हैं (हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी ने यह दुआ पढ़ी जिसकी वजह से) हज्जाज उसके क़रीब न आ सका।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 412

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु को मुट्ठी भर खजूरे दीं और हज़रत वह 27 साल तक खाते रहे, खिलाते रहे, यह दीन की बरकत थी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं। इस्लाम में मुझ पर तीन ऐसी बड़ी मुसीबतें आई हैं कि वैसी कभी भी मुझ पर नहीं आईं। एक तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल का हादिसा क्योंकि मैं आप सल्ल० का हमेशा साथ रहने वाला मामूली सा साथी था। दूसरे हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत का हादसा, तीसरे तौशेदान का हादिसा, लोगों ने पूछा ऐ अबू हुरैरह! तौशेदान के हादिसे से क्या मतलब है? फ़रमाया हम एक सफ़र मे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। आप सल्ल० ने फ़रमाया ऐ अबू हुरैरह! तुम्हारे पास कुछ है? मैंने कहा तौशादान में कुछ खजूरें हैं, आप सल्ल० ने फ़रमाया ले आओ, मैंने खजूरें निकालकर आप सल्ल० की ख़िदमत में पेश कर दीं। आप सल्ल० ने उन पर हाथ फेरा और बरकत के लिए दुआ फ़रमाई, फिर फ़रमाया दस आदमियों को बुला लाओ, मैं दस आदमियों को बुला लाया, उन्होंने पेट भरकर खजूरें खाईं, फिर उसी तरह दस दस आदमी आकर खाते रहे, यहां तक कि सारे लश्कर ने खा लिया और तोशेदान में फिर भी खजूरें बच रहीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अबू हुरैरह! जब तुम इस तोशेदान में से खजूरें निकालना चाहो तो इसमें हाथ डालकर निकालना और इसे उलटाना नहीं। हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं मैं हुज़ूर सल्ल० की सारी ज़िन्दगी में इसमें से निकाल कर खाता

रहा फिर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की सारी ज़िन्दगी में इसे खाता रहा, फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की सारी ज़िन्दगी में इसमें से खाता रहा। फिर हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु की सारी ज़िन्दगी में इसमें से खाता रहा, फिर जब हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हो गये तो मेरा सामान भी लुट गया। और वह तोशादान भी लुट गया। क्या मैं आप लोगों को बता न दूँ कि मैंने ने उसमें से कितनी खजूरें खाई हैं? मैंने उसमें से 200 वस्क़ यानी एक हज़ार पचास मन से भी ज़्यादा खजूरें खाई हैं। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 711

अमल बहुत मुख़्तसर सवाब और फ़ायदा बहुत ज़्यादा

इमाम बग़वी रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपनी सनद के साथ इस जगह एक हदीस नक़ल फ़रमाई है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हक़ तआला का फ़रमान है कि जो शख़्स हर नमाज़ के बाद सूरः फ़ातिहा और आयतुल कुर्सी और आल-ए-इम्रान की दो आयतें एक आयत شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ आख़िर तक और दूसरी यह आयत قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ से بِغَيْرِ حِسَابٍ तक पढ़ा करे तो मैं उसका ठिकाना जन्नत में बना दूंगा और उसको अपने हज़ीरतुल् क़ुदस में जगह दूंगा और हर रोज़ उसकी तरफ़ 70 मर्तबा नज़र-ए-रहमत करूंगा और उसकी 70 हाजतें पूरी करूंगा और हर हासिद और दुश्मन से पनाह दूंगा और उन पर उसको ग़ालिब रखूंगा। —मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 2, पेज 47

हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़्लाक़

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार रास्ते में तशरीफ़ ले जा रहे थे एक सहाबी से हुज़ूर सल्ल० की मुलाक़ात हुई तो उस सहाबी ने आप सल्ल० की ख़िदमत में दो मिस्वाकें पेश कीं तो हुज़ूर सल्ल० ने उसको ख़ुशी के साथ क़ुबूल किया और उन दो मिस्वाकों में से एक बिल्कुल सीधी थी और एक टेढ़ी थी, तो यहाँ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़्लाक़ देखिए कि जो सीधी थी वह अपने साथी को दी और जो टेढ़ी थी वह आप सल्ल० ने अपने पास रखी।

दुआ

तेरी अजमतों से हूँ बेख़बर यह मेरी नज़र का क़ूसर है
तेरी रहगुज़र में क़दम क़दम कहीं अर्श है, कहीं तूर है
यह बजा है मालिक-ए-बन्दगी मेरी बन्दगी में क़ुसूर है
यह ख़ता है मेरी ख़ता मगर तेरा नाम भी तो ग़फ़ूर है
कहीं दिल की शर्त न डालना
अभी दिल निगाहों से दूर है

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का अपने इंतक़ाल के वक़्त वसीयत करना

हज़रत यहया बिन अबी राशिद नुसरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते

हैं कि जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो अपने बेटे से फ़रमायाः ऐ मेरे बेटे! जब मुझे मौत आने लगे तो मेरे जिस्म को (दाँए पहलू की तरफ़) मोड़ देना और अपने दोनों घुटने मेरी थोड़ी, मेरी कमर के साथ लगा देना और अपना दाया हाथ मेरी पेशानी पर और बायाँ हाथ मेरी ठोड़ी पर रख देना और जब मेरी रूह निकल जाये तो मेरी आँखें बंद कर देना और मुझे दर्मियानी क़िस्म का कफ़न पहनाना क्योंकि अगर मुझे अल्लाह के यहाँ ख़ैर मिली तो फिर अल्लाह तआला मुझे इससे बेहतर कफ़न दे देंगे और अगर मेरे साथ कुछ और हुआ तो अल्लाह तआला इस कफ़न को मुझ से जल्दी से जल्दी छीन लेंगे और मेरी क़ब्र दर्मियानी क़िस्म की बनाना क्योंकि अगर मुझे अल्लाह के यहाँ ख़ैर मिली तो फिर क़ब्र को जहां तक नज़र जाएगी फैला दिया जाएगा और अगर मामला इसके ख़िलाफ़ हुआ तो फिर क़ब्र मेरे लिए इतनी तंग कर दी जाएगी कि मेरी पसलियाँ एक दूसरे में घुस जाएंगी। मेरे जनाज़े के साथ कोई औरत न जाये और जो ख़ूबी मुझ में नही है उसे मत बयान करना, क्योंकि अल्लाह तआला मुझे तुम लोगों से ज़्यादा जानते हैं और जब तुम मेरे जनाज़े को लेकर चलो तो तेज़ चलना अगर अल्लाह के यहाँ से ख़ैर मिलने वाली है तो तुम मुझे उस ख़ैर की तरफ़ ले जा रहे हो। (इसलिए जल्दी करो) और अगर मामला इसके ख़िलाफ़ है तो तुम एक शर को उठाकर ले जा रहे हो इसे अपनी गर्दन से जल्द उतार दो। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 52-53

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने पाँच कलिमात सिखाये फिर हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने भी पाँच कलिमात हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को सिखाये, फिर हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के वास्ते से पूरी उम्मत को मिले

हज़रत सुवैद बिन ग़फ़ला रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु पर एक मर्तबा फ़ाक़ा आया तो उन्होंने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा अगर तुम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में जाकर कुछ मांग लो तो अच्छा है। चुनांचे फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूर सल्ल० के पास गईं, उस वक़्त हुज़ूर के पास हज़रत उम्मे अयमन रज़ियल्लाहु अन्हा मौजूद थीं। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने दरवाज़ा खटखटाया तो हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उम्मे अयमन रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमायाः यह खटखटाहट तो फ़ातिमा की है। आज इस वक़्त आई है पहले तो कभी इस वक़्त नहीं आया करती थी। फिर हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा (अन्दर आ गईं और उन्हों) ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! इन फ़रिश्तों का खाना **ला इलाहा इल्लल्लाह, सुब्हान अल्लाह** और **अलहम्दु लिल्लाह** कहना है, हमारा खाना क्या है? आप सल्ल० ने फ़रमायाः उस ज़ात की क़सम जिसने मुझे हक़ देकर भेजा है, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घराने के किसी घर में तीस दिन से आग नही जली, हमारे पास चन्द बकरियाँ आई हैं अगर तुम चाहो तो पाँच बकरियाँ तुम्हें दे दूँ और अगर तुम्हें वह वाँच कलिमात सिखा दूँ जो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने मुझे सिखाये हैं। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु

अन्हा ने अर्ज़ किया नहीं बल्कि मुझे तो वही पाँच कलिमात सिखा दें जो आप को हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने सिखाये हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम यह कहा करोः

يَا اَوَّلَ الْاَوَّلِيْنَ وَيَا آخِرَ الْاٰخِرِيْنَ وَيَا ذَا الْقُوَّةِ الْمَتِيْنِ
وَيَا رَاحِمَ الْمَسَاكِيْنِ وَيَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

फिर हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा वापस चली गईं। जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पहुंची तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा क्या हुआ? हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा मैं आपके पास से दुनिया लेने गई थी लेकन वहाँ से आख़िरत लेकर आई हूँ, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा फिर तो यह दिन तुम्हारा सबसे बेहतरीन दिन है।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 56

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने दीन को दुनिया पर मुक़द्दम कर दिया और पाँच कलिमात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सीखे

(नोटः आज का मुसलमान होता तो कहता कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पाँच हज़ार बकरियाँ भी दीजिए और पाँच कलिमात भी सिखाइये)

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमाया मैं तुम्हें पाँच हज़ार बकरियाँ दे दूँ या ऐसे पाँच कलिमात सिखा दूँ जिनसे तुम्हारा दीन और दुनिया दोनों ठीक हो जाएं, मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! पाँच हज़ार बकरियाँ तो बहुत ज़्यादा हैं। लेकिन आप

मुझे वह कलिमात सिखा दें। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह कहोः

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ وَوَسِّعْ لِیْ خُلُقِیْ وَطَیِّبْ لِیْ کَسْبِیْ
وَقَنِّعْنِیْ بِمَا رَزَقْتَنِیْ وَلَا تُذْهِبْ قَلْبِیْ اِلٰی شَیْئٍ صَرَفْتَهٗ عَنِّیْ

तर्जुमाः— ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह मआफ़ फ़रमा और मेरे अख़्लाक़ वसीअ फ़रमा और मेरी कमाई को पाक फ़रमा और जो रोज़ी तूने मुझे अता फ़रमाई उस पर मुझे क़नाअत नसीब फ़रमा और जो चीज़ तू मुझ से हटा ले उसकी तलब मुझ में बाक़ी न रहने दे। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 208

वह ख़ुशनसीब सहाबी जिन्हें सज्दा करने के लिए अर्श और कुर्सी से भी अफ़ज़ल जगह मिली

हज़रत अबू ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि उन्होंने एक ख़्वाब में यह देखा कि वह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पेशानी पर सज्दा कर रहे हैं, यह ख़्वाब आप से भी ज़िक्र किया गया तो आप सल्ल० लेट गये और फ़रमाया लो अपना ख़्वाब पूरा कर लो, उन्होंने आप सल्ल० की पेशानी मुबारक के ऊपर सज्दा कर लिया। —तर्जुमानुस्सुन्नः हिस्सा 2, पेज 358

दो बीवियों में इंसाफ़ का अजीब क़िस्सा

हज़रत यहया बिन सईद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु की दो बीवियाँ थी, उनमें से जिसकी बारी का दिन होता उस दिन दूसरी के घर से

वुज़ू न करते फिर दोनों बीवियाँ हज़रत मआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मुल्क शाम गईं और वहाँ दोनों इक्ट्ठी बीमार हुईं और अल्लाह की शान दोनों का एक ही दिन में इंतक़ाल हुआ, लोग उस दिन बहुत मश्ग़ूल थे इसलिए दोनों को एक ही क़ब्र में दफ़न किया गया। हज़रत मआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने दोनों में क़रआ डाला कि किसको क़ब्र में पहले रखा जाये।

हज़रत यहया रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत मआज़ बिन जबल् रज़ियल्लाहु अन्हु की दो बीवियाँ थीं जब एक के पास होते तो दूसरी के हाँ से पानी भी न पीते।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 769

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की एहतियात

हज़रत ताऊस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु को यह फ़रमाते हुए सुना कि मैं गवाही देता हूँ कि मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को लब्बैक पढ़ते हुए सुना। उस वक़्त हम लोग अरफ़ात में खड़े हुए थे, एक आदमी ने उनसे पूछा क्या आप जानते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अरफ़ात से कब कूच फ़रमाया? हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मुझे मालूम नहीं (यह उन्होंने एहतियात की वजह से फ़रमाया) लोग हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की इस एहतियात से बहुत हैरान हुए।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 769

मुसलमान पर बुहतान बांधने का अज़ाब

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जो शख़्स किसी मोमिन मर्द या औरत को उसके फ़ुक्र या फ़ाक़े की वजह से ज़लील व हक़ीर समझता है अल्लाह तआला क़्यामत के रोज़ उसको अव्वलीन व आख़िरीन के मजूमे में रूस्वा और ज़लील व ख़्वार करेंगे, और जो शख़्स किसी मुसलमान मर्द या औरत पर बुहतान बांधता है और कोई ऐसा ऐब उसकी तरफ़ मन्सूब करता है जो उसमें नहीं है, अल्लाह तआला क़्यामत के रोज़ उसको आग के एक ऊँचे टीले पर खड़ा कर देंगे। जब तक कि वह ख़ुद अपनी तक्ज़ीब न करे। —मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 1, पेज 501

ख़ुतूत में बिस्मिल्लाह लिखना जायज़ है या ना-जायज़

ख़त लिखने की असल सुन्नत तो यही है कि हर ख़त के शुरू में बिस्मिल्लाह लिखी जाये लेकिन क़ुरआन व सुन्नत के नुसूस व इर्शादात से हज़रात फ़ुक़्हा ने यह कुल्लिया क़ायदा लिखा है कि जिस जगह बिस्मिल्लाह या अल्लाह तआला का कोई नाम लिखा जाये अगर उस जगह उस काग़ज़ की बे-अदबी से महफ़ूज़ रखने का कोई एहतिमाम नहीं बल्कि वह पढ़कर डाल दिया जाता है तो ऐसे ख़ुतूत और ऐसी चीज़ में बिस्मिल्लाह या अल्लाह तआला का कोई नाम लिखना जाइज़ नहीं कि वह इस तरह बे-अदबी के गुनाह का शरीक हो जाएगा। आज कल आम तौर से एक दूसरे को जो ख़ुतूत लिखे जाते हैं उनका हाल सब जानते हैं कि नालियों

और गंदगियों में पड़े नज़र आते हैं इसलिए मुनासिब यह है कि अदा-ए-सुन्नत के लिए ज़बान से बिस्मिल्लाह कह ले तहरीर में न लिखे। —मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 6, पेज 567

क़ुरआन की वह दो आयतें जिसको तमाम मख़्लूक़ की पैदाइश से दो हज़ार साल पहले ख़ुद रहमान ने अपने हाथ से लिख दिया था

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने दो आयतें जन्नत के ख़ज़ाइन में से नाज़िल फ़रमाई हैं जिसको तमाम मख़्लूक़ की पैदाइश से दो हज़ार साल पहले ख़ुद रहमान ने अपने हाथ से लिख दिया था, जो शख़्स उनको इशा की नमाज़ के बाद पढ़ ले तो वह उसके लिए क़यामुल्लैल यानी तहज्जुद के क़ाइम मुक़ाम हो जाती है और मुस्तदरक हाकिम और बैहक़ी की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह ने सूरः बक़रः को इन दो आयतों पर ख़तम फ़रमाया है जो मुझे इस ख़ज़ान-ए-ख़ास से अता फ़रमाई हैं जो अर्श के नीचे हैं इसलिए तुम ख़ास तौर पर इन आयतों को सीखो, और अपनी औरतों और बच्चों को सिखाओ। इसीलिए हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु और अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि हमारा ख़्याल यह है कि कोई आदमी जिसको कुछ भी अक़्ल हो वह सूरः बक़रः की इन दोनों आयतों को पढ़े बग़ैर न सोयगा।

नोटः— वह दो आयतें सूरः बक़रः की आख़िरी दो आयतें हैं।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 1, पेज 694

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मआमला

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रमज़ान के महीने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी फिर आप सल्ल० खड़े होकर नहाने लगे तो मैंने आप के लिए पर्दा किया। (ग़ुस्ल के बाद) बर्तन में कुछ पानी बच गया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर तुम चाहो तो इसी से ग़ुस्ल कर लो और चाहो तो इसमें और पानी मिला लो। मैंने कहा या रसूलुल्लाह! आपका बचा हुआ पानी मुझे और पानी से ज़्यादा महबूब है। चुनांचे मैंने उसी से ग़ुस्ल किया और हुज़ूर सल्ल० मेरे लिए पर्दा करने लगे तो मैंने कहा आप मेरे लिए पर्दा न करें। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं जिस तरह तुमने मेरे लिए पर्दा किया उसी तरह मैं भी तुम्हारे लिए ज़रूर पर्दा करूंगा।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 867

दुआ की क़ुबूलियत के लिए एक मुजर्रब अमल

मशाइख़ व उलमा ने हस्बुनल्लाहु व निअमल वकील पढ़ने के फ़ायदों में लिखा है कि इस आयत को एक हज़ार मर्तबा जज़्बा-ए-ईमान व इंक़ियाद के साथ पढ़ा जाये और दुआ मांगी जाये तो अल्लाह तआला रद नहीं फ़रमाता, हुजूम-ए-अफ़्कार व मसाइब के वक़्त हस्बुनल्लाह व निअमल वकील का पढ़ना मुजर्रब है।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 2, पेज 244

उम्मत-ए-मुहम्मदिया पर तीन बातों का ख़ौफ़

एक हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मुझे अपनी उम्मत पर तीन बातों का ख़ौफ़ है। अव्वल यह कि माल बहुत मिल जाए जिसकी वजह से आपस में हसद में मुब्तला हो जायें और कुश्त व ख़ून करने लगें। दूसरी यह कि अल्लाह की किताब सामने खुल जाये (यानी तर्जुमे के ज़रिये हर आमी और जाहिल भी उसको समझने का मुद्दअी हो जाये) और उसमें जो बातें समझने की नहीं हैं, यानी मुताशबिहात उनके मानी समझने की कोशिश करने लगें, हालांकि इनका मतलब अल्लाह ही जानता है। तीसरी यह कि उनका इल्म बढ़ जाये तो उसे ज़ाये कर दें और इल्म को बढ़ाने की जुस्तजू छोड़ दें।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 2, पेज 21

हर बला से हिफ़ाज़त

मुसनद बज़्ज़ार में अपनी सनद के साथ हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि शुरू दिन में आयतलकुर्सी और सूरः मोमिन (की पहली तीन आयतें **हामीम से इलयहिलमसीर** तक) पढ़ लें वह उस दिन हर बुराई और तक्लीफ़ से महफ़ूज़ रहेगा उसको तिर्मिज़ी ने भी रिवायत किया है जिसकी सनद में एक रावी मुतकल्लम फ़ीहि है।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 4, पेज 69,

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 7, पेज 581

दुश्मन से हिफ़ाज़त

अबू दाऊद और तिर्मिज़ी में ब-असनाद सही हज़रत मुहलब बिन अबी सफ़रा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है। उन्होंने फ़रमाया कि मुझसे ऐसे शख़्स ने रिवायत की जिसने ख़ुद रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि आप (किसी जिहाद के मौक़े पर रात में हिफ़ाज़त के लिए) फ़रमा रहे थे कि अगर रात में तुम पर छापा मारा जाये तो तुम **हामीम ला युन्सिरून** पढ़ लेना। जिसका हासिल लफ़्ज़ **हामीम** के साथ यह दुआ करना है कि हमारा दुश्मन कामियाब न हो और कुछ रिवायतों में **हामीम ला युनसरून** बग़ैर नून के आया है जिसका हासिल यह है कि जब तुम हामीम कहोगे तो दुश्मन कामियाब न होगा इससे मालूम हुआ कि **हामीम** दुश्मन से हिफ़ाज़त का क़िला है। इब्ने कसीर

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 7, पेज 582

एक अजीब वाक़िआ

हज़रत साबित बिनानी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं हज़रम मुस्अब बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ कूफ़े के इलाक़े में था मैं एक बाग़ के अन्दर चला गया कि दो रक्अत पढ़ लूँ। मैंने नमाज़ से पहले **हामीम अल्- मोमिन** की आयतें **इलयहिल मसीर** तक पढ़ीं, अचानक देखा कि एक शख़्स मेरे पीछे एक सफ़ेद ख़च्चर पर सवार है जिसके बदन पर यमनी कपड़े हैं। उस शख़्स ने मुझ से कहा कि जब तुम **ग़ाफ़िरिज़्जन्बि** कहो तो उसके साथ यह दुआ करोः **या ग़ाफ़िरिज़्ज़न्बिग़ फ़िरली** यानी ऐ गुनाहों के माफ़ करने वाले मुझे माफ़ कर दे और जब तुम पढ़ो **क़ाबिलत्तौबि**

तो यह दुआ करो **या शदीदिल इक़ाबि ला तुआक़िब्नी** यानी ऐ सख़्त अताब वाले मुझे अज़ाब न दीजियो। और जब **ज़ित् तौलि** पढ़ो तो यह दुआ करो **या ज़त्तौलि तुल अलय्या बिख़ैरिन** यानी ऐ इनाम व एहसान करने वाले मुझ पर इनाम फ़रमा।

साबित बिनानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं यह नसीहत उससे सुनने के बाद जो उधर देखा तो वहाँ कोई न था। मैं उसकी तलाश में बाग़ के दरवाज़े पर आया। लोगों से पूछा कि एक शख़्स यमनी लिबास में यहाँ से गुज़रा है। सबने कहा कि हमने कोई ऐसा शख़्स नहीं देखा। साबित बिनानी रहमतुल्लाहि अलैहि की एक रिवायत में यह भी है कि लोगों का ख़्याल है कि यह इलियास अलैहिस्सलाम थे। दूसरी रिवायत में इसका ज़िक्र नहीं।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 7, पेज 582

रिज़्क़ में बरकत के लिए एक मुजर्रब अमल

मौलाना शाह अब्दुल ग़नी फूलपूरी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया कि हज़रत हाजी इमदादुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि से मन्क़ूल है कि जो शख़्स सुब्ह को 70 मर्तबा पाबन्दी से यह आयत पढ़ा करे वह रिज़्क़ की तंगी से महफ़ूज़ रहेगा और फ़रमाया कि बहुत मुजर्रब अमल है। आयत नीची दी गई है:

اَللّٰهُ لَطِيْفٌ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ.

—(सूरह शूरा, आयत 19, मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 7, पेज 581

बे-दीन को दीनदार बनाने का एक अजीब फ़ारूक़ी नुस्ख़ा

इब्ने कसीर ने इब्ने अबि हातिम की सनद से नक़ल किया है कि मुल्क शाम में एक बड़ा बारूअब आदमी था और फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया करता था, कुछ अर्से तक वह न आया तो फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों से उसका हाल पूछा। लोगों ने कहा कि अमीरूल मोमिनीन उसका हाल न पूछिए वह तो शराब में बद्मस्त रहने लगा। फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने मुंशी को बुलाया और कहा कि यह ख़त लिखोः

من عمر بن الخطاب (ﷺ) الی فلان بن فلان. سلام علیك فانی
احمد الیك الله الذی لا اله الاّ هو غافر الذّنب و قابل التّوب
شدید العقاب ذی الطول لا اله الاّ هو الیه المصیرط

तर्जुमाः– मिनजानिब उमर बिन ख़त्ताब (रज़ियल्लाहु अन्हु) बनाम फ़लाँ बिन फ़लाँ। सलाम अलैक। इसके बाद मैं तुम्हारे लिए उस अल्लाह की हम्द पेश करता हूँ जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह गुनाहों को मआफ़ करने वाला, तौबा को क़ुबूल करने वाला, सख़्त अज़ाब वाला, बड़ी क़ुदरत वाला है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसी की तरफ़ लौटकर जाना है।

फिर मजलिस में बैठे हुए लोगों से कहा कि सब मिलकर उसके लिए दुआ करो कि अल्लाह तआला उसके क़ल्ब को फेर दे, और उसकी तौबा क़ुबूल फ़रमाये, फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने जिस क़ासिद के हाथ यह ख़त भेजा था उसको हिदायत की थी,

कि यह ख़त उनको उस वक़्त तक न दे जब तक कि वह नशे से होश में न आये और किसी दूसरे के हवाले न करे। जब उसके पास हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु का यह ख़त पहुँचा और उसने उसको पढ़ा तो बार-बार उन कलिमात को पढ़ता और ग़ौर करता रहा कि इसमें मुझे सज़ा से डराया भी गया है और मआफ़ करने का वादा भी किया गया है फिर रोने लगा और शराब नोशी से बाज़ आ गया और ऐसी तौबा की कि फिर शराब के पास न गया।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को जब इस असर की ख़बर मिली तो लोगों से फ़रमाया कि ऐसे मआमलात में तुम सबको ऐसा ही करना चाहिए कि जब कोई भाई किसी ग़लती में मुब्तिला हो जाये तो उसको दुरूस्ती पर लाने की फ़िक्र करो और उसको अल्लाह की रहमत का भरोसा दिलाओ और अल्लाह से उसके लिए दुआ करो कि वह तौबा कर ले और तुम उसके मुक़ाबले पर शैतान के मददगार न हो यानी उसको बुरा भला कहकर या ग़ुस्सा दिला कर और दीन से दूर कर दोगे तो यह शैतान की मदद होगी। —मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 7, पेज 582

ग़ज़्वा-ए-बद्र की बे सरो-सामानी

12 रमज़ानुल मुबारक को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना मुनव्वरा से रवाना हुए, 313 या 314 या 315 आदमी आपके हमराह थे, बे सरो-सामानी का यह हाल था कि इतनी जमाअत में सिर्फ़ दो घोड़े और 70 ऊँट थे। एक घोड़ा हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम का और एक हज़रत मिक़्दाद का था और

एक-एक ऊँट दो-दो और तीन-तीन आदमियों में बटा हुआ था। अब्दुल्लाह बिन मसऊद फ़रमाते हैं कि बद्र में जाते वक़्त एक ऊँट तीन-तीन आदमियों में बटा हुआ था एक के बाद दूसरा सवार होता था। अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शरीक थे। जब रसूलुल्लाह सल्ल० के पैदल चलने की बारी आती तो अबू लुबाबा और अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु अर्ज़ करते या रसूलुल्लाह! आप सवार हो जाइये हम आपके बदले में पैदल चल लेंगे, आप सल्ल० यह इर्शाद फ़रमाते तुम चलने में मुझसे ज़्यादा क़वी (मज़बूत) नहीं और मैं तुमसे ज़्यादा ख़ुदा के अज्र से बे-नियाज़ नहीं। —सीरत-ए-मुस्तफ़ा, हिस्सा 2, पेज 58

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दामाद अबुल आस बिन रबीअ का दर्द भरा क़िस्सा

बद्र के क़ैदियों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दामाद अबुल आस बिन रबीअ भी थे, आंहजरत सल्ल० की साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा जो हज़रत ख़दीजतुल कुब्रा रज़ियल्लाहु अन्हा के बतन से थीं अबुल आस की बीवी थीं। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा अबुल आस की ख़ाला थीं उनको अपनी औलाद के बराबर समझती थीं। खुद हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आप सल्ल० से कहकर बेअ्सत से पहले हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह अबुल आस से किया था। अबुल आस मालदार और अमानतदार बड़े ताजिर थे। बेअ्सत के बाद हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा और आप सल्ल० की सब साहबज़ादियाँ ईमान लाईं मगर अबुल आस शिर्क पर क़ायम

रहे, क़ुरैश ने अबुल आस पर बहुत ज़ोर दिया कि अबू लहब के बेटों की तरह तुम भी मुहम्मद (सल्ल०) की बेटी को तलाक़ दे दो, जहाँ चाहोगे वहाँ तुम्हारा निकाह कर देंगे लेकिन अबुल आस ने साफ़ इंकार कर दिया और कह दिया कि ज़ैनब जैसी शरीफ़ औरत के मुक़ाबले में दुनिया की किसी औरत को पसंद नहीं करता।

जब क़ुरैश जंग-ए-बद्र के लिए रवाना हुए तो अबुल आस भी उनके साथ थे और लोगों के साथ आप भी गिरफ़्तार हुए, अहल-ए-मक्का ने जब अपने अपने क़ैदियों का फ़िद्या रवाना किया तो हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपने शौहर अबुल आस के फ़िद्ये में अपना वह हार भेजा जो हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने शादी के वक़्त उन्हें दिया था। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस हार को देखकर आब-दीदा हो गये और सहाबा से फ़रमाया अगर मुनासिब समझो तो इस हार को वापस कर दो और उस क़ैदी को छोड़ दो, उसी वक़्त तसलीम और इन्क़ियाद की गर्दनें झुक गईं, क़ैदी भी आज़ाद कर दिया गया और हार भी वापस हो गया मगर रसूलुल्लाह सल्ल० ने अबुल आस से यह वादा ले लिया कि मक्का पहुँचकर ज़ैनब को मदीना भेद दें, अबुल आस ने मक्का पहुँचकर ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को मदीना जाने की इजाज़त दे दी और अपने भाई कनाना बिन रबीअ के साथ रवाना किया।

कनाना ने ठीक दोपहर के वक़्त हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को ऊँट पर सवार किया और हाथ में तीर कमान ली और रवाना हुए। आप सल्ल० की साहबज़ादी का सबके सामने मक्का से रवाना होना क़ुरैश को शाक़ मालूम हुआ, चुनांचे अबू सुफ़ियान

वग़ैरह ने ज़ी-तुवा में आकर ऊँट को रोक लिया, और यह कहा कि हमको मुहम्मद (सल्ल०) की बेटी को रोकने की ज़रूरत नहीं लेकिन इस तरह ऐलानिया तौर पर ले जाने में हमारी ज़िल्लत है मुनासिब यह है कि इस वक़्त तो मक्के को वापस चलो और रात के वक़्त लेकर रवाना हो जाओ, कनाना ने इसको मंज़ूर नहीं किया, अबू सुफ़ियान से पहले हब्बार बिन अस्वद ने (जो बाद में चलकर मुसलमान हुए) जाकर ऊँट रोका और हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को डराया। ख़ौफ़ से हमल साक़ित हो गया। उस वक़्त कनाना ने तीर कमान संभाली और कहा कि जो शख़्स ऊँट के क़रीब भी आएगा तीरों से उसके जिस्म को छलनी कर दूँगा।

अल्-गर्ज़ कनाना मक्का वापिस आ गये और दो-तीन रातें गुज़ारने पर शब को रवाना हुए, इधर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ैद बिन हारिसा और एक अंसारी को हुक्म दिया कि तुम जाकर मुक़ाम-ए-बतन या जज में ठहरो जब ज़ैनब आ जायें तो उनको अपने साथ ले आना, यह लोग बतन या जज पहुँचे और उधर से कनाना बिन रबीअ आते हुए मिले। कनाना वहीं से वापस हो गये और ज़ैद बिन हारिसा अपने साथी के साथ साहबज़ादी-ए-रसूल को लेकर मदीना रवाना हुए। जंगे बद्र के एक माह बाद मदीना पहुंचीं।

साहबज़ादी आप सल्ल० के पास रहने लगीं और अबुल आस मक्का में मुक़ीम रहे। फ़तह-ए-मक्का से पहले अबुल आस तिजारत की ग़र्ज़ से मुल्क-ए-शाम रवाना हुए, चूंकि अहल-ए-मक्का को आपकी अमानत व दियानत पर ऐतमाद था इसलिए और लोगों का पैसा भी तिजारत में शामिल था, शाम से वापसी पर मुसलमानों का एक दस्ता मिल गया और उसने तमाम माल व मताअ ज़ब्त

कर लिया। अबुल आस छिपकर मदीना हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आ पहुंचे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सुब्ह को नमाज़ के लिए तशरीफ़ लाये तो हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने चबूतरे से आवाज़ दी, ऐ लोगो! मैंने अबुल आस बिन रबीअ को पनाह दी है, रसूलुल्लाह सल्ल० जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो लोगों की तरफ़ मतवज्जह हुए और इर्शाद फ़रमायाः

ايها الناس هل سمعتم ما سمعت قالوا نعم قال اما والذى نفسى بيده ما علمت بشيى من ذلك حتى سمعت ما سمعتم انه يجير على المسلمين ادناهم٥

तर्जुमाः– ऐ लोगों! क्या तुम ने भी सुना है जो मैंने सुना। लोगों ने कहा, हाँ। आप सल्ल० ने फ़रमाया क़सम है उस ज़ात-ए-पाक की कि मुहम्मद की जान उसके हाथ में है मुझको इसका बिल्कुल इल्म नहीं जो और इस वक़्त तुमने सुना वही मैंने सुना। तहक़ीक़ ख़ूब समझ लो कि मुसलमानों में अदना से अदना और कमतर से कमतर भी पनाह दे सकता है।

और यह फ़रमाकर साहबज़ादी के पास तशरीफ़ ले गये और यह फ़रमाया कि ऐ बेटी! इसका इक्राम करना मगर ख़िल्वत न करने पाये क्योंकि तू इसके लिए हलाल नहीं, यानी तू मुसलमान है और वह मुश्रिक और काफ़िर और एहल-ए-सरिया से यह इर्शाद फ़रमाया कि तुमको इस शख़्स (यानी अबुल आस) का तअल्लुक़ हमसे मालूम है अगर मुनासिब समझो तो इसका माल वापस कर दो वर्ना वह अल्लाह के यहाँ अतिया है जो अल्लाह ने तुमको अता फ़रमाया है और तुम ही इसके मुस्तहिक़ हो। यह सुनते ही

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने तमाम माल वापस कर दिया कोई डोल लाता था और कोई रस्सी, कोई लोटा और कोई चमड़े का टुकड़ा, गर्ज़ यह कि तमाम माल ज़र्रा-ज़र्रा करके वापस कर दिया।

अबुल आस कुल माल लेकर मक्का रवाना हुए और जिस जिसका हिस्सा था उसका हिस्सा पूरा किया। जब शुरका के हिस्से दे चुके तो यह फ़रमायाः

يا معشر قريش هل بقى لاحدمنكم عندى مال يا خذه قالوا لا فجزاك الله خيرا فقد وجدناك وافيا كريما قال فاشهد ان لا اله الا الله وان محمداً عبده و رسوله والله ما منعنى من الاسلام عنده الا تخوف ان آكل اموالكم فلما اداها الله اليكم وفرغت منها اسلمت.

तर्जुमाः– ऐ क़ुरैश के गिरोह! क्या किसी का माल मेरे ज़िम्मे बाक़ी रह गया है, जो उसने वसूल न कर लिया हो? क़ुरैश ने कहा नहीं। पस अल्लाह तुझको जज़ा-ए-ख़ैर दे, तहक़ीक़ हमने तुझको वफ़ादार और शरीफ़ पाया, कहा पस मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और बेशक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं। मै अब तक सिर्फ़ इसलिए मुसलमान नहीं हुआ कि लोग यह गुमान न करें कि मैंने माल खाने की ख़ातिर ऐसा किया है, जब अल्लाह ने तुम्हारा माल तुम तक पहुंचा दिया और मैं इस ज़िम्मेदारी से बरी हो गया तब मुसलमान हुआ।

इसके बाद अबुल आस रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का से मदीना चले आये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फिर हज़रत

ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को आपकी ज़ौजियत में दे दिया।

—सीरत-ए-मुस्तफ़ा, हिस्सा 2, पेज 124

सालेह बीवी

एक हदीस में रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो औरत अपने शौहर की ताबेदार व मुतीअ हो उसके लिए परिंदे हवा में इस्तिग़फ़ार करते हैं और मछलियाँ दरिया में इस्तिग़फ़ार करती हैं और फ़रिश्ते आसमानों मे इस्तिग़फ़ार करते हैं और दरिंदे जंगलों में इस्तिग़फ़र करते हैं।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 2, पेज 399

ज़ुल्म की तीन क़िस्में

ज़ुल्म की एक क़िस्म वह है जिसको अल्लाह तआला हरगिज़ न बख़्शेंगे, दूसरी क़िस्म वह है जिसकी मग़्फ़िरत हो सकेगी, और तीसरी क़िस्म वह है कि जिसकी बदला अल्लाह तआला लिए बग़ैर न छोड़ेंगे।

पहली क़िस्म का ज़ुल्म शिर्क है। दूसरी क़िस्म का ज़ुल्म हुक़ूल्लाह में कोताही है और तीसरी क़िस्म का ज़ुल्म हुक़ूकुल इबाद की ख़िलाफ़ वर्ज़ी है।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 2, पेज 550

इस्लाम में ईदुल फ़ित्र की पहली नमाज़

बद्र से मराजिअत के बाद शव्वाल की पहली तारीख़ को आप

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ईद की नमाज़ अदा फ़रमाई। यह पहली ईदुल फ़ित्र थी।

—ज़रक़ानी, हिस्सा 1, पेज 454, सीरत-ए-मुस्तफ़ा हिस्सा 2, पेज 132

वह सहाबी जिसने एक नमाज़ भी न पढ़ी और वह जन्नती हैं

अम्र बिन साबित, जो 'उसैरिम' के लक़्ब से मश्हूर थे हमेशा इस्लाम से मुन्हरिफ़ रहे, जब उहद का दिन हुआ तो इस्लाम दिल में उतर आया और तलवार लेकर मैदान में पहुंचे और काफ़िरों को ख़ूब क़त्ल किया। यहां तक कि ज़ख़्मी होकर गिर पड़े, लोगों ने जब देखा कि 'उसैरिम' हैं तो बहुत तअज्जुब हुआ और पूछा कि ऐ अम्र! तेरे लिए इस लड़ाई का क्या दाओ हुआ? इस्लाम की रग़बत या क़वी ग़ैरत व हमीयत। 'उसैरिम' ने जवाब दियाः

بل رغبة فى الاسلام فامنت بالله ورسوله فاسلمت واخذت
سيفى وقاتلت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم حتى
اصابنى ما اصابنى.

बल्कि इस्लाम की रग़बत दाओ हुई, मैं ईमान लाया अल्लाह और उसके रसूल पर और मुसलमान हुआ और तलवार लेकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ आप के दुश्मनों से क़िताल किया। यहां तक कि मुझको यह ज़ख़्म पहुंचे। यह कलाम किया और ख़ुद भी ख़त्म हो गये। रज़ियल्लाहु अन्हु

انه لمن اهل الجنة. बिलाशुबा वह अहले जन्नत से है।

—रवाह बिन इस्हाक़ व इस्नादह हसन

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे बतलाओ वह कौन शख़्स है कि जो जन्नत में पहुंच गया और एक नमाज़ भी नहीं पढ़ी। वह यही सहाबी हैं (असाबा) तर्जमाः अम्र बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु। —सीरत मुस्तफ़ा, हिस्सा 2, पेज 234

ज़ालिम का साथ देने वाला भी ज़ालिम है

तफ़्सीर-ए-रूहुल मआनी में आयत-ए-करीमा فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ के तहत यह हदीस नक़ल की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़्यामत के दिन आवाज़ दी जाएगी कि कहाँ हैं ज़ालिम लोग और उनके मददगार। यहाँ तक कि वह लोग जिन्होंने ज़ालिमों के दवात, क़लम को दुरूस्त किया है वह भी सब एक लोहे के ताबूत में जमा होकर जहन्नम में फैंक दिए जाएंगे। —मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 3, पेज 25

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु अन्हु की एक अहम नसीहत

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक शख़्स का ख़त में यह नसीहतें लिखीं किः

"मैं तुझे तक़वे की ताकीद करता हूँ, जिसके बग़ैर कोई अमल क़ुबूल नहीं होता, और अहल-ए-तक़वा के सिवा किसी पर रहम नहीं किया जाता, और उसके बग़ैर किसी चीज़ पर सवाब नहीं मिलता इस बात को कहने वाले तो

बहुत हैं मगर अमल करने वाले बहुत कम हैं।"

और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि तक्वे के साथ कोई छोटा सा अमल भी छोटा नहीं है, और जो अमल मक्बूल हो जाये वह छोटा कैसे हो सकता है।

—इब्ने कसीर, —मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 3, पेज 114

जब तक बा-वुज़ू रहोगे फ़रिश्ते नेकियाँ लिखते रहेंगे

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमायाः ऐ अबू हुरैरह! जब तुम वुज़ू करो तो बिस्मिल्लाह व अलहम्दु लिल्लाह कह लिया करो (इसका असर यह होगा कि) जब तक तुम्हारा यह वुज़ू बाक़ी रहेगा उस वक़्त तक तुम्हारे मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते (यानी आमाल के लिखने वाले) तुम्हारे लिए बराबर नेकियाँ लिखते रहेंगे।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 3, पेज 75

छोटे और बड़े गुनाह की अजीब मिसाल

मुस्नद अहमद में है कि हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु को एक ख़त में लिखा कि बंदा जब ख़ुदा तआला की नाफ़रमानी करता है तो उसके मद्दाह भी मज़म्मत करने लगते हैं और दोस्त भी दुश्मन हो जाते हैं, गुनाहों से बेपरवाई इंसान के लिए दाइमी तबाही का सबब है।

सही हदीस में कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मोमिन जब कोई गुनाह करता है तो उसके दिल पर एक स्यान नुक़्ता लग जाता है फिर अगर तौबा और इस्तिग़फ़ार

कर लिया तो यह नुक़्ता मिट जाता है और अगर तौबा न की तो यह नुक़्ता बढ़ता रहता है यहां तक कि उसके पूरे दिल पर छा जाता है और उसका नाम क़ुरआन में रैन है।

كَلَّا بَلْ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ۝

यानी उनके दिलों पर ज़ंग लगा दिया उनके आमाल-ए-बद ने। अलबत्ता गुनाहों के मुफ़ासिद और नताइज-ए-बद और मुज़िर समरात के ऐतिबार से उनका आपस में फ़र्क़ ज़रूरी है, इस फ़र्क़ की वजह से किसी गुनाह को बड़ा और किसी को छोटा कहा जाता है।

किसी बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि छोटे गुनाह और बड़े गुनाह की मिसाल महसूसात में ऐसी है जैसे छोटा बिच्छू और बड़ा बिच्छू, या आग के बड़े अंगारे और छोटी चिंगारी, कि इंसान इन दोनों में से किसी की तक्लीफ़ को भी बर्दाश्त नहीं कर सकता, इसीलिए मुहम्मद बिन कअ़ब क़रज़ी ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला की सबसे बड़ी इबादत यह है कि गुनाहों को छोड़ दिया जाये। जो लोग नमाज़ तस्बीह के साथ गुनाहों को नहीं छोड़ते उनकी इबादत क़ुबूल नहीं होती। हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया कि तुम जिस क़द्र किसी गुनाह को हल्का समझोगे उतना ही वह अल्लाह के नज़दीक बड़ा जुर्म हो जाएगा और सलफ़ सालिहीन ने फ़रमाया कि हर गुनाह कुफ़्र का क़ासिद है जो इंसान को काफ़िराना आमाल व अख़्लाक़ की तरफ़ दावत देता है।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 2, पेज 384

खुदा का खुद अपने हाथ से लिखा हुआ एग्रीमेन्ट जो खुदा के पास हिफ़ाज़त से है

كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ सही मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआला ने मख़्लूक़ात को पैदा फ़रमाया तो एक नविश्ता अपने ज़िम्मे वादा का तहरीर फ़रमाया जो अल्लाह तआला ही के पास है जिसका मज़मून यह है: اِنَّ رَحْمَتِيْ تَغْلِبُ عَلٰى غَضَبِيْ यानी मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब रहेगी। (क़र्तबी)

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 3, पेज 290

आमाल अच्छे तो हाकिम अच्छे और अगर आमाल ख़राब तो हाकिम ख़राब

मिश्कात में हुलैया बिन अबी नईम की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, मैं सब बादशाहों का मालिक और बादशाह हूँ, सब बादशाहों के दिल मेरे हाथ में हैं। जब मेरे बंदे मेरी इताअत करते हैं तो मैं उनके बादशाहों और हुक्काम के दिलों में उनकी शफ़क़त और रहमत डाल देता हूँ और जब मेरे बंदे मेरी नाफ़रमानी करते हैं तो उनके हुक्काम के दिल उन पर सख़्त कर देता हूँ वह उनको हर तरह का बुरा अज़ाब चखाते हैं, इसलिए हुक्काम और उमरा को बुरा कहने में अपना वक़्त बर्बाद न करो, बल्कि अल्लाह तआला की तरफ़

रूजूअ और अपने अमल की इस्लाह की फ़िक्र में लग जाओ, ताकि तुम्हारे सब कामों को दुरूस्त कर दूँ।

इसी तरह अबू दाऊद व नसाई में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "जब अल्लाह तआला किसी अमीर और हाकिम का भला चाहते हैं तो उसको अच्छा वज़ीर और अच्छा नाइब दे देते हैं कि अगर अमीर से कुछ भूल हो जाये तो वह उसको याद दिला दे और जब अमीर सही काम करे तो वह उसकी मदद करे और जब किसी हाकिम व अमीर के लिए कोई बुराई मुक़द्दर होती है तो बुरे आदमियों को उसका वज़ीर और मातहत बना दिया जाता है।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 3, पेज 359

एक आलमी आफ़त का शरई हुक्म

टी०वी० पर मैच देखना जाइज़ नहीं, इसमें कई गुनाह और ख़राबियाँ हैं। पहला गुनाह खेलने वालों की तसावीर क़सदन देखने का है, जिसको हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब रहमतुल्लाहि अलैहि ने जवाहरूल फ़िक़ः, हिस्सा 3, पेज 339 पर लिखा है। टी०वी० में बे-शुमार लोगों की तसावीर होती हैं इसलिए हर तस्वीर को देखना अलग-अलग गुनाह होगा।

दूसरा गुनाह खेल देखने के दौरान बीच-बीच में उन औरतों की तसावीर देखने का है जो खेल देखने के लिए स्टेडियम में होती हैं।

तीसरा गुनाह टी०वी० ख़रीदने और घर में रखने का है अगरचे उसको इस्तिमाल न किया जाये जैसा कि फ़तावा रहीमिया, हिस्सा 6, पेज 298 पर लिखा हुआ है। अगर कोई शख़्स गाने बजाने के

आलात और ग़फ़लत में डालने वाले सामान अपने घर में रखे तो यह रखना मक्रूह (तहरीमी) है और गुनाह है, अगरचे वह उनको इस्तेमाल ने करे, इसलिए कि ऐसे आलात को रखना आम तौर पर दिल्लगी के लिए होता है। —ख़ुलासतुल-फ़तावा, पेज 338

चौथा गुनाह जमाअत की नमाज़ को छोड़ने का है जैसा कि आम तौर पर इसका मुशाहिदा किया जाता है।

पाँचवी ख़राबी अपने क़ीमती वक़्त को बर्बाद करना होता है।

छठी ख़राबी ला-यअ्नी (बे-फ़ायदा काम) में अपने को मश्ग़ूल रखना है जबकि हदीस में इस्लाम की ख़ूबी यह बतलाई गई है कि बेकार कामों को छोड़ दो।

सातवी ख़राबी यह है कि इससे दीन और दुनिया के ज़रूरी कामों से ग़फ़लत पैदा हो जाती है जैसा कि मुशाहिदा है।

आठवी ख़राबी यह है कि इससे टी०वी० से उन्सियत पैदा होती है फिर उसके बाद बहुत से गुनाह और ख़राबियाँ वजूद में आती हैं।

नवीं ख़राबी यह है कि इससे रोज़ी में बरकत ख़त्म हो जाती है क्योंकि हर गुनाह का यही असर है।

दसवीं ख़राबी यह है कि टी०वी० के प्रोग्रामों से दिलचस्पी रखने वाला भलाई के कामों से महरूम रहता है।

मुरत्तबः **मुफ़्ती मुहम्मद आदम** साहब, भैलूनी
दारूल इफ़्ता, जामिआ नज़ीरिया काकोसी
व अब्दुर्रहमान कालेटरवी अफ़ी अन्हु
दारूल इफ़्ता, दारूल उलूम, छापी

कमेन्ट्री सुनने की दिलचस्पी रखने की ख़राबियाँ और गुनाह

पहला गुनाह जमाअत की नमाज़ छोड़ने का है।

दूसरी ख़राबी लग़्व (बेकार काम) में मश्ग़ूल होना है हालांकि अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक में कामयाबी के लिए एक शर्त बयान फ़रमाई है कि लग़्व कामों से दूर रहे। —पारा 18, रुकू 1

तीसरी ख़राबी यह है कि इसमें वक़्त की नाक़द्री होती है हालांकि अल्लाह तआला ने **"वल्-असर"** में वक़्त की क़सम खाकर उसकी अहमियत और क़द्र दानी की तालीम दी है।

चौथी ख़राबी यह है कि इसकी वजह से अल्लाह तआला की याद और आख़िरत की फ़िक्र से ग़फ़्लत पैदा होती है।

पाँचवी ख़राबी यह है कि इसकी वजह से दुनिया के ज़रूरी कामों का नुक़्सान होता है जैसा कि मुशाहिदा है।

मुरत्तबः **मुफ़्ती मुहम्मद आदम** साहब, भैलूनी
दारूल इफ़्ता, जामिआ नज़ीरिया काकोसी
व अब्दुर्रहमान कालेटरवी अफ़ी अन्हु
दारूल इफ़्ता, दारूल उलूम, छापी

ख़ुदा और रसूल की लअनत के मुस्तहिक़ कौन लोग हैं?

एक हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इर्शाद फ़रमाते हैं कि छः आदमी ऐसे हैं जिन पर मैंने लअनत भेजी है

और अल्लाह तआला ने भी उन पर लअनत की है और हर नबी मुस्तजाबुद्दावात होता है। वह छः आदमी ये हैं:

1. अल्लाह की किताब में ज़्यादती करने वाला।
2. वह शख़्स जो जब्र व क़हर से इक़्तिदार हासिल करके उस आदमी को इज़्ज़त दे जिसको अल्लाह ने ज़लील किया हो और जिसको अल्लाह ने इज़्ज़त अता की हो उसको ज़लील करे।
3. अल्लाह की तक़दीर को झुठलाने वाला।
4. अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों को हलाल समझने वाला।
5. मेरी औलाद में वह आदमी जो मुहर्रमात को हलाल करने वाला हो।
6. मेरी सुन्नत को छोड़ने वाला। —मिश्कात, पेज 22

एक और हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः لَعَنَ اللّٰهُ النَّاظِرَ وَالْمَنْظُوْرَ اِلَيْهِ यानी जो कोई ना-महरम पर बुरी नज़र डाले और ज़िसके ऊपर नज़र डाले दोनों पर अल्लाह तआला ने लअनत फ़रमाई है बशर्ते जिस पर बुरी नज़र पड़ी है उसके इरादे और इख़्तियार को इसमें दख़्ल हो। हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसे मर्द पर लअनत की है जो औरत का लिबास पहले और ऐसी औरत पर जो मर्द का लिबास पहने। —मिश्कात

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से किसी ने अर्ज़ किया एक औरत (मर्दाना) जूता पहनती है। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ऐसी औरत पर लअनत की है जो मर्दों के तौर तरीक़े इख़्तियार करे।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लअनत की, उन मर्दों पर जो औरतों की तरह शक्ल व सूरत बनाकर हिजड़े बनें और लअनत की उन औरतों पर जो शक्ल व सूरत में मर्दाना पन इख़्तियार करें और फ़रमाया कि इनको अपने घरों से निकाल दो।

बुख़ारी शरीफ़ में है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला की लअनत हो गोदने वालियों और गुदवाने वालियों पर और अबरू (यानी भवों के बाल) चुनती हैं ताकि भवें बारीक हो जायें और ख़ुदा की लअनत हो उन औरतों पर जो हुस्न के लिए दांतों के दर्मियान कुशादगी करती हैं जो अल्लाह की ख़िलक़त को बदलने वाली हैं।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 2, पेज 435

ना-अहल को कोई उहदा सुपुर्द करना

एक हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है कि जिस शख़्स को आम मुसलमानो की कोई ज़िम्मेदारी सुपर्द की गई हो फिर उसने कोई उहदा किसी शख़्स को महज़ दोस्ती व तअल्लुक़ की मद में बग़ैर अहलियत मालूम किए हुए दे दिया उस पर अल्लाह की लअनत है। न उस का फ़र्ज़ मक़्बूल है न नफ़्ल, यहां तक कि वह जहन्नम में दाख़िल हो जाये।

—जमउल्-फ़वाइद, पेज 375

कुछ रिवायात में है कि जिस शख़्स ने कोई ओहदा किसी शख़्स के सुपूर्द किया हालांकि उसके इल्म में था कि दूसरा आदमी इस ओहदे के लिए इससे ज़्यादा क़ाबिल और अहल है तो उसने अल्लाह की ख़्यानत की और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

की और सब मुसलमानों की आज जहाँ निज़ाम-ए- हुकूमत की अबतरी नज़र आती है वह सब कुछ इस क़ुरआनी तालीम को नज़र अंदाज़ कर देने का नतीजा है कि तअल्लुक़ात और सिफ़ारिशों और रिश्वतों से ओहदे तक़्सीम किये जाते हैं। जिसका नतीजा यह होता है कि ना-अहल और ना-क़ाबिल लोग ओहदो पर क़ाबिज़ होकर ख़ुदा की मख़्लूक़ को परेशान करते हैं और सारा निज़ाम-ए-हुकूमत बर्बाद हो जाता है इसलिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक हदीस में इर्शाद फ़रमायाः

اِذا وسد الامر الٰی غیر اھله فانتظر الساعة

यानी जब देखो कि कामों की ज़िम्मेदारी ऐसे लोगों के सुपूर्द कर दी गई जो उस काम के अहल और क़ाबिल नहीं तो अब इस फ़साद का कोई इलाज नहीं, क़्यामत का इंतज़ार करो। (यह हिदायत सही बुख़ारी किताबुल इल्म में है)

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 2, पेज 446

सूरः इनआम की एक ख़ास फ़ज़ीलत

कुछ रिवायात में हज़रत अली करमल्लाहु वज्हहु से मन्क़ूल है कि यह सूरः जिस मरीज़ पर पढ़ी जाये तो अल्लाह तआला उसको शिफ़ा देते हैं। यानी सूरः इनाम —मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 3, पेज 512

ख़ुदा और आख़िरत के ख़ौफ से निकला हुआ एक आँसू जहन्नम की बड़ी से बड़ी आग को बुझा देगा

इमाम अहमद रहमतुल्लाहि अलैहि ने किताबुज़्ज़ुहद में ब-रिवायत हज़रत हाज़िम रज़ियल्लाहु अन्हु नक़ल किया है कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक मर्तबा जिब्रील अमीन तशरीफ़ लाये तो वहाँ कोई शख़्स ख़ौफ़-ए-ख़ुदा से रो रहा था, तो जिब्रील अमीन ने फ़रमाया कि इंसान के तमाम आमाल का तो वज़न होगा मगर ख़ुदा और आख़िरत के ख़ौफ़ से रोना ऐसा अमल है जिसको तौला न जाएगा बल्कि एक आँसू भी जहन्नम की बड़ी से बड़ी आग को बुझा देगा।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 3, पेज 533

उलमा के क़लम की रौशनाई और शहीदों के ख़ून का वज़न

इमाम ज़हबी रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत इमरान बिन हसीन रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़्यामत के दिन उलमा की रोशनाई जिससे उन्होंने इल्म-ए-दीन और अहकाम-ए-दीन लिखे हैं और शहीदों के ख़ून को तौला जाएगा तो उलमा की रौशनाई का वज़न शहीदों के ख़ून के वज़न से बढ़ जाएगा।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 3, पेज 523

ईमान के बाद सबसे पहला फ़र्ज़ सतरपोशी है

शरीअत-ए-इस्लाम जो हर इंसान की हर सलाह व फ़लाह की क़फ़ील है उसने सतरपोशी का इहतमाम इतना किया कि ईमान के बाद सबसे पहला फ़र्ज़ सतरपोशी को क़रार दिया। नमाज़ रोज़ा वग़ैरह सब इसके बाद हैं हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ियल्लाहु

अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब कोई शख़्स नया लिबास पहने तो उसको चाहिए कि लिबास पहनने के वक़्त यह दुआ पढ़ेः

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ کَسَانِیْ مَا اُوَارِیْ بِهٖ عَوْرَتِیْ وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِیْ حَیَاتِیْ

यानी शुक्र उस ज़ात का जिसने मुझे लिबास दिया जिसके ज़रिए मैं अपने सतर का पर्दा करूं और ज़ीनत हासिल करूं और फ़रमाया कि जो शख़्स नया लिबास पहनने के बाद पुराने लिबास को ग़ुरबा व मसाकीन पर सदक़ा कर दे तो वह अपनी मौत व हयात के हर हाल में अल्लाह तआला की ज़िम्मेदारी और पनाह में आ गया।

—इब्ने कसीर अन मुस्नद अहमद, मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 3, पेज 534

मायूस होकर दुआ मांगना न छोड़ो

एक हदीस में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बंदे की दुआ उस वक़्त तक क़ुबूल होती रहती है जब तक वह किसी गुनाह या क़तअ रहमी की दुआ न करे और जल्द बाज़ी न करे। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से दर्याफ़्त किया जल्दबाज़ी का क्या मतलब है? आप सल्ल० ने फ़रमाया मतलब यह है कि यूँ ख़्याल कर बैठे कि मैं इतने अर्से से दुआ मांग रहा हूँ अब तक क़ुबूल नहीं हुई, यहां तक कि मायूस होकर दुआ छोड़ दे। —मुस्लिम, तिर्मिज़ी

एक हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला से जब दुआ मांगो तो इस हालत में कि तुम्हें उसके क़ुबूल होने में कोई शक न हो।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 3, पेज 584

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिफ़ाक़त किसी रंग व नसल पर मौक़ूफ़ नहीं

तिबरानी ने मुअजम-ए-कबीर में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की यह रिवायत नक़ल की है कि एक शख़्स हब्शी आंहज़रत सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आप हमसे हुस्न-ए- सूरत, और हसीन रंग में भी मुमताज़ हैं और नबूव्वत व रिसालत में भी अब अगर मैं भी इस चीज़ पर ईमान ले आऊं जिस पर आप सल्ल० ईमान रखते हैं और वही अमल करूं जो आप सल्ल० करते हैं तो क्या मैं भी जन्नत में आप सल्ल० के साथ हो सकता हूँ।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, हाँ ज़रूर! (तुम अपनी हब्शियाना बद्सूरती से न घबराओ) क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है जन्नत में काले रंग के हब्शी सफ़ेद और हसीन हो जाएंगे और एक हज़ार साल की दूरी से चमकेंगे, और जो शख़्स **ला इलाहा इल्लल्लाह** का मानने वाला है उसकी फ़लाह व निजात अल्लाह तआला के ज़िम्मे हो जाती है, और जो शख़्स **सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही** पढ़ता है उसके नामा-ए-आमाल में एक लाख चौबीस हज़ार नेकियाँ लिखी जाती हैं।

यह सुनकर मज्लिस में से एक शख़्स ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! जब अल्लाह तआला के दरबार में हसनात की इतनी सख़ावत है तो फिर हम कैसे हलाक हो सकते हैं या अज़ाब में कैसे गिरफ़्तार हो सकते हैं? आप सल्ल० ने फ़रमायाः (यह बात

नहीं) हक़ीक़त यह है कि क़्यामत में कुछ आदमी इतना अमल और हसनात लेकर आएंगे कि अगर उनको पहाड़ पर रख दिया जाये तो पहाड़ भी उनके बोझ को बर्दाश्त न कर सके लेकिन इसके मुक़ाबले में जब अल्लाह तआला की नेमतें आती हैं और उनका मवाज़ना किया जाता है तो इंसान का अमल उनके मुक़ाबले में ख़त्म हो जाता है मगर यह कि अल्लाह तआला ही उसको रहमत से नवाज़ें।

उस हब्शी के सवाल व जवाब ही पर सूरः दहर की यह आयत नाज़िल हुई :

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُوْرًا.

हब्शी ने हैरत से सवाल किया या रसूलुल्लाह! मेरी आँखें भी उन नेमतों को देखेंगी जिनको आप सल्ल० की मुबारक आँखें मुशाहिदा करेंगी? आप सल्ल० ने फ़रमाया हाँ ज़रूर। यह सुनकर हब्शी नव-मुस्लिम ने रोना शुरू किया यहां तक कि रोते-रोते वहीं जान दे दी और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने दस्त-ए-मुबारक से उसकी तज्हीज़ व तक्फ़ीन फ़रमाई।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 2, पेज 469

मस्जिद और जमाअत

اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَo

तर्जुमाः हाँ अल्लाह की मसजिदों को आबाद करना उन लोगों का काम है जो अल्लाह पर और क़्यामत के दिन पर

ईमान लावें और नमाज़ की पाबंदी करें और ज़कात दें और अल्लाह के सिवा किसी से न डरें सो ऐसे लोगों की निस्बत तवक़्क़ो है कि अपने मक़्सूद तक पहुंच जाएंगे।—बयानुलक़ुरान

इमारत-ए-मसाजिद से इस जगह मुराद है हमेशा इबादत ज़िक्र-ए-इलाही और इल्म-ए-दीन व क़ुरआन की तालीम से मस्जिदों को आबाद रखना।

1. हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम किसी को देखो कि वह मस्जिद का आदी बन गया है (जब काम से छूटता है मस्जिद का रूख़ करता है) तो उसके मोमिन होने की शहादत दो, क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है:

إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ.

—सूरः तौबा, आयत 18, रवाहुत तिर्मिज़ी वद्दारिमी वल्-बग़वी

2. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स सुब्ह या शाम मस्जिद को जाता है जितनी मर्तबा भी जाए अल्लाह (हर मर्तबा जाने के बदले में) उसके लिए जन्नत में एक मकान तैयार कर देता है। (मुत्तफ़िक़ अलैहि)

3. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु रावी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस रोज़ अल्लाह के साये के सिवा कोई साया न होगा उस रोज़ सात आदमियों को अल्लाह अपने साये में ले लेगा। उन सात में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस आदमी का शुमार किया कि जब वह मस्जिद से निकलता है तो वापस मस्जिद में आने तक

दिल उसका मस्जिद में ही अटका रहता है। (मुत्तफ़िक़ अलैहि)

4. हज़रत सलमान रज़ि० रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स घर में अच्छी तरह वुज़ू करने के बाद मस्जिद को जाता है वह अल्लाह की मुलाक़ात को आने वाला (यानी अल्लाह का मेहमान) हो जाता है और मेज़बान पर हक़ है कि वह अपने मेहमान की इज़्ज़त करे।

—रवाहुततिबरानी व अब्दुर्रज़्ज़ाक़ व इब्ने जरीर फ़ी तफ़्सीरीहिमा वल बैहक़ी फ़ी शुअबुल ईमान

5. अम्र बिन मैमून का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबी फ़रमाते थे ज़मीन पर मस्जिदें अल्लाह के घर हैं जो इन मस्जिदों में अल्लाह की मुलाक़ात को आये अल्लाह पर हक़ है वह उनकी इज़्ज़त करे।

—रवाहुलबैहक़ी फ़ी शुअबुल ईमान व अब्दुर्रज़्ज़ाक़ व इब्ने जरीर फ़ी तफ़्सीरीहिमा, तफ़्सीर मज़्हरी, हिस्सा 5, पेज 198-199

6. हदीस में है मस्जिदों के आबाद करने वाले अल्लाह वाले हैं।

7. हदीस में है कि अल्लाह तआला उन मस्जिद वालों पर नज़रें डालकर अपना अज़ाब पूरी क़ौम पर से हटा लेता है।

8. हदीस में है अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फ़रमाता है मुझे अपनी इज़्ज़त की, अपने जलाल की क़सम कि मैं ज़मीन वालों को अज़ाब करना चाहता हूँ लेकिन अपने घरों के आबाद करने वालों और मेरे लिए आपस में मोहब्बत रखने वालों और सुब्ह सहरी के वक़्त इस्तिग़फ़ार करने वालों पर नज़रें डाल कर अपने अज़ाब को हटा लेता हूँ।

9. इब्ने असाकर में है कि शैतान इंसान का भेड़िया है। जैसे बक्रियों का भेड़िया होता है कि वह अलग-थलग पड़ी हुई इधर

उधर की बकरी को पकड़ कर ले जाता है। पस तुम फूट और इख़्तिलाफ़ से बचो जमाअत को और अवाम को और मस्जिदों को लाज़िम पकड़े रहो। —तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 2, पेज 338

उम्मते मुहम्मदिया की ख़ास सिफ़ात अलवाह-ए-मूसा में और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की हुज़ूर सल्ल० का सहाबी होने की ख़्वाहिश

اَخَذَ الْاَلْوَاح के बारे में हज़रत क़तादा रहमतुल्लाहि अलैह ने कहा है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा या रब! मैं अलूवाह में लिखा पाता हूँ कि एक बेहतरीन उम्मत होगी हो हमेशा अच्छी बातों को सिखाती रहेगी और बुरी बातों से रोकती रहेगी, ऐ ख़ुदा वह उम्मत मेरी उम्मत हो। तो अल्लाह ने फ़रमाया मूसा वह तो अहमद की उम्मत होगी। फिर कहा या रब! इन अलूवाह से एक ऐसी उम्मत का पता चलता है जो सबसे आख़िर में पैदा होगी लेकिन जन्नत में सबसे पहले दाख़िल होगी, ऐ ख़ुदा! वह मेरी उम्मत हो। अल्लाह ने फ़रमाया वह अहमद की उम्मत है। फिर फ़रमाया या रब! उस उम्मत का क़ुरआन उनके सीनों में होगा दिल में देखकर पढ़ते होंगे हालांकि उनसे पहले के सब ही लोग अपने क़ुरआन पर नज़र डाल कर पढ़ते हैं दिल से नहीं पढ़ते, यहां तक कि उनका क़ुरआन अगर हटा लिया जाये तो फिर उनको कुछ भी याद नहीं और न वह कुछ पहचान सकते हैं। अल्लाह ने उनको हिफ़्ज़ की ऐसी क़ुव्वत दी है कि किसी उम्मत को नहीं दी गई। या रब! वह मेरी उम्मत हो। कहा ऐ मूसा! वह तो अहमद

की उम्मत है। फिर कहा या रब! वह उम्मत तेरी हर किताब पर ईमान लाएगी। वह गुमराहियों और काफ़िरों से क़ताल करेंगे यहां तक कि काने दज्जाल से भी लड़ेंगे। इलाही वह मेरी उम्मत हो। ख़ुदा ने कहा कि यह अहमद की उम्मत होगी। फिर मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा या रब! अलूवाह में एक ऐसी उम्मत का ज़िक्र है कि वह अपने नज़राने और सद्क़ात ख़ुद आपस के लोग ही खा लेंगे। हालांकि उस उम्मत से पहले तक की उम्मतों का यह हाल है कि अगर वह कोई सद्क़ा या नज़र पेश करते और वह क़ुबूल होती तो अल्लाह आग को भेजते और आग उसे खा जाती और अगर क़ुबूल न होती और रद्द हो जाती तो फिर वह उसको न खाते बल्कि दरिन्दे और परिन्दे आकर खा जाते और अल्लाह उनके सद्क़े उनके अमीरों से लेकर उनके ग़रीबों को देगा। या रब! वह मेरी उम्मत हो तो फ़रमाया यह अहमद की उम्मत होगी। फिर कहा या रब! मैं अलूवाह में पाता हूँ कि वह अगर कोई नेकी का इरादा करेगी लेकिन अमल में न ला सकेगी तो फिर भी एक सवाब की हक़दार हो जाएगी और अगर अमल में लाएगी तो दस हिस्से सवाब मिलेगा बल्कि सात सौ हिस्से तक, ऐ ख़ुदा वह मेरी उम्मत हो। तो फ़रमाया वह अहमद की उम्मत है। फिर कहा कि अलूवाह में है कि वह दूसरों की शफ़ाअत भी करेंगे और उनकी शफ़ाअत भी दूसरों की तरफ़ से होगी, ऐ ख़ुदा वह मेरी उम्मत हो। तो कहा नहीं, यह अहमद की उम्मत होगी। क़तादा रहमतुल्लाह अलैह कहते हैं कि मूसा अलैहिस्सलाम ने फिर अलूवाह रख दीं और कहा "يَا لَيْتَنِي مِنْ أَصْحَابِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ" काश मैं मुहम्मद का सहाबी होता।

—तफ़सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 2, पेज 223-224

तफ़्सीर मज़हरी में भी तक़रीबन यही रिवायत मौजूद है।

कभी काफ़िर फ़ासिक़ आदमी का ख़्वाब भी सच्चा हो सकता है

यह बात भी क़ुरआन व हदीस से साबित और तजुर्बात से मालूम है कि सच्चे ख़्वाब कभी कभी फ़ासिक़ बल्कि काफ़िर को भी आ सकते हैं। सूरः युसूफ़ ही में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के जेल के दो साथियों के ख़्वाब और उनका सच्चा होना, उसी तरह बादशाह-ए-मिस्र का ख़्वाब और उसका सच्चा होना, क़ुरआन में ज़िक्र है। हालांकि यह तीनों मुसलमान न थे। हदीस में कसूरा के ख़्वाब का ज़िक्र है जो उसने रसुल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेअ्सत के बारे में देखा था, वह ख़्वाब सही हुआ, हालांकि कसूरा मुसलमान न था। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफी आतिका ने कुफ़्र की हालत में आप सल्ल० के बारे में सच्चा ख़्वाब देखा था। और काफ़िर बादशाह बुख़्त नस्र के जिस ख़्वाब की ताबीर हज़रत दानियाल अलैहिस्सलाम ने दी वह ख़्वाब सच्चा था। इससे मालूम हुआ कि सिर्फ़ इतनी बात कि किसी को कोई सच्चा ख़्वाब नज़र आ जाये और वाक़िआ उसके मुताबिक़ हो जाये उसके नेक सालेह बल्कि मुसलमान होने की भी दलील नहीं हो सकती। हाँ यह बात सही है कि आम यही है कि सच्चे और नेक लोगों के ख़्वाब अक्सर सच्चे होते हैं, फ़ुस्साक़ व फ़ुज्जार के अक्सर हदीसुन्-नफ़्स या तस्वील शैतान की क़िस्म बातिल से हुआ करते हैं मगर कभी कभी। बहरहाल सच्चे ख़्वाब आम उम्मत के लिए हसब-ए-तस्रीह-ए-हदीस एक बशारत या तंबीह से ज़्यादा कोई मुक़ाम नहीं रखते न ख़ुद इसके लिए किसी

मआमले में हुज्जत है न दूसरों के लिए। कुछ नावाक़िफ़ लोग ऐसे ख़्वाब देखकर तरह तरह के वस्वसों में मुब्तला हो जाते हैं कोई उनको अपनी विलायत की अलामत समझने लगता है, कोई उनसे हासिल होने वाली बातों को शरओी एहकाम का दर्जा देने लगता है। यह सब चीज़ें बे बुनियाद हैं ख़ास कर जबकि यह भी मालूम हो चुका है कि सच्चे ख़्वाबों में भी ज़्यादा तर नफ़्सानी या शैतानी या दोनों क़िस्म के तसव्वुरात के मिले होने का एहतमाल है।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 5, पेज 9

चिल्ले की फ़ज़ीलत

एक हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स चालीस रोज़ इख़्लास के साथ अल्लाह तआला की इबादत करे तो अल्लाह तआला उसके क़ल्ब से हिक्मत के चश्मे जारी फ़रमा देते हैं। रूहुल बयान, मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 4, पेज 58

वह ख़ुशनसीब सहाबी जिनकी शक्ल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबा थी

ग़ज़्व-ए-उहद में मुसलमानों के अलम्बरदार, मुसअब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़रीब थे, उन्होंने काफ़िरों का मुक़ाबला कियाा यहां तक कि शहीद हुए उनके बाद आप ने अलम हज़रत अली करमल्लाहु वजहहु के सपुर्द फ़रमाया।

चूंकि मसअब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुशाबा थे इसलिए किसी शैतान ने यह अफ़वाह उड़ा दी कि नसीब-ए-दुश्मनाँ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शहीद हो गए। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 205

एक अहम नसीहत

1. अदब से इल्म समझ में आता है।

2. इल्म से अमल सही होता है।

3. अमल से हिक्मत मिलती हैं

4. हिक्मत से ज़ुहद क़ायम होता है।

5. ज़ुहद से दुनिया मतरूक होती है।

6. और दुनिया के तर्क से आख़िरत की रग़बत हासिल होती है।

7. और आख़िरत की रग़बत हासिल होने से अल्लाह के नज़दीक रूत्बा हासिल होता है।

जो यक़ीं की राह पे चल पड़े
उन्हें मंज़िलों ने पनाह दी

जिन्हें वस्वसों ने डरा दिया
वह क़दम क़दम पर बहक गए

○ ○ ○

इंतक़ाल के वक़्त एक सहाबी के रूख़्सार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दमों पर

ग़ज़वा-ए-उहद में ज़ियाद इब्ने सकन को यह शर्फ़ हासिल हुआ कि जब ज़ख़्म खाकर गिरे तो नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उनको मेरे क़रीब लाओ, लोगों ने उनको आप सल्ल० के क़रीब कर दिया उन्होंने अपने रूख़्सार आपके मुबारक क़दम मुबारक पर रख दिया और उसी हालत में जान अल्लाह के हवाले की। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

—इब्ने हिशाम, हिस्सा 2, पेज 84, सीरते मुस्तफ़ा, हिस्सा 2, पेज 209

चंद अहम तस्बीहात

سُبْحَانَ اللّٰهِ الَّذِىْ فِى السَّمَآءِ عَرْشُهٗ.

तर्जुमाः पाक है वह अल्लाह जिसका अर्श आसमान में है।

سُبْحَانَ اللّٰهِ الَّذِىْ فِى الْاَرْضِ مَوْطِئُهٗ.

तर्जुमाः पाक है वह अल्लाह जिसका फ़र्श ज़मीन में है।

سُبْحَانَ الَّذِىْ فِى الْبَحْرِ سَبِيْلُهٗ.

तर्जुमाः पाक है वह जिसकी राह समंदर में है।

سُبْحَانَ الَّذِىْ فِى الْجَنَّةِ رَحْمَتُهٗ.

तर्जुमाः पाक है वह जिसकी रहमत जन्नत में है।

سُبْحَانَ الَّذِىْ فِى النَّارِ سُلْطَانُهٗ.

तर्जुमाः पाक है वह जिसकी सलतनत दोज़ख़ में है।

سُبْحَانَ الَّذِیْ فِی الْهَوَآءِ رَحْمَتُهٗ.

तर्जुमाः पाक है वह जिसकी रहमत फ़िज़ा में है।

سُبْحَانَ الَّذِیْ فِی الْقُبُوْرِ قَضَآءُهٗ.

तर्जुमाः पाक है वह जिसका फ़ैसला क़ब्रों में है।

سُبْحَانَ الَّذِیْ رَفَعَ السَّمَآءَ.

तर्जुमाः पाक है वह जिसने आसमानों को बुलंद किया।

سُبْحَانَ الَّذِیْ وَضَعَ الْاَرْضَ.

तर्जुमाः पाक है वह जिसने ज़मीन को बिछाया।

سُبْحَانَ الَّذِیْ لَا مَنْجٰی اِلَّا اِلَیْهِ.

तर्जुमाः पाक है वह जिसके सिवा कोई जाए निजात है।

इन तस्बीहात को बार-बार पढ़िए, अल्लाह की पाकी और अज़्मत का इक़रार कीजिए और अपना अक़ीदा पाक रखिए इंशा अल्लाह दोनों जहाँ में कामयाब रहोगे।

शैतान के मुनादी

हज़रत अबू अमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब इब्लीस ज़मीन पर आने लगा तो उसने अल्लाह तआला से अर्ज़ कियाः ऐ परवरदिगार! तू मुझे ज़मीन पर भेज रहा है और रांदा-ए-दरगाह कर रहा है। मेरे लिए कोई घर भी बना दे। अल्लाह तआला ने फ़रमायाः तेरा घर हमाम है। उसने अर्ज़ किया, मेरे लिए कोई बैठक (मजलिस) भी बना दे। फ़रमाया बाज़ार और

रास्ते (तेरी बैठक हैं)। अर्ज़ किया मेरे लिए खाना भी मुक़र्रर फ़रमा दे। फ़रमायाः तेरा खाना हर वह चीज़ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया जाये। अर्ज़ कियाः मेरे लिए पीने के लिए भी कोई चीज़ मुक़र्रर कर दीजिए। फ़रमाया हर नशा आवर चीज़ (तेरा मशरूब है)। अर्ज़ किया मुझे अपनी तरफ़ बुलाने का कोई ज़रिया भी इनायत फ़रमा दे। फ़रमाया बाजे, ताशे (तेरे मुनादी हैं) अर्ज़ कियाः मेरे लिए क़ुरआन (बार-बार पढ़ी जाने वाली चीज़) भी बना दे। फ़रमायाः (गंदे) शेर (तेरा क़ुरआन है)। अर्ज़ कियाः कुछ लिखने के लिए भी दे दे। फ़रमाया जिस्म में गोदना (तेरी लिखाई है)। अर्ज़ कियाः मेरे लिए कलाम भी मुक़र्रर फ़रमा दे। फ़रमायाः झूठ (तेरा कलाम है)। अर्ज़ किया मेरे लिए जाल भी बना दे। फ़रमाया औरतें (तेरा जाल हैं)।

—निदाए-ए-मिम्बर व महराब, हिस्सा 1, पेज 239, जामउल अहादीस, हिस्सा 2, पेज 58

फ़ायदाः– तो इस हदीस के मुताबिक़ म्यूज़िक और गाना शैतान के मुनादी और शैतान के दाओ हैं। आज हम अपने आसपास नज़र डालें तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस फ़रमान की हक़ीक़त खुलकर सामने आ जाती है।

अल्लाह तआला का क़ुर्ब हासिल करने की ख़ास दुआ

سُبْحَانَ الْاَبَدِيِّ الْاَبَدِ،

पाकी है उस ज़ात के लिए जो हमेशा से हमेशा तक है।

سُبْحَانَ الْوَاحِدُ الْاَحَدِ،

पाकी है उस ज़ात के लिए जो एक और यक्ता है।

سُبْحَانَ الْفَرْدِ الصَّمَدِ،

पाकी है उस ज़ात के लिए जो तन्हा और बे-नियाज़ है।

سُبْحَانَ رَافِعِ السَّمَآءِ بِغَيْرِ عَمَدٍ

पाकी है उस ज़ात के लिए जो आसमान को बग़ैर सुतून के बुलन्द करने वाला है।

سُبْحَانَ مَنْ بَسَطَ الْاَرْضَ عَلٰى مَاءٍ جَمَدٍ

पाकी है उस ज़ात के लिए जिसने बिछाया ज़मीन को बर्फ़ की तरह।

سُبْحَانَ مَنْ خَلَقَ الْخَلْقَ فَاَحْصَاهُمْ عَدَدًا

पाकी है उस ज़ात के लिए जिसने पैदा किया मख़्लूक़ को, पस ज़ब्त किया और ख़ूब जान लिया उनको गिनकर।

سُبْحَانَ مَنْ قَسَّمَ الرِّزْقَ فَلَمْ يَنْسَ اَحَدًا

पाकी है उस ज़ात के लिए जिसने रोज़ी तक़्सीम फ़रमाई और किसी को न भूला।

سُبْحَانَ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا

पाकी है उस ज़ात के लिए जिसने न बीवी अपनाई न बच्चे।

سُبْحَانَ الَّذِىْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ.

पाकी है उस ज़ात के लिए जिसने न किसी को जना न वह जना गया, और नहीं उसके जोड़ का कोई।

अल्लाह का क़ुर्ब हासिल करने के लिए ऊपर दी गईं दुआओं का एहतमाम कीजिए। इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि ने

अल्लाह तबारक व तआला को 100 मर्तबा ख़्वाब में देखा जब सौवीं मर्तबा ख़्वाब में देखा तो उन्होंने अल्लाह से पूछा कि या अल्लाह तेरे बंदे तेरा क़ुर्ब हासिल करने के लिए क्या पढ़ें तो यह दुआ अल्लाह ने ख़्वाब में बताई। —शामी, हिस्सा 1, पेज 144

मनाजात-ए-अरबी

يا رب ان عظمت ذنوبی کثیرة فلقد علمت بان عفوك اعظم
ان کان لا یرجوك الا محسن فمن الذی یدعو او یرجو المجرم
ادعوك ربی کما امرت تضرعا فاذا رددت یدی فمن ذایرحم
مالی الیك وسیلة الا الرجاء بجمیل عفوك ثم انی مسلم

तर्जुमाः (1) ऐ मेरे परवरदिगार! अगर मेरे गुनाह बढ़ गये (तो क्या हुआ) मैं जानता हूँ कि आपकी मआफ़ी मेरे गुनाहों से बढ़ी हुई है

(2) अगर आपकी रहमत के उम्मीदवार सिर्फ़ नेक ही हों तो गुनाहगार किसे पुकारें और किस से उम्मीद रखें।

(3) ऐ मेरे परवरदिगार मैं तेरे हुक्म के मुताबिक़ तुझे ज़ारी व आजिज़ी से पुकारता हूँ तू अगर मेरा हाथ नाकाम वापस लौटा देगा (यानी मुझे मायूस कर देगा) तो कौन है रहम करने वाला?

(4) मेरे पास तो सिर्फ़ आपके बेहतरीन दरगुज़र की उम्मीद के सिवा कोई सहारा नहीं फिर बात यह है कि मुसलमान भी हूँ

फ़ज़ाइल-ए-रमज़ान

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रमज़ान की रात में एक मोमिन बंदा नमाज़ पढ़ता है जिस नमाज़ के हर सज्दे पर उसके लिए ढेड़ हज़ार नेकियाँ लिखी जाती हैं और उसके लिए जन्नत में सुर्ख़ याक़ूत का एक इतना बड़ा घर बनाया जाता है जिस घर के साठ हज़ार दरवाज़े होते हैं और हर दरवाज़े पर सोने का एक महल होता है। (यानी ऐसा कि साठ हज़ार महल बनाये जाते हैं) और पूरे महीने रमज़ान में किसी भी वक़्त चाहे रात हो चाहे दिन हो अगर सज्दा करे तो उसके लिए एक इतना बड़ा पेड़ मिलता है जिसके साए में सवार पाँच सौ साल तक दौड़ता रहे। —अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब, हिस्सा 2, पेज 93

अब्दुर्रज़्ज़ाक़ नामी आदमी को रज़्ज़ाक़ कहकर पुकारना गुनाह है

وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْ اَسْمَآئِهٖ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ٥

तर्जुमाः "और छोड़ दो उनको जो कजराह चलते हैं उसके नामों में, उन लोगों को उनके किए की ज़रूर सज़ा मिलेगी।" (सूरह आराफ़: 180)

अस्मा-ए-इलाहिय्या में तहरीफ़ या कज्रवी की कई सूरतें हो सकती हैं। वह सब इस आयत के मज़्मून में दाख़िल हैं। अव्वल यह कि अल्लाह तआला के लिए वह नाम इस्तेमाल किया जाये जो क़ुरआन व हदीस में अल्लाह तआला के लिए साबित नहीं,

उलमा-ए-हक़ का इत्तिफ़ाक़ है कि अल्लाह तआला के नाम और सिफ़ात में किसी को यह इख़्तियार नहीं कि जो चाहे नाम रख दे या जिस सिफ़त के साथ चाहे उसकी हम्द व सना करे बल्कि सिर्फ़ वही अल्फ़ाज़ होना ज़रूरी हैं जो क़ुरआन व सुन्नत में अल्लाह तआला के लिए बतौर नाम या सिफ़त के ज़िक्र किए गए हैं। जैसे अल्लाह तआला को करीम कह सकते हैं, सख़ी नहीं कह सकते, नूर कह सकते हैं अब्यज़ नहीं कह सकते, शाफ़ी कह सकते हैं, तबीब नहीं कह सकते, क्योंकि यह दूसरे अल्फ़ाज़ मन्क़ूल नहीं, अगरचे इन ही अल्फ़ाज़ के हम मअनी हैं।

दूसरी सूरत इल्हाद फ़िल् अस्मा की यह है कि अल्लाह के जो नाम क़ुरआन व सुन्नत से साबित हैं उनमें से किसी नाम को ना-मुनासिब समझकर छोड़ दे, उसका बे-अदबी होना ज़ाहिर है।

तीसरी सूरत यह है कि अल्लाह तआला के मख़्सूस नामों को किसी दूसरे शख़्स के लिए इस्तेमाल करे, मगर इसमें यह तफ़्सील है कि अस्मा-ए-हुस्ना में से कुछ नाम ऐसे भी हैं जिनको ख़ुद क़ुरआन व हदीस में दूसरे लोगों के लिए भी इस्तेमाल किया गया है और कुछ वह हैं जिनको सिवाए अल्लाह तआला के और किसी के लिए इस्तेमाल करना क़ुरआन व हदीस से साबित नहीं। तो जिन नामों का इस्तेमाल ग़ैरूल्लाह के लिए क़ुरआन व हदीस से साबित है, वह नाम तो औरों के लिए भी इस्तेमाल हो सकते हैं। जैसे रहीम, रशीद, अली, करीम, अज़ीज़ वग़ैरह और अस्मा-ए-हुस्ना में से वह नाम जिनका ग़ैरूल्लाह के लिए इस्तेमाल करना क़ुरआन व हदीस से साबित नहीं वह सिर्फ़ अल्लाह तआला के लिए मख़्सूस हैं उनको ग़ैरूललाह के लिए इस्तेमाल करना इलूहाद-ए-मज़्कूर में दाख़िल और नाजाइज़ व हराम है। जैसे रहमान,

सुब्हान, रज़्ज़ाक़, ख़ालिक़, ग़फ़्फ़ार, क़ुद्दूस वग़ैरह। फिर इन मख़्सूस नामों को ग़ैरूल्लाह के लिए इस्तमाल करना अगर किसी ग़लत अक़ीदे की बिना पर है कि उसको ही ख़ालिक़ या रज़्ज़ाक़ समझकर इन अल्फ़ाज़ से ख़िताब कर रहा है तब तो ऐसा कहना कुफ़्र है और अगर अक़ीदा ग़लत नहीं, सिर्फ़ बेफ़िक्री या बे-समझी से किसी शख़्स को ख़ालिक़, रज़्ज़ाक़, या रहमान, सुब्हान कह दिया तो यह अगरचे कुफ़्र नहीं मगर मुश्रिकाना अल्फ़ाज़ होने की वजह से गुनाह-ए-शदीद है, अफ़्सोस है कि आज कल आम मुसलमान इस ग़लती में मुब्तिला हैं, कुछ लोग तो वह हैं जिन्होंने इस्लामी नाम ही रखना छोड़ दिए, उनकी सूरत व सीरत से तो पहले भी मुसलमान समझना उनका मुश्किल था, नाम से पता चल जाता था, अब नये नाम अंग्रेज़ी तर्ज़ के रखे जाने लगे, लड़कियों के नाम ख़्वातीन-ए-इस्लाम के तर्ज़ के ख़िलाफ़ ख़दीजा, आईशा, फ़ातिमा के बजाये, नसीम, शमीम, शहनाज़, नजमा, परवीन होने लगे। इससे ज़्यादा अफ़्सोसनाक यह है कि जिन लोगों के इस्लामी नाम हैं अब्दुर्रहमान, अब्दुल ख़ालिक़, अब्दुर्रज़्ज़ाक़, अब्दुल क़ुद्दूस वग़ैरह उनमें तख़्फ़ीफ़ का यह ग़लत तरीक़ा इख़्तियार कर लिया गया कि सिर्फ़ आख़िरी लफ़्ज़ उनके नाम की जगह पुकारा जाता है, रहमान, ख़ालिक़, रज़्ज़ाक़, ग़फ़्फ़ार का ख़िताब इंसानों को दिया जा रहा है और इससे ज़्यादा ग़ज़ब की बात यह है कि क़ुदरतुल्लाह को अल्लाह साहब और क़ुदरत-ए-ख़ुदा को ख़ुदा साहब के नाम से पुकारा जाता है यह सब नाजायज़ व हराम और बड़े गुनाह हैं। जितनी मर्तबा यह लफ़्ज़ पुकारा जाता है, उतनी ही बड़े गुनाह का मुजरिम होता है और सुनने वाला भी गुनाह से ख़ाली नहीं रहता, यह गुनाह बे-लज़्ज़त और बे-फ़ायदा ऐसा है,

जिसको हमारे हज़ारों भाई अपने रात दिन का मश्ग़ला बनाए हुए हैं और कोई फ़िक्र नहीं करते कि इस ज़रा सी हरकत का अंजाम कितना ख़तरनाक है। जिसकी तरफ़ आयत-ए-मज़्कूरा के आख़िरी जुमले मे तंबीह फ़रमाई गई है। سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ यानी उनको अपने किए का बदला दिया जाएगा, इस बदले की तायीन नहीं की गई, इस इब्हाम से शदीद गुनाह की तरफ़ इशारा है।

जिन गुनाहों में कोई दुनयवी फ़ायदा या लज़्ज़त व राहत है उनको तो कोई कहने वाला यह भी कह सकता है कि मैं अपने ख़्वाहिश या ज़रूरत से मजबूर हो गया, मगर अफ़्सोस यह है कि आज मुसलमान ऐसे बहुत से फ़ुज़ूल गुनाहों में भी अपनी जहालत या ग़फ़लत से मुबतला नज़र आते हैं जिनमें न दुनिया का कोई फ़ायदा है न छोटे दर्जे की कोई राहत व लज़्ज़त है। वजह यह है कि हलाल व हराम और जायज़ व ना-जायज़ की तरफ़ ध्यान ही न रहा। **नऊज़ुबिल्लाह**

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 4, पेज 131

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बद्-दुआ का असर

رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ ۝ (سورۂ یونس:۸۸)

यानी ऐ मेरे परवरदिगार इनके अमवाल की सूरत बदल कर मस्ख़ व बेकार कर दे, हज़रत क़तादा रहमतुल्लाहि अलैहि का बयान है कि इस दुआ का असर यह ज़ाहिर हुआ कि क़ौम-ए-फ़िरऔन के तमाम ज़र व जवाहरात और नक़्द सिक्के और बाग़ों खेतों की सब पैदावार पत्थरों की शक्ल में तब्दील हो गई। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैहि के ज़माने में एक थैला पाया गया जिसमें फ़िरऔन के ज़माने की

चीज़ें थीं उनमें अन्डे और बादाम भी देखे गये जो बिल्कुल पत्थर थे, अइम्मा-ए-तफ़्सीर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने उनके तमाम फलों, तरकारियों और ग़ल्ले को पत्थर का बना दिया।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 4, पेज 562

नज़र-ए-बद का असर हक़ है (अच्छी नज़र का असर भी हक़ है)

रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसकी तस्दीक़ फ़रमाई है कि नज़र-ए-बद का असर हक़ है। एक हदीस में है कि नज़र-ए-बद एक इंसान को क़ब्र में और ऊँट को हंडिया में दाख़िल कर देती है इसीलिए रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिन चीज़ों से पनाह मांगी, और उम्मत को पनाह मांगने की तल्क़ीन फ़रमाई है उन में من كل عين لامة भी मज़्कूर है यानी मैं पनाह मांगता हूँ नज़र-ए-बद से। —क़ुर्तबी

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में अबू सहल बिन हुनैफ़ का वाक़िआ मारूफ़ है, कि उन्होंने एक मौक़े पर ग़ुस्ल करने के लिए कपड़े उतारे तो उनके सफ़ेद रंग, तन्दरूस्त बदन पर आमिर बिन रबीआ की नज़र पड़ गई, और उनकी ज़बान से निकला कि मैंने तो आज तक इतना हसीन बदन किसी का नहीं देखा, यह कहना था कि फ़ौरन सुहैन बिन हुनैफ़ को सख़्त बुख़ार चढ़ गया, रसूल-ए- करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब इसकी इत्तिला हुई तो आप सल्ल० ने यह इलाज तज्वीज़ किया कि आमिर बिन रबीआ को हुक्म दिया कि वह वुज़ू करें और वुज़ू का पानी किसी बर्तन में जमा करें, यह पानी सुहैल बिन हुनैफ़ के बदन पर डाला

जाये, ऐसा ही किया गया, तो फ़ौरन सुहैल बिन हुनैफ़ का बुख़ार उतर गया और वह बिल्कुल तन्दरूस्त होकर जिस मुहिम पर रसूल-ए-करीम सल्ल० के साथ जा रहे थे उस पर रवाना हो गये।

इस वाक़ए में आप सल्ल० ने आमिर बिन रबीआ को यह तंबीह भी फ़रमाई कि कोई शख़्स अपने भाई को क्यूँ क़त्ल करता है, जब उनका बदन तुम्हें ख़ूब नज़र आया तो तुमने बरकत की दुआ क्यों न की, नज़र का असर हो जाना हक़ है। इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि जब किसी शख़्स को किसी दूसरे की जान व माल में कोई अच्छी बात तअज्जुब अंगेज़ नज़र आए तो उसको चाहिए कि उसके वास्ते यह दुआ करे कि अल्लाह तआला इसमें बरकत अता फ़रमा दे। कुछ रिवायात में है कि مَا شَآءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ कहे इससे नज़र-ए-बद का असर जाता रहता है और यह भी मालूम हुआ कि किसी की नज़र-ए-बद किसी को लग जाये तो नज़र लगाने वाले के हाथ पाँव और चेहरे का ग़ुसाला उसके बदन पर डालना नज़र-ए-बद के असर को ख़त्म कर देता है। क़ुर्तबी ने फ़रमाया कि तमाम उलमा-ए-उम्मत अहल-ए- सुन्नत वल् जमाअत का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि नज़र-ए-बद लग जाना और उससे नुक़सान पहुँच जाना हक़ है।

नोटः– जब बुरी नज़र की तासीर है तो अच्छी नज़र की तासीर भी हो सकती है। औलिया-ए-अल्लाह ख़ासान-ए-ख़ुदा जब नज़र डालते हैं हिदायत आम हो जाती हैं। –मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 5, पेज 98

पाँव की तक्लीफ़ दूर करने का नब्वी नुस्ख़ा

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक जमाअत यमन भेजी और उनमें से एक सहाबी को उनका अमीर बना दिया, जिनकी उमर सबसे कम थी, वह लोग कई दिन तक वहाँ ही ठहरे और न जा सके इस जमाअत के एक आदमी से हुज़ूर सल्ल० की मुलाक़ात हुई। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमायाः ऐ फ़लाने! तुम्हें क्या हुआ? तुम अभी तक क्यूँ नहीं गए? उसने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! हमारे अमीर के पाँव में तक्लीफ़ है। चुनांचे आप उस अमीर के पास तशरीफ़ ले गये। और بِسْمِ اللّٰهِ وَ بِاللّٰهِ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّ مَا فِيْهَا، सात मर्तबा पढ़कर उस आदमी पर दम किया, वह आदमी (उसी वक़्त) ठीक हो गया। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 78

रोज़ी में बरकत के लिए नब्वी नुस्ख़ा

घर में दाख़िल होकर सलाम करे चाहे घर में कोई हो या न हो, फिर एक मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़े फिर एक मर्तबा सूरः इख़्लास पढ़े। —हिस्ने हसीन

परेशानी दूर करने के लिए नब्वी नुस्ख़ा

हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक रोज़ मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बाहर निकला इस तरह कि मेरा हाथ आप सल्ल० के हाथ में था। आप सल्ल० का

गुज़र एक ऐसे शख़्स पर हुआ जो बहुत शिकस्ता हाल और परेशान था। आप सल्ल० ने पूछा कि तुम्हारा यह हाल कैसे हो गया? उस शख़्स ने अर्ज़ किया कि बीमारी और तंगदस्ती ने मेरा यह हाल कर दिया। आप सल्ल० ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें चन्द कलिमात बतलाता हूँ, वह पढ़ोगे तो तुम्हारी बीमारी और तंगदस्ती जाती रहेगी। वह कलिमात यह हैं:

تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَمُوْتُ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا۔

इसके कुछ अर्से के बाद फिर आप सल्ल० उस तरफ़ तशरीफ़ ले गये फिर उस को अच्छे हाल में पाया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुशी का इज़हार फ़रमाया, उसने अर्ज़ किया कि जब से आप सल्ल० ने मुझे यह कलिमात बतलाये हैं मैं पाबंदी से इन कलिमात को पढ़ता हूँ। —मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 5, पेज 531

मुसलमानों के इज्तिमाई माल में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की एहतियात

1. हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैं अल्लाह के माल को (यानी मुसलमानों के इज्तिमाई माल को जो बैतुलमाल में होता है) अपने लिए यतीम के माल की तरह समझता हूँ अगर मुझे ज़रूरत न हो तो इसके इस्तेमाल से बचता हूँ और अगर मुझे ज़रूरत हो तो ज़रूरत के मुताबिक़ मुनासिब मिक्दार में इसे लेता हूँ। दूसरी रिवायत में यह है कि मैं अल्लाह के माल को अपने लिए यतीम के माल की तरह समझता हूँ। अल्लाह तआला ने

यतीम के माल के बारे में क़ुरआन मजीद में फ़रमाया है:

مَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ.

(سورۃ نساء: آیت ٦)

तर्जुमाः— जो शख़्स ग़नी हो सो वह अपने को बिल्कुल बचाये और जो शख़्स हाजतमन्द हो तो वह मुनासिब मिक़्दार से खाये।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 311

2. हज़रत बरा बिन मारूर रज़ियल्लाहु अन्हु के एक बेटे कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एक मर्तबा बीमार हुए, उनके लिए इलाज में शहद तज्वीज़ किया गया और उस वक़्त बैतुलमाल में शहद की एक कुप्पी मौजूद थी। (उन्होंने खुद इस शहद को न लिया बल्कि) मस्जिद में जाकर मिम्बर पर तशरीफ़ ले गये और फ़रमाया मुझे इलाज के लिए शहद की ज़रूरत है और शहद बैतुलमाल में मौजूद है अगर आप लोग इजाज़त दें तो मैं उसे ले लूँ वर्ना वह मेरे लिए हराम है, चुनांचे लोगों ने ख़ुशी से उनको इजाज़त दे दी। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 311

3. हज़रत इस्माईन बिन मुहम्मद बिन सअ्द बिन अबी वक़्क़ास रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बहरैन से मुश्क और अम्बर आया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः अल्लाह की क़सम! मैं चाहता हूँ कि मुझे कोई ऐसी औरत मिल जाये जो तौलना अच्छी तरह जानती हो और वह मुझे यह ख़ुश्बू तौल दे ताकि मैं इसे मुसलमानों में तक़्सीम कर सकूँ, उनकी बीवी हज़रत आतिका बिन्त ज़ैद बिन अम्र बिन नफ़ील रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा मैं तौलने में बड़ी माहिर हूँ लाइये मैं तौल दूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु

अन्हु ने फ़रमायाः नहीं! तुमसे नहीं तुलवाना। उन्होंने कहा क्यूँ? हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमायाः मुझे डर है कि इसे अपने हाथों से तराज़ू में रखोगी (यूँ कुछ न कुछ ख़ुश्बू तेरे हाथों को लग जाएगी और कनपटी और गर्दन की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया) और यूँ तू अपने कनपटी और गर्दन पर अपने हाथ फैरेगी इस तरह तुझे मुसलमानों से कुछ ज़्यादा ख़ुश्बू मिल जाएगी।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 315

4. हज़रत मालिक बिन औस बिन हदसान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास रोम के बादशाह का एक क़ासिद आया। हज़रत उमर रज़ि० की बीवी ने एक दीनार उधार लेकर इतर ख़रीदा और शीशीयों में डालकर इतर उस क़ासिद के हाथ रोम के बादशाह की बीवी को तोहफ़े में भेज दिया। जब यह क़ासिद बादशाह की बीवी के पास पहुँचा और उसे वह इतर दिया तो उसने वह शीशीयाँ ख़ाली करके जवाहरात से भर दीं और क़ासिद से कहा जाओ, यह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी को दे आओ। जब यह शीशीयाँ हज़रत उमर रज़ि० की बीवी के पास पहुँची तो उन्होंने उन शीशीयों से वह ज़वाहरात निकालकर एक बिछौने पर रख दिए। इतने में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु आ गये, और उन्होंने पूछा यह क्या है? उनकी बीवी ने उनको सारा क़िस्सा सुनाया। हज़रत उमर रज़ि० ने वह तमाम जवाहरात बेच दिये और उनकी क़ीमत में से सिर्फ़ एक दीनार अपनी बीवी को दिया और बाक़ी सारी रक़म मुसलमानों के लिए बैतुल माल में जमा करा दी।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 316

5. हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं एक मर्तबा मैंने कुछ ऊँट ख़रीदे और उनको बैतुलमाल की चरागाह में छोड़ आया जब वह ख़ूब मोटे हो गये तो मैं उन्हें बैचने के लिए बाज़ार में ले आया, इतने में हज़रत उमर रज़ि० भी बाज़ार में तशरीफ़ ले आये और उन्हें मोटे-मोटे ऊँट नज़र आये तो उन्होंने पूछा यह ऊँट किसके हैं? लोगों ने उन्हें बताया कि यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० के हैं तो फ़रमाने लगे: ऐ अब्दुल्लाह बिन उमर! वाह वाह अमीरूल मोमिनीन के बेटे के क्या कहने! मैं दौड़ता हुआ आया और मैंने अर्ज़ किया ऐ अमीरूल मोमिनीन! क्या बात है? आप ने फ़रमाया यह ऊँट कैसे हैं? मैंन अर्ज़ किया मैंने यह ऊँट ख़रीदे थे और बैतुलमाल की चरागाह में चरने के लिए भेजे थे। (अब मैं इनको बाज़ार ले आया हूँ) ताकि मैं दूसरे मुसलमानों की तरह इन्हें बेचकर नफ़ा हासिल करू। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया हाँ बैतुलमाल की चरागाह में लोग एक दूसरे को कहते होंगे अमीरूल मोमिनीन के बेटे के ऊँटों को चराओ और अमीरूल मोमिनीन के बेटे के ऊँटों को पानी पिलाओ (मेरे बेटे होने की वजह से तुम्हारे ऊँटों को ज़्यादा रिआयत की होगी इसलिए) ऐ अब्दुल्लाह बिन उमर! इन ऊँटों को बेचो और तुमने जितनी रक़म में ख़रीदे थे तो वह तुम ले लो और बाक़ी ज़्यादा रक़म मुसलमानों के बैतुलमाल में जमा करा दो।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 316

जिससे अल्लाह मोहब्बत करता है उसको यह दुआ पढ़ने की तौफ़ीक़ होती है

हज़रत बुरैदा अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ बुरैदा! जिसके साथ अल्लाह पाक ख़ैर का इरादा फ़रमाते हैं उसको (नीचे दिए) कलिमात सिखा देते हैं। वह कलिमात यह हैं:

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ ضَعِيْفٌ فَقَوِّفِى رِضَاكَ ضُعْفِىْ وَخُذْ اِلَى الْخَيْرِ بِنَاصِيَتِىْ وَاجْعَلِ الْاِسْلَامَ مُنْتَهٰى رِضَائِىْ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ ضَعِيْفٌ فَقَوِّنِىْ وَاِنِّىْ ذَلِيْلٌ فَاعِزَّنِىْ وَاِنِّىْ فَقِيْرٌ فَاغْنِنِىْ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

आगे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसको अल्लाह यह कलिमात सिखाता है, फिर वह मरते दम तक नहीं भूलता।

—इहयाउल उलूम, हिस्सा 1, पेज 277

क़ुबूलियत-ए-दुआ

हज़रत सईद बिन जुबैर रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं कि मुझे क़ुरआन करीम की एक ऐसी आयत मालूम है कि उसको पढ़कर आदमी जो दुआ करता है क़ुबूल होती है, फिर यह आयत तिलावत फ़रमाई:

قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ

تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ (سورۂ زمر:۴۶)

—क़ुरतबी, मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 7, पेज 566

मुशाजरात-ए-सहाबा के बारे में एक अहम हिदायत

हज़रत रबीअ इब्ने ख़सीम से किसी ने हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बारे में सवाल किया तो उन्होंने ने एक आह भरी और इस आयत की तिलावत फ़रमाई:

قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ
تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ (سورۂ الزمر:۴۶)

और फ़रमाया कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के आपसी झगड़ों के बारे में जब तुम्हारे दिल में कोई खटक हो तो यह आयत पढ़ लिया करो। रूहुल मआनी में इसको नक़ल करके फ़रमाया है कि यह अज़ीमुश-शान तालीम-ए-अदब है जिसको हमेशा याद रखना चाहिए। —मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 7, पेज 566

जुमे की नमाज़ के बाद गुनाह मआफ़ करवाने का एक नब्वी नुस्ख़ा

जो आदमी जुमे की नमाज़ के बाद 100 मर्तबा سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ पढ़ेगा तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इसके पढ़ने वाला के एक लाख गुनाह मआफ़ होंगे और उसके वालिदैन के चौबीस हज़ार गुनाह माफ़ होंगे।

—रवाह इब्नुस सुन्नी फ़ी अमलिल यौमि वल्-लैलति, पेज 234

वुज़ू के वक़्त की ख़ास दुआ

हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स वुज़ू करते वक़्त (नीचे दी गई) दुआ को पढ़ता है उसके लिए मग़्फ़िरत का एक पर्चा लिखकर और फिर उस पर मोहर लगाकर रख दिया जाता है। क़्यामत के दिन तक उसकी मोहर न तोड़ी जाएगी और वह मग़्फ़िरत का हुक्म बरक़रार रहेगा।

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ.

—हिस्ने हसीन, पेज 100

तीन बड़ी बीमारियों से बचने का नब्वी आसान नुस्ख़ा

हज़रत क़बीसा बिन मख़ारिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा क्यूँ आए हो? मैंने अर्ज़ किया मेरी उम्र ज़्यादा हो गई है, मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गई हैं यानी मैं बूढ़ा हो गया हूँ, मैं आपकी ख़िदमत में इसलिए हाज़िर हुआ हूँ ताकि मुझे आप वह चीज़ सिखाएं जिससे अल्लाह तआला मुझे नफ़ा दे, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया तुम जिस पत्थर व पेड़ और ढीले के पास से गुज़रे हो उसने तुम्हारे लिए दुआ-ए-मग़्फ़िरत की है। ऐ क़बीसा! सुबह की नमाज़ के बाद तीन दफ़ा سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ कहो इससे तुम अंधेपन, कौढ़ीपन और फ़ालिज से महफ़ूज़ रहोगे। ऐ क़बीसा! यह दुआ भी पढ़ा करोः

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِمَّا عِنْدَكَ وَاَفِضْ عَلَیَّ مِنْ فَضْلِكَ وَانْشُرْ عَلَیَّ مِنْ رَّحْمَتِكَ وَاَنْزِلْ عَلَیَّ مِنْ بَرَكَتِكَ.

"ऐ अल्लाह! मैं उन नेमतों में से मांगता हूँ जो तेरे पास हैं और अपने फ़ज़्ल की मुझ पर बारिश कर और अपनी रहमत मुझ पर फैला दे और अपनी बरकत मुझ पर नाज़िल कर दे।"
—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 179

शैतान का पेशाब इंसान के कान में

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाब नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने एक आदमी का ज़िक्र किया गया कि वह सुब्ह तक सोता ही रहता है नमाज़ के लिए भी नहीं उठता तो आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमायाः

ذَاكَ رَجُلٌ بَالَ الشَّيْطَانُ فِیْ اُذُنِهٖ

तर्जुमाः— यह ऐसा आदमी है जिसके कानों में शैतान पेशाब कर जाता है।
—तारीख़े जिन्नात व शयातीन, बुख़ारी व मुस्लिम, पेज 385

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ब्र में मुनकिर नकीर से सवाल करना

एक रिवायत में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम जिसने मुझे हक़ देकर भेजा है, मुझे हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने बताया है कि मुनकिर नकीर क़ब्र में तुम्हारे पास आएंगे और तुमसे सवाल करेंगे **मन रब्ब-क** ऐ उमर! तेरा रब कौन है? तो तुम जवाब में कहोगे मेरा रब अल्लाह

है। तुम बताओं तुम दोनों का रब कौन है? और (हज़रत मुहम्मद सल्ल०) मेरे नबी हैं। तुम दोनों के नबी कौन हैं? और इस्लाम मेरा दीन है तुम दोनों का दीन क्या है? इस पर वह दोनों कहेंगे, देखो क्या अजीब बात है हमें पता नहीं चल रहा है कि हमें तुम्हारे पास भेजा गया है या तुम्हें हमारे पास भेजा गया है।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 99

पाँच जुमले दुनिया के लिए पाँच जुमले आख़िरत के लिए

हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है जिसका मफ़्हूम यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस शख़्स ने (नीचे दिए गये) दस कलिमात को नमाज़-ए-फ़ज्र के वक़्त (पहले या बाद में) कहा तो वह शख़्स इन कलिमात को पढ़ते हुए ही अल्लाह तआला को उसके हक़ में काफ़ी और कलिमात पढ़ने पर अज्र व सवाब देते हुए पाएगा। पहले पाँच कलिमात दुनिया से मुतअल्लिक़ हैं और बाक़ी के पाँच आख़िरत के मुतअल्लिक़ हैं। दुनिया के पाँच यह हैं:

1. حَسْبِیَ اللّٰهُ لِدِیْنِیْ काफ़ी है मुझको अल्लाह, मेरे दीन के लिए।

2. حَسْبِیَ اللّٰهُ لِمَا اَهَمَّنِیْ काफ़ी है मुझको अल्लाह, मेरे कुल फ़िक्र के लिए।

3. حَسْبِیَ اللّٰهُ لِمَنْ بَغٰی عَلَیَّ काफ़ी है मुझको अल्लाह, उस शख़्स के लिए जो मुझ पर ज़्यादती करे।

4. حَسْبِیَ اللّٰهُ لِمَنْ حَسَدَنِیْ काफ़ी है मुझको अल्लाह, उस शख़्स के लिए जो मुझ पर हसद करे।

5. حَسْبِيَ اللّٰهُ لِمَنْ كَادَنِيْ بِسُوْءٍ काफ़ी है मुझको अल्लाह, उस शख़्स के लिए कि धोखा और फ़रेब दे मुझे बुराई के साथ।

आख़िरत के पाँच यह हैं।

1. حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الْمَوْتِ काफ़ी है मुझको अल्लाह मौत के वक़्त।

2. حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الْمَسْأَلَةِ فِي الْقَبْرِ काफ़ी है मुझको अल्लाह, क़ब्र में सवाल के वक़्त

3. حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الْمِيْزَانِ काफ़ी है मुझको अल्लाह, मीज़ान के पास (यानी उस तराज़ू के पास जिसमें नामा-ए-आमाल का वज़न होगा)

4. حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الصِّرَاطِ काफ़ी है मुझको अल्लाह, पुल-ए-सिरात के पास।

5. حَسْبِيَ اللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيْبُ काफ़ी है मुझको अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, मैंने उसी पर तवक्कुल किया और मैं उसी की तरफ़ रूजू होता हूँ।

—दुर्रे-ए-मंसूर, हिस्सा 2, पेज 103

क़ैद से छुटकारे का नब्वी नुस्ख़ा

सीरत-ए-इब्ने इस्हाक़ में है कि हज़रत औफ़ अशजअी रज़ियल्लाहु अन्हु के लड़के हज़रत सालिम रज़ियल्लाहु अन्हु जब काफ़िरों की क़ैद में थे तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उनसे कहला दो कि ब-कसरत لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ पढ़ता रहे। एक दिन अचानक बैठे-बैंठे उनकी क़ैद खुल गई और यह वहाँ से निकल भागे उन लोगों की एक ऊँटनी हाथ लग गई, जिस पर सवार हो लिए, रास्ते में उनके ऊँटों के रेवड़ मिले, उन्हें अपने

साथ हंका लाये। वह लोग पीछे दौड़े लेकिन यह किसी के हाथ न लगे, सीधे अपने घर आये और दरवाज़े पर खड़े होकर आवाज़ दी, बाप ने आवाज़ सुनकर फ़रमाया, ख़ुदा की क़सम यह तो सालिम है, माँ ने कहा हाय वह कहाँ वह तो क़ैद व बंद की मुसीबतें झेल रहा होगा। अब दोनों माँ-बाप और ख़ादिम दरवाज़े की तरफ़ दौड़े खोला देखा तो उनके लड़के हज़रत सालिम रज़ियल्लाहु अन्हु हैं और तमाम अंगनाई ऊँटों से भरी पड़ी है। पूछा कि यह ऊँट कैसे हैं? उन्होंने वाक़िआ बयान किया तो फ़रमाया ठहरो मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उनकी बाबत मस्अला दर्याफ़्त कर आऊं। हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने फ़रमाया यह सब तुम्हारा माल है जो चाहो करो। —तफ़सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 5, पेज 376

मसाईब से निजात और मक़ासिद के हुसूल का मुजर्रब नुस्ख़ा

हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने औफ़ बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु को मुसीबत से निजात और मक़्सद हासिल करने के लिए यह तल्क़ीन फ़रमाई कि कस्रत के साथ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ पढ़ा करें।

हज़रत मुजद्दिद अलिफ़ सानी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया कि दीनी व दुनियावी हर क़िस्म के मसाइब और मज़र्रतों से बचने और मुनाफ़ा व मक़ासिद को हासिल करने के लिए इस कलिमे की कस्रत बहुत मुर्जरब अमल है और इस कस्रत की मिक़्दार हज़रत मुजद्दिद रहमतुल्लाहि अलैहि ने यह बतलाई है कि रोज़ाना पाँच सौ मर्तबा यह कलिमा لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ पढ़ा करें और

सौ-सौ मर्तबा दुरूद शरीफ़ इसके अव्वल व आख़िर में पढ़कर अपने मक़सद के लिए दुआ किया करें।

—तफ़्सीर मज़हरी, मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 8, पेज 488

चौथे आसमान के फ़रिश्ते को मदद के लिए हरकत में लाने वाली दुआ

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक सहाबी की कुन्नियत अबू मुअल्लिक़ थी और वह ताजिर थे अपने और दूसरों के माल से तिजारत किया करते थे और वह बहुत इबादत गुज़ार और परहेज़गार थे एक मर्तबा वह सफ़र में गये। उन्हें रास्ते में एक हथियारों से मुसल्लह डाकू मिला उसने कहा अपना सारा सामान यहाँ रख दो मैं तुम्हें क़त्ल करूंगा। उस सहाबी ने कहा तुम्हें माल लेना है वह ले लो, डाकू ने कहा नहीं मैं तो तुम्हारा ख़ून बहाना चाहता हूँ। उस सहाबी ने कहा मुझे ज़रा मोहलत दो, मैं नमाज़ पढ़ लूँ। उसने कहा जितनी जल्दी पढ़नी है पढ़ लो। चुनांचे उन्होंने वुज़ू करके नमाज़ पढ़ी और यह दुआ तीन मर्तबा मांगी:

يَا وَدُوْدُ يَا ذَا الْعَرْشِ الْمَجِيْدِ يَا فَعَّالاً لِّمَا يُرِيْدُ أَسْئَلُكَ بِعِزَّتِكَ الَّتِيْ لَا تُرَامُ وَمُلْكِكَ الَّذِىْ لَا يُضَامُ وَبِنُوْرِكَ الَّذِىْ مَلَا أَرْكَانَ عَرْشِكَ اَنْ تَكْفِيَنِيْ شَرَّ هٰذَا اللِّصِّ يَا مُغِيْثُ أَغِثْنِيْ.

तो अचानक एक घुड़सवार आया जिसके हाथ में एक नेज़ा था जिसे उठाकर उसने अपने घोड़े के कानों के दर्मियान बुलंद किया हुआ था उसने उस डाकू को नेज़ा मारकर क़त्ल कर दिया फिर

वह उस ताजिर की तरफ़ मुतवज्जह हुआ। ताजिर ने पूछा तुम कौन हो? अल्लाह ने तुम्हारे ज़रिए से मेरी मदद फ़रमाई है उसने कहा मैं चौथे आसमान का फ़रिश्ता हूँ जब आप ने (पहली मर्तबा) दुआ की तो मैंने आसमान के दरवाज़ों की खड़खड़ाहट सुनी जब आपने दोबारा दुआ की तो किसी ने कहा यह एक मुसीबत ज़दा की आवाज़ है। मैंने अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ किया कि उस डाकू को क़त्ल करने का काम मेरे ज़िम्मे कर दें फिर उस फ़रिश्ते ने कहा आप को ख़ुशख़बरी हो कि जो आदमी भी वुज़ू करके चार रकअत नमाज़ पढ़े और फिर यह दुआ मांगे, उसकी दुआ ज़रूर क़ुबूल होगी, चाहे वह मुसीबत ज़दा हो या न हो।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 176

तिलावत क़ुरआन के वक़्त ख़ामोश होकर सुनना वाजिब है ख़ामोश न रहना कुफ़्फ़ार की आदत है

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ.

ऊपर दी गई आयत से मालूम हुआ कि क़ुरआन में ख़लल डालने की नीयत से शोर व गुल करना तो कुफ़्र की अलामत है इससे यह भी मालूम हुआ कि ख़ामोश होकर सुनना वाजिब और ईमान की अलामत है। आजकल रेडियो पर तिलावत-ए-क़ुरआन पाक ने ऐसी सूरत इख़्तियार कर ली है कि हर होटल और मज्मा के मवाक़े में रेडियो खोला जाता है, जिसमें क़ुरआन की तिलावत हो रही हो और होटल वाले ख़ुद अपने धंधों में लगे रहते हैं और

खाने पीने वाले अपने शग़ल में, इसकी सूरत वह बन जाती है जो कुफ़्फ़ार की अलामत थी, अल्लाह तआला मुसलमानों को हिदायत फ़रमाएं कि या तो ऐसे मौक़े में तिलावत-ए-क़ुरआन के लिए न खोलें अगर खोलना है और बरकत हासिल करना है तो चंद मिनट सब काम बंद करके ख़ुद भी उस तरफ़ मुतवज्जह होकर सुनें दूसरों को भी उसका मौक़ा दें। —मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 7, पेज 647

अंडा हलाल है इसकी दलील

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब जुमे का दिन होता है तो फ़रिश्ते मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े हो जाते हैं और शुरू में आने वालों के नाम एक के बाद एक लिखते हैं और अव्वल वक़्त दौपहर में आने वाले की मिसाल उस शख़्स की सी है जो अल्लाह के हुज़ूर में ऊँट की क़ुरबानी पेश करता है फिर उसके बाद दूसरे नम्बर पर आने वाले की मिसाल उस शख़्स की सी है जो गाय पेश करता है, फिर उसके बाद आने वाले की मिसाल मेंढा पेश करने वाले की, उसके बाद आने वाले की मिसाल मुर्ग़ी पेश करने की, उसके बाद आने वाले की मिसाल अंडा पेश करने वाले की, फिर जब इमाम ख़ुतबा के लिए मिम्बर की तरफ़ जाता है तो यह फ़रिश्ते अपने लिखने के दफ़्तर लपेट लेते हैं और ख़ुत्बा सुनने में शरीक हो जाते हैं।

—सही बुख़ारी व सही मुस्लिम

पुराने हों तो ऐसे हों

हज़रत मआज़ इब्ने जबल रज़ियल्लाहु अन्हु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र-ए-मुबारक पर खड़े रो रहे थे। हज़रत मआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा क्यों रो रहे हो? फ़रमाया मैंने हदीस सुनी थी अल्लाह पाक ऐसे लोगों को पसंद करता है जो मुत्तक़ी हों और छुपे हुए हों ऐसे कि अगर मजलिस में आवें तो कोई उनको न पहचाने और अगर मजलिस में न हों तो कोई न ढूंडे कि फ़्लां साहब कहाँ गये, मजलिस में क्यूँ न आए, उन के दिल हिदायत के चिराग़ हैं, हर फ़ित्ने से महफ़ूज़ रहेंगे, पुराने हों तो ऐसे हों काम ख़ूब करें, तअल्लुक़ मअल्लाह बहुत हों मगर छुपे हुए हों ज़मीन पर ज़्यादा लोग न पहचानते हों आसमान पर सब जानते हों।

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا مِنْهُمْ وَمَعَهُمْ

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 785

अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और ख़ालिद बिन वलीद के दर्मियान नोक-झोंक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोनों को निभा लिया आप सल्ल० ने दोनों की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने शिकायत की आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कि ख़ालिद हमेशा मुझसे तू-तू मैं-मैं करते रहते हैं। आप सल्ल० ने ख़ालिद से फ़रमाया ख़ालिद! अब्दुर्रहमान बिन औफ़ को कुछ न कहो इसलिए कि यह बदरी हैं, ख़ालिद रज़ियल्लाहु

अन्हु फ़रमाने लगे कि हज़रत यह अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु मुझे भी कोसते रहते हैं। आप सल्ल० ने इब्ने औफ़ से फ़रमाया कि ख़ालिद को कुछ न कहो इसलिए कि यह अल्लाह की तलवार है।

फ़ायदाः– आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोनों की तारीफ़ कर दी, दोनों को निभा लिया, साथियों की आपस में तू-तू मैं-मैं हो जाये, ज़िम्मेदार दोनों की तारीफ़ करे और दोनों को निभा ले।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 484

पुराने क़ुरबानियाँ देने वाले साथियों की औलाद की रिआयत और उनके साथ हुस्न-ए-सुलूक ज़रूरी है, वर्ना न नफ़िल क़ुबूल होगी न फ़र्ज़

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दुनिया से तशरीफ़ ले जाने का वक़्त क़रीब आया तो हज़रात-ए-सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने फ़रमायाः मुहाजिरीन में से जो साबिक़ीन-ए-अव्वलीन हैं मैं तुम्हें उनके साथ और उनके बाद उनके बेटों के साथ अच्छे सुलूक की वसीयत करता हूँ अगर तुम इस वसीयत पर अमल नहीं करोगे तो तुम्हारा न नफ़्ली अमल क़ुबूल होगा और न फ़र्ज़ अमल क़ुबूल होगा। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 485

फ़ायदाः दीन का काम करने वाले साथियों की औलाद की रिआयत ज़रूरी है। सबसे अच्छा सुलूक यह है कि उनको भी

दावत के काम में मोहब्बत से चलाया जाए और ख़ैरख़्वाही का मआमला किया जाए।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शलवार इस्तेमाल की है इसकी दलील

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चार दिरहम में एक शलवार ख़रीदी। मैंने पूछा या रसूलुल्लाह! आप यह शलवार पहनेंगे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमायाः हाँ दिन रात सफ़र व हज़र में पहनूँगा, क्योंकि मुझे सतर ढांकने का हुक्म दिया गया है और मुझे इस से ज़्यादा सतर ढांकने वाली कोई चीज़ नहीं मिली। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 707

वह ख़ुशनसीब सहाबी जिनका इंतक़ाल मदीना मुनव्वरा में हुआ फ़रिश्ते उनके जनाज़े को लेकर तबूक पहुंचे, और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जनाज़े की नमाज़ तबूक में पढ़ी

मआविया इब्ने मुआविया लैसी अंसारी का इंतक़ाल मदीने में हुआ, हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम 70 हज़ार फ़रिश्तों को लेकर मदीना आये उनका जनाज़ा लेकर तबूक रवाना हुए, आप सल्ल० ने और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने जनाज़े की नमाज़ तबूक में पढ़ी और जनाज़ा वापस मदीना लाया गया और तदफ़ीन बक़ीअ में हुई। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम से

पूछा यह ऐेज़ाज़ क्यों मिला? फ़रमाया यह कसरत से सूरः इख़्लास पढ़ा करते थे इसलिए यह ऐेज़ाज़ मिला है।

—तफ़्सीर राज़ी फी तफ़्सीर क़ुर हुवल्लाहु अहद

मय्यत पर रोने वाली को अज़ाब

नौहा करने वाली ने अगर अपनी मौत से पहले तौबा न की, तो उसे क़्यामत के दिन गंधक का कुर्ता और खुजली का दुपट्टा पहनाया जाएगा। मुसलिम में भी यह हदीस है और रिवायत है कि वह जन्नत दोज़ख़ के दर्मियान खड़ी की जाएगी, गंधक का कुर्ता होगा और मुँह पर आग खेल रही होगी।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 3, पेज 85

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की दुआ

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जब इरादा करते कि किसी मुर्दे को ज़िन्दा करें तो दो रकअत नमाज़ पढ़ते, पहली रकअत में تَبَارَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ...الخ और दूसरी रकअत में الٓمٓ تَنْزِيْلُ पढ़ते फिर अल्लाह की हम्द व सना करते। फिर यह सात अस्मा-ए-बारी पढ़ते "يَا قَدِيْمُ، يَا خَفِىُّ يَا دَائِمُ يَا فَرْدُ، يَا وِتْرُ، يَا اَحَدُ، يَا صَمَدُ" और अगर कोई सख़्त परेशानी लाहक़ हो जाती तो यह सात नाम लेकर दुआ करते।

"يَا حَىُّ، يَا قَيُّوْمُ، يَا اَللّٰهُ، يَا رَحْمَانُ، يَا ذَالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ، يَا نُوْرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، يَا رَبِّ" यह ज़बरदस्त असर वाले नाम हैं।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 2, पेज 36

मर्दों और औरतों के ग़ुस्से और लड़ाई का फ़र्क़

मर्दों के मिज़ाज़ में हरारत होती है इस वास्ते उनकी नाराज़गी

और ग़ुस्से का असर मारने, पीटने, चिल्लाने वग़ैरह की सूरत में ज़ाहिर हो जाता है और औरतों की फ़ितरत में हया व बुरूदत रखी गई है इस वास्ते इस नाराज़गी का असर ज़ाहिर नहीं होता वर्ना हक़ीक़त में इस नाराज़गी में औरतें मर्दों से कुछ कम नहीं बल्कि ज़्यादा हैं पस उनको ऐसे मौक़ों पर भी ग़ुस्सा आ जाता है जहाँ मर्दों को नहीं आता क्योंकि उनकी अक़्ल में नुक़्सान है तो उनके ग़ुस्से के मौक़े भी ज़्यादा हैं, इसके अलावा चीख़ने चिल्लाने की निस्बत मीठा ग़ुस्सा देर पा होता है और चीख़ने-चिल्लाने वालों का ग़ुस्सा उबाल की तरह से उठकर दब जाता है और मीठा ग़ुस्सा दिल के अन्दर जमा रहता है उसको कीना कहते हैं, कीना का मन्शा ग़ुस्सा है। सो एक ऐब तो वह ग़ुस्सा था ओर दूसरा ऐब यह कीना है तो मीठे ग़ुस्से में दो ऐब हैं और कीने में एक ऐब और है कि जब ग़ुस्सा निकला नहीं तो उसका ख़ुमार दिल में भरा रहता है और बात बहाना और रंजीदगियाँ पैदा होती चली जाती हैं तो कीना सिर्फ़ एक गुनाह नहीं है बल्कि बहुत से गुनाहों की जड़ है और कीना मीठे ग़ुस्से में होता है और मीठा ग़ुस्सा औरतों में ज़्यादा होता है तो औरतों का ग़ुस्सा हज़ारों गुनाहों का सबब है, मर्दों का ग़ुस्सा ऐसा नहीं है। मर्दों का ग़ुस्सा जोशीला और औरतों का ग़ुस्सा मीठा है। —ग़वाइलुल ग़ज़ब, पेज 22, तोहफ़ा ज़ौजैन, पेज 71

औरतें तीन क़िस्म की होती हैं

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया औरतें तीन तरह की होती हैं:

1. एक औरत तो वह है जो पाकदामन, मुसलमान, नर्म तबीयत, मोहब्बत करने वाली, ज़्यादा बच्चे देने वाली हो और

ज़माने के फ़ैशन के ख़िलाफ़ अपने घर वालों की मदद करती हो (सादा रहती हो) और घर वालों को छोड़कर ज़माने के फ़ैशन पर न चलती हो लेकिन तुम्हें ऐसी औरतें बहुत कम मिलेंगी।

2. दूसरी वह औरत है जो ख़ाविन्द से बहुत मुतालिबा करती हो और बच्चे जन्ने के अलावा उसका कोई और काम नहीं।

3. तीसरी वह औरत है जो ख़ाविन्द के गले का तौक़ हो और जूँ की तरह चिपकी हुई हो (यानी बद्-अख़्लाक़ भी हो और उसका महर भी ज़्यादा हो जिसकी वजह से उसका ख़ाविन्द उसे छोड़ न सकता हो)। ऐसी औरत को अल्लाह तआला जिसकी गर्दन में चाहते हैं डाल देते हैं और जब चाहते हैं उसकी गर्दन से उतार लेते हैं। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 562

ग़रीब साथी का सदक़ा क़ुबूल करना

हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी एक घोड़ी लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए जिसका नाम शिबला था और उन्हें अपने माल में से कोई चीज़ उस घोड़ी से ज़्यादा मेहबूब नहीं थी और अर्ज़ किया कि यह घोड़ी अल्लाह के लिए सदक़ा है। हुज़ूर सल्ल० ने उसे क़ुबूल फ़रमाकर उनके बेटे हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु को सवारी के लिए दे दी। (हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० को यह अच्छा न लगा कि उनकी सदक़ा की हुई घोड़ी उनके ही बेटे को मिल गई यूँ सदक़ा की हुई चीज़ अपने ही घर वापस आ गई)। हुज़ूर सल्ल० को इस नागवारी का असर उनके चेहरे में महसूस हुआ तो इर्शाद फ़रमायाः अल्लाह तुम्हारे इस सदक़े को क़ुबूल कर चुके हैं। (लिहाज़ा अब यह घोड़ी जिसे भी मिल जाये तुम्हारे अज्र में कोई

कमी नहीं आएगी)।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 212

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दे रिब्बा रज़ियल्लाहु अन्हु जिन्होंने ख़्वाब में (फ़रिश्ते को) अज़ान देते हुए देखा था वह फ़रमाते हैं कि उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मेरा यह बाग़ सद्क़ा है, मैं अल्लाह और उसके रसूल को दे रहा हूँ वह जहाँ चाहें ख़र्च कर दें। जब उनके वालदैन को मालूम हुआ तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह! हमारा गुज़ारा तो इसी बाग़ पर हो रहा था हमारे बेटे ने इसे सद्क़ा कर दिया। हुज़ूर सल्ल० ने वह बाग़ उन दोनों को दे दिया। फिर जब उन दोनों का इंतक़ाल हो गया तो फिर वह बाग़ उनके बेटे हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु को विरासत में मिल गया और वारिस बनकर उस बाग़ के मालिक हो गये।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 215

दुनिया के हर अनार में जन्नत क एक दाना है

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने अनार के एक दाने को उठाया और उसे खा लिया उनसे कहा गया आप ने यह क्यूँ क्या? फ़रमाया: मुझे यह बात पहुंची है कि ज़मीन के हर अनार में जन्नत के दानों में से एक दाना डाला जाता है शायद कि यह वही हो।

—तिबरानी, ब-सनद सही

फ़ायदा:– इस इर्शाद को आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मरफ़ूअन भी रिवायत किया गया है। —तिब्बे नब्वी, कन्ज़ुल उम्माल

—जन्नत के हसीन मनाज़िर, मौलाना इम्दादुल्लाह अनवर, पेज 558

नींद अगर न आये तो यह दुआ पढ़े

मुसनद अहमद में है कि हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दुआ सिखाते थे कि नींद उचाट हो जाने के मर्ज़ को दूर करने के लिए हम सोते वक़्त पढ़ा करें:

بِسْمِ اللّٰهِ اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهٖ وَعِقَابِهٖ وَمِنْ شَرِّ عِبَادِهٖ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَنْ يَّحْضُرُوْنِ۔

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का दस्तूर था कि अपनी औलाद में से जो होशियार होते उन को यह दुआ सिखा दिया करते और जो छोटे नासमझ होते याद न कर सकते उनके गले में इस दुआ को लिखकर लटका देते।

अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और नसाई में भी यह हदीस है। इमाम तिर्मिज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि इसे हसन ग़रीब बतलाते हैं।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 3, पेज 469

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु को पाँच नसीहतें

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पाँच बातों की वसीयत की है: फ़रमाया 1. ऐ अनस! कामिल वुज़ू करो तुम्हारी उम्र बढ़ेगी। 2. जो मेरा उम्मती मिले सलाम करो नेकियाँ बढ़ेंगी। 3. घर में सलाम करके जाया करो घर की ख़ैरियत बढ़ेगी। 4. ज़ुहा की नमाज़

पढ़ते रहो तुम से अगले लोग जो ख़ुदा वाले बन गयें थे उनका यही तरीक़ा था। 5. ऐ अनस! छोटों पर रहम कर, बड़ों की इज़्ज़त व तौक़ीर कर तो क़यामत के दिन मेरा साथी होगा।—तफ़सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 3, पेज 528

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के नाम हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का ख़त

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को ख़त लिखा, और उसमें दर्ख़ास्त की कि आप मुझे कुछ नसीहत और वसीयत फ़रमाएं लेकिन बात मुख़्तसर और जामेअ हो, बहुत ज़्यादा न हो तो हज़रत उम्मुल मोमिनीन ने उनको यह मुख़्तसर ख़त लिखाः—

सलाम हो तुम पर, अम्मा बाद! मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है·आप फ़रमाते थे जो कोई अल्लाह को राज़ी करना चाहता है, लोगों को अपने से ख़फ़ा करके, तो अल्लाह मुस्तग़्ना कर देगा उसको लोगों की फ़िक्र और बार-बरदारी से, और ख़ुदा उसके लिए काफ़ी हो जाएगा, और जो कोई बन्दों को राज़ी करना चाहेगा, अल्लाह को नाराज़ करके तो अल्लाह उसको सुपुर्द कर देगा, लोगों के। वस्सलाम

—जामेअ तिर्मिज़ी, मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 2, पेज 162

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को तीन नसीहतें

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सुनो अबू बक्र! तीन चीज़ें बिल्कुल बरहक़ हैं। 1. जिस पर कोई ज़ुल्म किया जाये और वह उससे चश्म पौशी करे तो ज़रूर अल्लाह तआला उसे इज़्ज़त देगा और उसकी मदद करेगा। 2. जो शख़्स सुलूक और एहसान का दरवाज़ा खोलेगा और सिला रहमी के इरादे से लोगों को देता रहेगा अल्लाह तआला उसे बरकत देगा और ज़्यादती अता फ़रमाएगा। 3. और जो शख़्स माल बढ़ाने के लिए सवाल का दरवाज़ा खोलेगा इससे उस से मांगना पड़ेगा, अल्लाह तआला उसके हाँ बे-बरकती कर देगा और कमी में ही उसे मुब्तिला रखेगा। यह रिवायत अबू दाऊद में भी है।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 5, पेज 23

दुआ की क़ुबूलियत के लिए चन्द कलिमात

हज़रत सईद बिन मुसय्यब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा मस्जिद में आराम कर रहा था अचानक ग़ैब से आवाज़ आईः ऐ सईद! (नीचे दिये गये) इन कलिमात को पढ़कर तू जो दुआ मांगेगा अल्लाह तआला क़ुबूल करेगा।

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ مَلِيْكٌ مُّقْتَدِرٌ مَا تَشَاءُ مِنْ اَمْرٍ يَكُوْنُ.

फ़ायदाः– हज़रत सईद बिन मुसय्यब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इन जुम्लों के बाद मैंने जो दुआ मांगी वह क़ुबूल हुई है।

–रूहुल मआनी फ़ी तफ़्सीर **मलेकिन मुक़्तदिर**

बन्दा मुहम्मद यूनुस पालनपारी अपने लिए नीचे दी गई दुआ मांगता है।

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ مَلِيْكٌ مُّقْتَدِرٌ مَا تَشَاءُ مِنْ اَمْرٍ يَكُوْنُ فَاَسْعِدْنِىْ فِى الدَّارَيْنِ وَكُنْ لِّىْ وَلَا تَكُنْ عَلَىَّ وَاٰتِنِىْ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ. —

ऊपर दी गई दुआ अल्लाह तआला मेरे लिए, मेरी बीवी बच्चों के लिए और पूरी उम्मत के लिए क़ुबूल फ़रमा दे। आमीन

لِاَنَّهٗ هُوَ مَلِيْكٌ مُّقْتَدِرٌ.

बदबख़्ती की चार अलामतें

हदीस शरीफ़ में है कि बदबख़्ती की चार अलामतें हैं:

1. आँखों से आँसू का जारी न होना।
2. दिल की सख़्ती।
3. तूल-ए-अमल यानी लम्बी उम्मीदें बांधना।
4. दुनिया की हिर्स। –मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 5, पेज 279

तब्लीग़ वालों को शब-ए-जुमा की पाबंदी करना

तालीम व तब्लीग़ के लिए किसी दिन या रात मख़्सूस कर

लेना, बिद्अत नहीं, न इसका इल्तिज़ाम बिद्अत है। दीनी मदारिस में अस्बाक़ के औक़ात मुक़र्रर हैं जिनकी पाबंदी इल्तिज़ाम के साथ की जाती है उस पर किसी को बिद्अत का शुबा नही हुआ।

—आपके मसाइल और उनका हल, हिस्सा 8, पेज 275

हासिल-ए-तसव्वुफ़

हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने इर्शाद फ़रमाया कि तमाम सलूक और तसव्वुफ़ का हासिल सिर्फ़ यह है कि ताअत के वक़्त हिम्मत करके ताअत को बजा लाये और मअसियत के तक़ाज़े के वक़्त हिम्मत करके मअसियत से रूक जाये इससे तअल्लुक़ अल्लाह के लिए पैदा होता है, महफ़ूज़ रहता है, तरक़्क़ी करता है।

—कश्कुल मअरिफ़त, पेज 523

पीरान-ए-पीर हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाहि अलैहि ने एक मुरीद को ख़िलाफ़त दी और फ़रमाया कि फ़्लां मुक़ाम पर जाकर दीन की तब्लीग़ व इशाअत करो, चलते चलते मुरीद ने अर्ज़ किया कि कोई नसीहत फ़रमा दीजिए। शेख़ ने फ़रमाया कि दो बातों की नसीहत करता हूँ।

1. कभी ख़ुदाई का दावा मत करना।

2. नबूव्वत का दावा न करना।

वह हैरान हुआ कि मैं सालों साल आप की सोहबत में रहा क्या अब भी यह एहतिमाल और ख़तरा था कि मैं ख़ुदाई और नबूव्वत का दावा करूंगा? आप ने फ़रमाया कि ख़ुदाई और नबूव्वत के दावे का मतलब समझ लो फिर बात करो। ख़ुदा की ज़ात वह है कि जो कह दे वह अटल होता है इससे इख़्तिलाफ़

नहीं हो सकता। जो इंसान अपनी राये को इस दर्जा पेश करे कि वह अटल हो, उसके ख़िलाफ़ न हो सके तो उसको ख़ुदाई का दावा होगा। और नबी वह है जो ज़बान से फ़रमा दे वह सच्ची बात है कभी झूठ नहीं हो सकता जो शख़्स अपने क़ौल के बारे में कहे कि यह इतनी सच्ची बात है कि इसके ख़िलाफ़ हो ही नहीं सकता वह दर-पर्दा नबूव्वत का मुद्दई है कि मेरी बात ग़लत हो ही नहीं सकती हालांकि यह उसकी ज़ाती राय है।

—हिकायतों का गुलदस्ता, मौलाना अस्लम शैख़ूपुरी, पेज 92

अपनी बीवी के साथ अच्छा सुलूक करना

"قال النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم ما من رجل اخذ بید امراتہ یراودھا الا کتب اللّٰہ لہ خمس حسنات فان عانقھا فعشر حسنات، فان قبلھا عشرون، فان اتاھا کان خیرا من الدنیا وما فیھا، فاذا قام لیغتسل لم یمر المآء علٰی شیء عن جسدہ الا محا عنہ سینۃ ورفع لہ درجۃ ویعطٰی بغسلہ خیرًا من الدنیا وما فیھا وان اللّٰہ تعالٰی بہ الملائکۃ یقول انظرو الٰی عبدہ قام فی لیلۃ قر باردۃ یغتسل من الجنابۃ یتیفن بانی ربہ اشھدکم انی غفرت لہ.

(البرکۃ صفحہ ٥٦،لابی عبداللہ بن محمد بن عبدالرحمن، ٧٨٢ھ)

तर्जुमाः हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जिस शख़्स ने अपनी बीवी का हाथ पकड़ा मोहब्बत के तौर पर, अल्लाह तआला उसके लिए पाँच नेकियाँ लिखते हैं, अगर उससे मुआनिक़ा किया तो दस

नेकियाँ, अगर बोसा लिया तो बीस नेकियाँ फिर अगर क़ुर्बत करे तो दुनिया व माफ़ीहा से बेहतर है। तो जब फ़ारिग़ होकर ग़ुसल करे तो उस वक़्त बदन की जिस जगह से पानी बहे उससे उसके गुनाह मआफ़ होते हैं और उसका दर्जा बुलंद होता है और उसको उस ग़ुस्ल पर दुनिया व माफ़ीहा से ज़्यादा अता किया जाता है और अल्लाह तआला उसकी वजह से फ़रिश्तों पर फ़ख़्र करते हैं और कहते हैं कि देखो मेरे इस बंदे को, ठंडी रात में उठा जनाबत से पाक होने के लिए, और यक़ीन करता है कि मैं उसका रब हूँ। ऐ फ़रिश्तों! तुम गवाह रहो मैंने इसको मआफ़ कर दिया।"

हर हाल में अल्लाह पर ऐतमाद

इमाम फ़ख़रूद्दीन राज़ी शायद सूरः यूसुफ़ में एक जगह तहरीर फ़रमाते हैं: मैंने अपनी तमाम उम्र में यह तजुर्बा किया है कि इंसान अपने किसी काम में जब ग़ैरूल्लाह पर भरोसा करता है और ऐतिमाद करता है तो यह उसके लिए मेहनत व मुशक़्क़त और सख़्ती का सबब बन जाता है और जब हक़ तआला पर भरोसा करता है और मख़्लूक़ की तरफ़ निगाह नहीं करता तो यह काम ज़रूर बिलू-ज़रूर निहायत हसन और ख़ूबी के साथ पूरा हो जाता है।

यह तजुर्बा इब्तिदाए उम्र से लेकर आज तक (जबकि मेरी उम्र 57 साल की है) बराबर करता रहा और अब मेरे दिल में यह बात रासिख़ है कि इंसान के लिए बजुज़ इसके चारा नहीं है कि अपने

हर काम में हक़ तआला के फ़ज़्ल व करम और एहसान पर निगाह रखे और दूसरी चीज़ पर हरगिज़ भरोसा न करे।

—हयात-ए-फख्र, पेज 38

बैअत का सबूत

وعن عوف بن مالك الاشجعي ﷺ قال كنا النبي صلى الله عليه وسلم تسعة اوثمانية فقال الا تبا يعون رسول الله صلى الله عليه وسلم فبسطنا ايدينا وقلنا علام نبابعك يا رسول الله قال على ان تعبدوا الله تعالىٰ ولا تشركوا به شيئًا وتصلوا الصلوات الخمس وتسمعوا وتطيعوا واسر كلمة خفيفة و قال لا تسئلن الناس شيئًا ولقد رأيت بعض اولئك النفر يسقط سوط احدهم فما يسئل احدًا ينا وله اياه.

तर्जुमाः हज़रत औफ़ बिन मालिक अश्जई रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, वह फ़रमाते हैं कि हम आठ या नौ सहाबी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मजलिस में थे। आप सल्ल० ने फ़रमायाः क्या तुम अल्लाह के रसूल सल्ल० से बैअत न करोगे। तो हमने अपने हाथ फैला दिए और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप से किस बात पर बैअत करें? फ़रमायाः इस बात पर कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न करो और पाँचों नमाज़ों को अदा करो और (इताअत के जज़्बे से) सुनो और मानो और एक छोटी सी बात पस्त आवाज़ से फ़रमाई। लोगों से किसी चीज़ का सवाल न करना। मैंने बैअत करने वालों में से कुछ लोगों को देखा कि अगर उनमें से किसी का कोड़ा गिर जाता तो वह किसी को उसके उठाने के लिए न कहते क्योंकि यह बैअत कर चुके थे कि

किसी से कोई सवाल न करेंगे।

وعن عبادة بن الصامت ﷺ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم وحوله عصابة من اصحابه با يعونى على ان لا تشركوا بالله ولا تسرقوا.

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने इर्द गिर्द सहाबा की एक जमाअत से फ़रमाया। मुझ से इस बात पर बैअत करो कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराओ और न ही चोरी करो।

—मुतफ़क़ अलैह

इसी हदीस से मालूम हुआ कि इस्लाम व जिहाद के अलावा तर्क-ए-मआसी व इल्तिज़ाम-ए-ताअत के लिए भी बैअत होती थी और यही बैअत-ए-तरीक़त है जो सूफ़िया-ए-किराम में मअरूफ़ है पस उसका इनकार जहालत और नावाक़फ़ी है।

—हक़ीक़ते तसव्वुफ़, पेज 9

दुआ की वजह से बच्चा का ज़िन्दा हो जाना

قال انس ﷺ كنا فى الصفة عند رسول الله صلى الله عليه وسلم فاتته امرأة مهاجرة ومعها ابن لها قد بلغ فاضاف المرأة الى النساء و اضاف ابنها الينا فلم يلبث ان اصاب وباء المدينة فمرض اياماً ثم قبض فغمضه النبى صلى الله عليه وسلم وامره بجهازه. فلما اردنا ان نغسله قال يا انس ائت امه فاعلمها فاعلمتها قال فجائت حتى جلست عند قدميه فاخذت ابهاما ثم قالت. اللّٰهم انى اسلمت لك طوعا و خالفت الاوثان زهدًا وهاجرت لك رغبة فو الله ما انقضى كلامها حتىٰ حرّك قدميه والقى الثوب عن وجهه وعاش حتى قبض رسول الله وحتى

هلکت امه. (البدایه والنهایه، جلد۲، صفحه ۱۵۴)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मजलिस में सुफ़्फ़ा में बैठे हुए थे कि एक मुहाजिरा औरत अपने बच्चे को लिए हुए आई जो कि सन्-ए-बलूग़ को पहुंच चुका था। आप सल्ल० ने औरत को तो (मेहमान बनाकर) औरतों की तरफ़ भेज दिया और उसके बच्चे को अपने साथ रखा, कुछ दिन ही गुज़रे थे कि वह बच्चा मदीने में वबा की ज़द में आ गया। वह कुछ दिन बीमार रह कर इंतिक़ाल कर गया। आप सल्ल० ने उसकी आँखें बन्द कीं और उसकी तज्हीज़ व तक्फ़ीन का हुक्म फ़रमाया जब हमने उसको ग़ुसल देना चाहा तो आप सल्ल० ने फ़रमायाः ऐ अनस! इसकी माँ को जाकर ख़बर कर दो तो मैंने उसको ख़बर कर दी। वह फ़रमाते हैं कि वह आई और उसके क़दमों के पास बैठ गई, उसका एक अंगूठा पकड़ा और फिर कहने लगी। ऐ अल्लाह! मैं तुझ पर ख़ुशी से इस्लाम लाई और मैं ने बे रग़बती इख़्तियार करते हुए बुतों की (पूजा की) मुख़ालिफ़त की और शौक़ से तेरी राह मे हिजरत की (हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि) ख़ुदा की क़सम! उसकी बात पूरी भी न होने पाई थी कि उसके क़दमों ने हरकत की और उसने अपने चेहरे से कफ़न हटाया। और वह आप सल्ल० के दुनिया से रहलत फ़रमाने और उसकी माँ के इंतक़ाल के बाद तक ज़िन्दा रहा।

महूरल हूरिल ईन (हूरों की महरें)

رفعه الثعلبی من حدیث انس ﷺ ان النبی صلی اللّٰه علیه وسلم قال

لانس المساجد مهور الحور العين اخراج القيامة من المسجد مهور الحور العين.

وعن ابی هریرة ﷺ ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال مهور الحور العین قبضات التمرو فلق الخبز ذکره الثعلبی ایضاً.

وقال ابو هریرة ﷺ یتزوج احدکم فلانة بنت فلان بالمال الکثیر ویدع الحور العین باللقمة التمرو الکسرة - یروی عن ثابت انه قال کان ابی من القوامین لله فی سواد اللیل قال رأیت ذات لیلة فی منامی امرأة لا تشبه النساء فقلت لها من انت؟ فقالت حوراء امة الله فقلت لها زوجنی نفسك فقالت اخطبنی من عند ربی وامهرنی فقلت وما مهرك؟ فقالت طول التهجد وانشدت — واحد من ذلك الاشعار

وقم اذا اللیل بداوجهه وصم نهارا فهو من مهرها

(التذکرہ للقرطبی، جلد۲، صفحہ۴۷۸)

सअ़्लबी ने इस हदीस को हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस से मरफ़ूअन ज़िक्र किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अनस रज़ि० से फ़रमाया कि मसाजिद हूर-ए-ऐन का महर है। मसाजिद से कूड़ा करकट निकालना (साफ़ करना) हूर-ए-ऐन का महर है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्ल० ने फ़रमायाः हूर-ए-ऐन का महर मुट्ठी भर खजूर और रोटी का टुकड़ा है (यानी सदक़ा व ख़ैरात हूर-ए-ऐन का महर है)।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि तुममें से कोई फ़्लां की बेटी फ़्लां से माल की कस्रत की वजह से शादी करता है और लुक़्मा और खजूर और रोटी के टुकड़े की वजह से

हूर-ए-ऐन को छोड़ बैठता है। (यानी इन चीज़ों का सदक़ा करना हूर-ए-ऐन का महर है)

हज़रत साबित रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है वह फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद रात की तारीकी में अल्लाह (की रज़ा) के लिए इबादत करते थे। वह फ़रमाते हैं कि एक रात मैंने अपने ख़्वाब में एक औरत को देखा जो (दूसरी) औरतों से अलग थी। मैंने उससे पूछा कि तुम कौन हो? तो वह कहने लगी, हूर, अल्लाह की बांदी। मैंने उससे कहा मुझसे शादी कर लो तो वह कहने लगी कि मेरे परवरदिगार के पास मेरे लिए पैग़ाम भेजो और मेरा महर अदा करो। मैंने पूछा कि तुम्हारा महर क्या चीज़ है? तो वह कहने लगी लम्बे तहज्जुद और उसने शेर पढ़े। उन अश्आर में से एक शेर का तर्जुमा यह है:

और जब रात (की स्याही) नमूदार हो तो क़्याम कर (उठ जा)
और दिन को रोज़ा रख कि यह उसका महर है
और बिला शुब्ह रोटी का चूरा हूर-ए-ऐन का महर है।

मोमिन के झूठे मे शिफ़ा है, यह हदीस नहीं

قال النجم ليس بحديث، نعم رواه الدار قطنى فى الافراد عن ابن عباس بلفظ من التواضع ان يشرب الرجل من سور اخيه...... انه حديث كذب على رسول الله صلى الله عليه وسلم وهكذاريق المؤمن شفاء – (كشف الخفاء، جلد١، صفحہ ٤٥٨)

मोमिन आदमी के झूठे में शिफ़ा है। नजम ने कहा है कि यह

हदीस नहीं इसको दार क़ुतनी ने अफ़राद में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से इन अल्फ़ाज़ के साथ रिवायत किया है कि यह बात तवाज़ुअ में से है कि आदमी अपने भाई का झूठा पी ले। इसको हदीस कहना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर झूठ है और इसी तरह मोमिन आदमी का थूक शिफ़ा है। (हदीस नहीं)

ريق المؤمن شفاء ليس بحديث ولكن معناه صحيح ففى الصحيحين كان النبى صلى الله عليه وسلم – اذا اشتكى الانسان الشى اليه او كانت به قرحة او جرح قال باصبعه يعنى سبا به بالارض ثم رفعها لهم. وقال بسم الله تربة ارضنا بريقة بعضنا يشفى سقيمنا باذن ربنا. (كشف الخفاء، جلد۱، صفحه۴۳۶)

मोमिन आदमी के थूक में शिफ़ा है यह हदीस नहीं लेकिन मानी के ऐतिबार से यह सही है। सहीहैन में है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जब कोई शख़्स किसी (मर्ज़) की शिकायत करता या उसे फोड़ा या ज़ख़्म होता तो आप सल्ल० अपनी उंगली-ए-मुबारक यानी शहादत की उंगली को ज़मीन से लगाते फिर उसको उन पर लगाते और फ़रमाते: "मैं अल्लाह के नाम से बरकत हासिल करता हूँ। यह हमारे ज़मीन की मिट्टी है जो हममें से किसी के थूक में मिली हुई है, ताकि हमारे बीमार को हमारे रब के हुक्म से शिफ़ा हो जाये।"

नाख़ून काटने का तरीक़ा

नाख़ून काटने का कोई ख़ास तरीक़ा या कोई ख़ास दिन आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मंक़ूल नहीं है। साहिबे दुर्रे मुख़्तार जुमे के दिन ख़ास तरीक़े पर नाख़ून काटने की दो रिवायतें नक़ल करके लिखते हैं:

"قال الحافظ ابن حجر انه يستحب كيفما احتاج إليه، ولم يثبت في كيفيته شيء ولا في تعيين يوم له عن النبي صلى الله عليه وسلم." (شامی،جلد۵،صفحہ۲۶۰)

हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी और इब्ने दक़ीक़ुल अब्द ने फ़रमायाः नाख़ून तराशने में कोई ख़ास कैफ़ियत और कोई ख़ास दिन बिल्-यक़ीन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मन्क़ूल नहीं है। लिहाज़ा ऊपर दिए गये तरीक़े के मुस्तहब होने का ऐतिक़ाद जाइज़ नहीं है।

—बज़्लुल मज्हूद, हिस्सा 1, पेज 33

कुछ जानवर जन्नत में जाएंगे

अल्लामा सय्यद अहमद हमवी रहमतुल्लाहि अलैहि शरह अल्-शिबाह वल् नज़ाइर, पेज 395 में ब-हवाला शरह शरअतुल इस्लाम हज़रत मक़ातल रहमतुल्लाहि अलैह से नक़ल किया गया है कि दस जानवर जन्नत में जाएंगे।

1. नाक़ा-ए-मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।
2. नाक़ा-ए-सालेह अलैहिस्सलाम।
3. अजल-ए-इब्राहीम अलैहिस्सलाम।
4. कब्श-ए-इस्माईल अलैहिस्सलाम।
5. बक़रा-ए-मूसा अलैहिस्सलाम।
6. हूत-ए-यूनुस अलैहिस्सलाम।
7. हिमार-ए-उज़ैर अलैहिस्सलाम।
8. नमला-ए-सुलैमान अलैहिस्सलाम।
9. हुद हुद सुलैमान अलैहिस्सलाम।

10. कल्ब-ए-अस्हाब-ए-कैफ़।

मिश्कातुल अनवार में लिखा है कि इनका भी हश्र होगा।

—फ़तावा महमूदिया, हिस्सा 5, पेज 372

मिन्नत मानने की शराइत

क़ुरआन मजीद ख़तम करवाने की मिन्नत लाज़िम नहीं होती। शरअन मिन्नत जाइज़ है मगर मिन्नत मानने की चन्द शर्तें हैं। 1. अल्लाह तआला के नाम की मिन्नत मानी जाए, ग़ैरूल्लाह के नाम की मिन्नत जाइज़ नहीं बल्कि गुनाह है। 2. मिन्नत सिर्फ़ इबादत के काम की सही है जो काम इबादत का नहीं है उसकी मिन्नत भी सही नहीं। 3. इबादत भी ऐसी हो कि इस तरह की इबादत कभी फ़र्ज़ या वाजिब नहीं है जैसे नमाज़, रोज़ा, हज, क़ुर्बानी वग़ैरह ऐसी इबादत कि इसकी जिन्स कभी फ़र्ज़ नहीं इसकी मिन्नत भी सही नहीं चूनांचे क़ुरआन ख़्वानी की मिन्नत मानी हो तो वह लाज़िम नहीं होती। —आपके मसाइल और उनका हल, हिस्सा 3, पेज 419

खाना खाने से पहले और बाद में हाथ धोने की फ़ज़ीलत

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० कहते हैं किः

"قرأت فی التوراة: ان بركة الطعام الوضوء بعده، فذكرت ذلك للنبی صلی الله عليه وسلم فقال رسول الله صلی الله عليه وسلم: بركة الطعام الوضوء قبله والوضوء بعده."

तर्जुमाः— मैंने तौरात में पढ़ा हे कि खाने की बरकत, खाने

के बाद हाथ धोना है, तो यह बात मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़िक्र की तो रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि खाने की बरकत खाने से पहले हाथ धोना है और खाने के बाद हाथ धोना है।

अहादीस-ए-सहीहा की तादाद

इमाम जाफ़र मुम्मद बिन अल्-हुसैन अल्-बग़दादी ने किताबुत तमईज़ में इमाम सुफ़ियान अस्-सौरी, इमाम शाबा, इमाम यह्या, इमाम अब्दुर्रहमान बिन महदी और इमाम अहमद बिन हन्बल का मुत्तफ़िक़ा फ़ैसला नक़ल किया है:

ان جملة الاحاديث المسنده عن النبی صلی اللّٰہ علیه وسلم یعنی الصحیحه بلا تکرار اربعة الاف واربع مائة. (توضیح الافکار، صفحہ ۶۳)

चुनांचे अरबाब-ए-सिहाह ने भी मज़कूरा तादाद के क़रीब क़रीब अपनी किताबों में अहादीस की नक़ल की तख़्रीज की है।

—रिसाला दारूल उलूम, पेज 10, अक्तूबर 1986 ई०

जुमे की नमाज़ ज़ुहर जमाअत से पढ़ना

मस्ला:– अगर चन्द आदमी सफ़र में हों तो नमाज़-ए-ज़ुहर जुमे के रोज़ जमाअत के साथ पढ़ सकते हैं और उनको (अगर नमाज़ जुमा न पढ़ें तो) ज़ुहर बा-जमाअत ही अदा करना चाहिए।

—फ़तावा दारूल उलूम, पेज 58, पुरानी जिल्द अव्वल, मसाइल-ए-सफ़र, पेज 69

स्टील या लोहे की चैन का इस्तेमाल करना

घड़ी की गिरफ़्त के लिए चमड़ा मौजूद है और वह दूसरी चीज़ों के मुक़ाबले में ज़्यादा मुनासिब भी है इसलिए एहतियात इसमें है कि चमड़े का पट्टा इस्तेमाल किया जाए।

—फ़तावा रहीमिया, हिस्सा 6, पेज 279

अल्‌कोहल का इस्तेमाल

सवालः— यहाँ मग़रिबी मुमालिक में अक्सर दवाओं में एक फ़ीसद से लेकर पच्चीस फ़ीसद तक "अल्-कोहल" शामिल होता है। इस क़िस्म की दवाएँ अक्सर नज़ला, खांसी, गले की ख़राश जैसी मामूली बीमारियों में इस्तेमाल होती हैं और तक़रीबन 90 फ़ीसद दवाओं में अल्-कोहल ज़रूर शामिल होता है। अब मौजूदा दौर में अल्-कोहल से पाक दवाओं को तलाश करना मुश्किल, बल्कि नामुमकिन हो चुका है इन हालात में ऐसी दवाओं के इस्तेमाल के बारे में शरअन क्या हुक्म है?

जवाबः— अल्-कोहल मिली हुई दवाओं का मस्‌ला अब सिर्फ़ मग़रिबी मुमालिक तक महदूद नहीं रहा बल्कि इस्लामी मुमालिक समेत तमाम मुमालिक में आज यह मस्‌ला पेश आ रहा है।

इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैह के नज़दीक तो इस मस्‌ले का हल आसान है इसलिए कि इमाम अबू हनीफ़ा रह० और इमाम यूसुफ़ रह० के नज़दीक अंगूर और खजूर के अलावा दूसरी चीज़ों से बनाई हुई शराब को बतौर दवा के हुसूल ताक़त

के लिए इतनी मिक़दार में इस्तेमाल करना जायज़ है जिस मिक्दार से नशा पैदा न होता हो। —फ़त्हुल क़दीर, हिस्सा 8, पेज 16

दूसरी तरफ़ दवाओं में जो "अल्-कोहल" मिलाया जाता है उसकी बड़ी मिक्दार अंगूर और खजूर के अलावा दूसरी चीज़ें जैसे चीड़, गंधक, शहद, शीरा, दाना, जौ वग़ैरह से हासिल की जाती है। लिहाज़ा दवाओं में इस्तेमाल होने वाली "अल्-कोहल" अगर अंगूर और खजूर के अलावा दूसरी चीज़ों से हासिल किया गया है तो इमाम अबू हनीफ़ा रह० और इमाम अबू यूसुफ़ रह० के नज़दीक इस दवा का इस्तेमाल जाइज़ है बशतर्के वह हद-ए-सकर तक न पहुंचे और इलाज की ज़रूरत के लिए उन दोनों इमामों के मस्लक पर अमल करने की गुंजाइश है। और अगर "अल्-कोहल" अंगूर और खजूर ही से हासिल किया गया है तो फिर दवा के इस्तेमाल नाजायज़ है अलबत्ता अगर माहिर डाक्टर यह कहे कि इस मर्ज़ की इसके अलावा कोई और दवा नहीं है तो इस सूरत में इसके इस्तेमाल की गुंजाइश है इसलिए कि इस हालत में हंफ़िया के नज़दीक तदावी बिल-मुहरिम जायज़ है।

—सिलसिला फ़िक़्ही मक़ालात, मौलाना तक़ी उसमानी

मिस्वाक के बारे मे इब्रतनाक वाक़िआ

अल्लामा इब्ने कसीर ने इब्ने ख़लक़ान रह० के हवाले से अपनी शोहरा आफ़ाक़ किताब (अल्-बिदाया वन्-निहाया, हिस्सा 13, पेज 207) में ज़िक्र किया है कि एक शख़्स अबू सलामा नामी जो बस्रा मुक़ाम का बाशिंदा और निहायत बेबाक और बे-ग़ैरत था उसके सामने मिस्वाक के फ़ज़ाइल व मनाक़िब और महासिन का ज़िक्र आया तो उसने अज़राहे ग़ैज़ व ग़ज़ब क़सम खाकर कहा कि मैं मिस्वाक

को अपनी सुरीन में इस्तेमाल करूंगा। चुनांचे उसने अपनी सुरीन में मिस्वाक घुमाकर अपनी क़सम को पूरा करके दिखाया। और इस तरह मिस्वाक के साथ सख़्त बे-हुरमती और बे-अदबी का मामला किया जिसकी पादाश में क़ुदरती तौर पर ठीक 9 महीने बाद उसके पेट में तक्लीफ़ शुरू हुई और फिर एक (बद्-शक्ल) जानवर जंगली चूहे जैसा उसके पेट से पैदा हुआ जिसके एक बालिश्त चार उंगली की दुम, चार पैर, मछली जैसा सर और चार दाँत बाहर की तरफ़ निकले हुए थे पैदा होते ही यह जानवर तीन बार चिल्लाया जिस पर उसकी बच्ची आगे बढ़ी और सर कुचलकर उस जानवर को हलाक कर दिया और तीसरे दिन यह शख़्स भी मर गया। —फ़ज़ाइल मिस्वाक, पेज 50,

मुसन्निफ़ हज़रत मौलाना अतूहर हुसैन साहब रहमतुल्लाहि अलैह

कुर्सी पर बैठकर बयान करने की दलील

قال حدثنا ثيبان بن فروخ – قال ابور فاعة انتهيت الى النبى صلى اللّٰه عليه وسلم وهو يخطب قال فقلت يا رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم جاء يسئل وترك خطبة حتّٰى انتهى الٰى فاتى بكرسى حسبت قوا ائمه حديدا قال فقعد عليه رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم وجعل يعلمنى مما علمه اللّٰه ثم اتى خطبته فاتم آخرها.

(اخرجه مسلم فى كتاب الجمعه، صفحه ٢٨٧)

शैबान बिन फ़रोख़ रिवायत करते हैं कि अबू रिफ़ाआ ने फ़रमाया कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मजलिस में पहुंचा, आप सल्ल० ख़ुत्बा फ़रमा रहे थे। वह फ़रमाते हैं कि

मैंने अर्ज़ किया। ऐ अल्लाह के रसूल! परदेसी आदमी है अपने दीन के बारे में पूछने आया है उसे नहीं मालूम कि दीन क्या है। फ़रमाते है कि आप सल्ल० मेरी तरफ़ मुतवज्जा हुए और अपना खुतबा छोड़ दिया यहां तक तक मुझ तक पहुंच गये तो एक कुर्सी लाई गई जिसके पाए मेरे ख़्याल से लोहे के थे फ़रमाते हैं कि उस पर रसूलल्लाह सल्ल० बैठ गये और उस इल्म से जो अल्लाह ने आप सल्ल० को सिखाया था मुझे सिखाने लगे तालीम देने लगे, फिर अपना खुत्बा पूरा किया।

49 करोड़ की रिवायत

﴿۱﴾ مَن غـرا بنفسه فی سبیل اللّٰہ فله بکل درهم سبعمائة الف درهم ثم تلا هذه الآية و اللّٰہ يضاعف لمن يشاء. (ابن ماجه، صفحہ۲۰۳، حیاۃ الصحابہ، جلد۱، صفحہ۵۶۱)

1. जो शख़्स अल्लाह के रास्ते में अपनी जान के ज़रिए जिहाद करे तो उसे हर दिरहम के बदले में सात लाख के बराबर अज्र मिलेगा। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी बात की ताईद में यह आयत तिलावत फ़रमाई और अल्लाह जिसके लिए चाहते हैं अज्र को दोगुना कर देते हैं।

﴿۲﴾ واخـرج ابـو داؤد من حديث سهل بن معاذ عن ابيه عن النبی صلی اللّٰـه عـليه وسلم قال: ان الصلاة والصيام والذكر يصاعف على النفقة فی سبيل اللّٰہ بسبعمائة ضعف.

2. अबू दाऊद में सह्ल बिन मआज़ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि वह आप सल्ल० ने फ़रमाया बिलाशुब्ह अल्लाह के रास्ते में नमाज़, रोज़ा और ज़िक्ररूल्लाह, अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के मुक़ाबले में 700 गुना बढ़ा दिया जाता है।

सात लाख को सात सौ से ज़रब देने से 49 करोड़ बनता है।

बा-वुज़ू मरने वाला भी शहीद है

﴿١﴾ من بار على الوضوء مات شهيدًا. (رواه مسلم)

﴿٢﴾ من بات طاهر أبات معه في شعاره ملك يستغفر له يقول اللّهم اغفر بعبدك فلان فانه بات طاهرًا. (رواه مسلم)

1. जो शख़्स रात को बा-वुज़ू सोये फिर (इस हालत में) उसको मौत आ जाये तो वह शहीद मरा।

2. जो शख़्स रात को बा-वुज़ू सोता है तो एक फ़रिश्ता सारी रात उससे जुड़ा रहता है उसके लिए इन कलिमात से इस्तिग़फ़ार करता रहता है कि ऐ अल्लाह! अपने फ़लाँ बंदे की मग़्फ़िरत कर दे कि वह रात बा-वुज़ू सोया है।

एक मुजर्रब अमल

यह अमल हज़रत मौलाना मुहम्मद इलियास साहब कांधलवी रहमतुल्लाहि अलैहि के जद्दे अम्जद और शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रह० के शर्गिद-ए-ख़ास हज़रत मुफ़्ती इलाही बख़्श रह० का बहुत बार का आज़माया हुआ निहायत मुजर्रब अमल है, इसके पढ़ने से ख़ुदा तआला की मारिफ़त और उसकी मुहब्बत नसीब होती है जिसके नतीजे में नेकी करना और गुनाह से बचना बहुत आसान हो जाता है। ख़ुदा तआला की इताअत इबादत और नेकियाँ ब-कसरत करने के लिए अल्लाह तआला की मुहब्बत का दिल में पैदा होना पहले बहुत ज़रूरी है। इसी अज़ीम मक़सद और बलाओं के दूर करने के और हाजतों को पूरा करने में भी इस

अमल को हज़रत अक़दस मौलाना अल्-हाज मुफ़्ती इफ़्तिख़ारूल हसन साहब कांधलवी मद्दज़िल्लहुल आली ख़लीफ़ा हज़रत मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर साहब रायपूरी रह० बड़ा मुजर्रब अमल बतलाते हैं और ज़रूरतमन्द लोगों को पढ़ने के लिए हिदायत फ़रमाते हैं।

तर्कीब-ए-अमलः– किसी भी महीने का चाँद देखने के बाद पहले जुमे से मुस्तक़िल सात दिन तक नीचे लिखी हुई तर्कीब के मुताबिक़ रोज़ाना दिन में या रात में एक वक़्त और एक जगह मुक़र्रर करके पाबंदी के साथ अल्लाह तआला के इन मुबारक नामों का वज़ीफ़ा पढ़े अगर किसी मजबूरी से जगह और वक़्त की तब्दीली हो जाये तो कोई हर्ज नहीं होगा।

नोटः– अगर किसी को मजबूरी की वजह से यह दुआ अरबी में याद न हो सके तो इसका उर्दू तर्जुमा ही पढ़ ले इंशा अल्लाह महरूम न रहेगा।

जुमे के दिन	يَا اَللّٰهُ يَا هُوَ	1000 मर्तबा
हफ़्ते के दिन	يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ	1000 मर्तबा
इतवार के दिन	يَا وَاحِدُ يَا اَحَدُ	1000 मर्तबा
पीर के दिन	يَا صَمَدُ يَا وِتْرُ	1000 मर्तबा
मंगल के दिन	يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ	1000 मर्तबा
बुध के दिन	يَا حَنَّانُ يَا مَنَّانُ	1000 मर्तबा
जुमेरात के दिन	يَا ذُوالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ	1000 मर्तबा

जुमे के दिन नमाज-ए-जुमा के बाद कम से कम तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ेः

"ऐ अल्लाह! मै आप से दर्ख़्वासत करता हूँ इन अज़ीम और

मुबारक नामों के वास्ते से कि आप रहमत भेजिए, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर और आप की पाकीज़ा आल पर और सवाल करता हूँ यह कि मुझे शामिल फ़रमा ले अपने मुक़र्रब और नेक बंदों में। मुझे यक़ीन की दौलत अता फ़रमा दुनियावी मर्ज़ों, मुसीबतों और आख़िरत के अज़ाब से अपनी अमान में रख, ज़ालिमों और दुश्मनों से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा, उनके दिलों को फेर दे, उनको शर से हटाकर ख़ैर की तौफ़ीक़ इनायत करना आप ही के इख़्तियार में है, या अल्लाह मेरी इस दर्ख़्वास्त को क़ुबूल फ़रमा, यह मेरी सिर्फ़ मेरी एक कोशिश है, भरोसा और तवक्कुल आप ही पर है।" —बयान कर्दा: हज़रत मौलाना इफ़्तिख़ारूल हसन साहब कांधलवी

एक दुआ जो सात हज़ार मर्तबा तस्बीह पढ़ने से बेहतर है

हज़रत मआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है कि फ़ज्र की नमाज़ के बाद रसूल-ए-पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मजलिस शरीफ़ में इल्मी मुज़ाकिरा होता था, आप सल्ल० सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को तालीम दिया करते थे मगर हज़रत मआज़ रज़ि० शुरू में जमाअत का सलाम फेरकर घर तशरीफ़ ले जाते थे। एक मर्तबा फ़रमायाः ऐ मआज़! सुब्ह को हमारी मज्लिस में नहीं आते? हज़रत मआज़ रज़ि० ने यह कहकर मअज़िरत फ़रमा दी कि सुब्ह को मेरा सात हज़ार तस्बीह पढ़ने का मामूल है अगर कहीं बैठ जाता तो फिर मेरा वह मामूल पूरा नहीं हो पाता।

आप सल्ल० ने फ़रमायाः क्या मैं तुम्हें ऐसी दुआ न बतला दूँ

जिसका एक मर्तबा पढ़ लेना सात सौ हज़ार तस्बीह से बेहतर हो। अर्ज़ किया ज़रूर इर्शाद फ़रमाएं। इर्शाद फ़रमायाः

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ عَدَدَ رِضَاهُ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ زِنَةَ عَرْشِهٖ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ عَدَدَ خَلْقِهٖ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مِلْاَءَ سَمَاوَاتِهٖ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مِلَاءَ اَرْضِهٖ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مِلَاءَ مَا بَيْنَهُمَا
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مِثْلَ ذَالِكَ مَعَهُ
وَاللّٰهُ اَكْبَرُ مِثْلَ ذَالِكَ مَعَهُ
وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِثْلَ ذَالِكَ مَعَهُ

इस दुआ का एक मर्तबा पढ़ लेना ऐसा है जैसे सात हज़ार तस्बीह पढ़ ली हों। हज़रत शैख़ नूरूल्लाह मर्क़दहु ने अपनी साहबज़ादियों को यह दुआ याद करा दी थी कि यह पढ़ा करो मैंने शैख़ से एक मर्तबा पूछा कि यह क्या है? फ़रमायाः ठहर जाओ! जब मैं ऊपर (अपने कुतुबख़ाना में) जाऊं तो मेरे साथ चलना, गये तो कन्ज़ुल उम्माल उठाई और फ़रमाया कि फ़्लां पेज खोलो।

—कन्ज़ुल आमाल, हिस्सा 1, पेज 442

तकब्बुर के एक जुमले ने ख़ूबसूरत को बद्सूरत और पस्त क़द कर दिया

नौफ़ल इब्ने माहक़ कहते हैं कि नजरान की मस्जिद में, मैंने एक नौजवान को देखा बड़ा लम्बा, भरपूर जवानी के नशे में चूर, घटे हुए बदन वाला बांका तिरछा, अच्छे रंग रौग़न वाला, ख़ूबसूरत शक्ल में निगाहें जमाकर उसके जमाल व कमाल को देखने लगा तो उसने कहा क्या देख रहे हो? मैंने कहा आपके हुस्न व जमाल का मुशाहिदा कर रहा हूँ और तअज्जुब हो रहा है। उसने जवाब दिया तू ही क्या ख़ुद अल्लह तआला को भी तअज्जुब हो रहा है।

नौफ़ल कहते हैं कि इस कलिमे के कहते ही वह घटने लगा और उसक रंग रूप उड़ने लगा और क़द पस्त होने लगा यहाँ तक कि एक बालिश्त के बराबर के रह गया, जिसे उसका कोई क़रीबी रिश्तेदार आस्तीन में डालकर ले गया।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 3, पेज 123

किसी ज़माने में खजूर की गुठली जैसे गेहूँ के दाने होते थे

मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल में है कि ज़ियाद के ज़माने में एक थैली पाई गई थी जिसमें खजूर की बड़ी गुठली जैसे गैहूँ के दाने थे और उसमें लिखा था कि यह उस ज़माने में उगते थे जिसमें अदल व इंसाफ़ को काम में लाया जाता था।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 4, पेज 176

गुनाहगारों को तीन चीज़ों की ज़रूरत है

1. एक तो ख़ुदा तआला की मआफ़ी की ताकि अज़ाब से निजात पायें।
2. दूसरे पर्दा पोशी की ताकि रूस्वाई से बचें।
3. तीसरे अस्मत की ताकि वह दोबारा गुनाह में मुब्तिला न हों।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 1, पेज 385

सोने के दाँतों का शरअी हुक्म

(मुहम्मद मंज़ूर नौमानी)

बम्बई के एक दाँतों के डाक्टर जो अपने फ़न में बड़े माहिर और मुमताज़ समझे जाते थे इस आजिज़ के ख़ास इनायत फ़रमा दोस्तों में से हैं जहाँ तक इल्म व अंदाज़ा है, अल्लाह तआला ने दीनदारी और तक़वे की दौलत से भी ख़ूब हिस्सा अता फ़रमाया है। एक मर्तबा जबकि मैं बम्बई गया हुआ था उन्होंने मुझे से पूछा कि दाँतों के कुछ मरीज़ ऐसे आते हैं कि उनके सोने के दाँत ही मुनासिब होते हैं दूसरे दाँत काम नहीं दे सकते इसलिए शरअन कोई हर्ज़ तो नहीं है।

मैंने उनको बतलाया था कि ऐसी सूरत में सोने के दाँत लगवाने की इजाज़त है। कुछ दिन हुए उनका ख़त आया कि एक साहब जो अच्छे दीनदारों में से हैं मेरे पास आये मैंने उनका हाल देखकर सोने के दाँत लगवाने का मश्विरा दिया वह दूसरे दिन मेरे पास आये और बतलाया कि मैंने एक मौलवी साहब से पूछा था उन्होंने बतलाया है कि मर्दों को सोने के दाँत लगवाना जायज़ नहीं है। डाक्टर साहब ने मुझे लिखा कि आप इस मस्ले को पूरी तहक़ीक़ करके मुझे बतलाएं। अगर सोने के दाँत लगवाना मर्दों के लिए जायज़ नहीं है तो आइंदा मैं ख़ुद भी एहतियात करूंगा और अगर जायज़ है तो इस मस्ले पर तफ़्सील से इस तरह रौशनी डालें कि मुझे ख़ुद भी इत्मीनान हो जाये और जिन मौलवी साहब ने नाजायज़ बतलाया है वह भी आप के जवाब की रौशनी में दोबारा ग़ौर कर सकें। (डाक्टर साहब को जो जवाब दिया गया था मुनासिब मालूम हुआ कि उसको 'अल्-फ़ुर्क़ान' में छपवा दिया जाये।)

बिस्मिहि सुब्हानहु व तआला

मुख़्लिस मुकर्रम ज़ीदत अल्ताफ़िकुम। सलाम मसनून

इख़्लास नामा ब-तारीख़ 14 अप्रैल को मिला, आपकी फ़रमाइश की तामील करते हुए मैंने इस मस्ले की तहक़ीक के लिए किताबों से भी मुराजिअत की यही मालूम हुआ कि तिब्बी नुक़्त-ए-नज़र से अगर माहिर डाक्टर का मश्वरा सोने के बने हुए दाँत लगवाने या सोने के तारों से दाँत बनवाने का हो तो शरअन जायज़ है इसकी साफ़ दलील अरफ़जा इब्ने असद रज़ियल्लाहु अन्हु की वह हदीस है जिसको इमाम अबू दाऊद और इमाम तिर्मिज़ी और इमाम नसाई ने अपनी किताबों में रिवायत किया है और उन्हीं के हवाले से साहिब-ए-मिश्कात अल्-मसाबीह ने भी इसको नक़ल किया है।

हदीस का मज़मून यह है कि एक जंग में अरफ़जा इब्ने असद रज़ियल्लाहु अन्हु की नाक कट गई उन्होंने चाँदी की नक़ली नाक लगवा ली कुछ दिनों के बाद उसमें बदबू पैदा होने लगी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको हुक्म दिया कि वह सोने की नक़ली नाक लगवा लें।

तिर्मिज़ी की रिवायत में हदीस के आख़िरी अल्फाज़ यह हैं:

فامرنی رسول الله صلی الله علیه وسلم ان اتخذانفاً من ذهب.

तर्जुमाः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझसे इर्शाद फ़रमाया कि मैं सोने की नाक बनवाके लगवा लूँ। इस हदीस से मालूम हुआ कि जब चाँदी की नाक ने काम नहीं दिया और उससे बदबू पैदा होने लगी तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सोने की नाक लगवाने की हिदायत फ़रमाई। इससे दाँत का मस्ला भी

मालूम हो जाता है। चुनांचे इमाम तिर्मिज़ी और इमाम अबू दाऊद दोनों ने इस हदीस से दाँतों में सोने के इस्तेमाल का मतलब समझा है। इमाम तिर्मिज़ी ने बाब बांधा है।

بَابَ مَا جَآءَ فِيْ شَدِّ الْإِسْنَانِ بِالذَّهَبِ. (جامع ترمذی ابواب اللباس)

और इमाम अबू दाऊद ने बाब बांधा है:

بَابَ مَا جَآءَ فِيْ رَبْطِ الْإِسْنَانِ بَالذَّهَبِ

और बज़्लुल मज्हूद शरह सुनन अबू दाऊद में इसी हदीस के नीचे लिखा है:

وكذا حكم الاسنان فانّهٗ يثبت هٰذا الحكم فيها بالمقايسة سواءُ ربطها بخيط الذهب او صنعها بالذهب. (بذل المجهود، جلد٥، صفحه ٨٧)

और दाँतों का हुक्म भी यही है कि नाक की तरह उनमें भी सोने का इस्तेमाल जायज़ है यह हुक्म दाँतों के लिए इस हदीस से बतौर क़ियास साबित होता है फिर इसमें भी कोई फ़र्क़ नहीं कि दाँतों को सोने के तारों से बाँधा जाये या दाँत ही सोने के बनाये जायें यानी दोनों सूरतें जायज़ हैं।

और हिदाया की तख़्रीज-ए-अहादीस नस्बुर-राये में इस मस्ले के बारे में चंद हदीसें नक़ल की गई हैं। इनमें एक मुअजम औसत तिबरानी की यह रिवायत है कि हज़रत अम्र बिन अल्-आस रज़ियल्लाहु अन्हु के आगे के दाँत गिर गये थे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे इर्शाद फ़रमाया कि वह उनको सोने से बंधवा लें। فامره النبی صلی الله عليه وسلم ان يشدها بذهب और इससे भी ज़्यादा सरीह वह हदीस है जिसको इमाम ज़ैलअी ने इब्ने क़ानेअ की मोजमुस्सहाबा के हवाले से नक़ल किया है कि

अब्दुल्लाह बिन अबी इब्ने सलूल के बेटे अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि ग़ज़्व-ए-उहद में मेरे आगे के दो दाँत टूट गये थे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे हुक्म फ़रमाया कि मैं वह दाँत सोने के लगवा लूँ। فامره النبی ان اتخذثنية من ذهب और मुस्नद अहमद की रिवायत से नक़्ल किया है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने दाँतों पर सोने के ख़ोल चढ़वाए थे।

إِنَّهٗ ضَبَّبَ اَسْنَانَهٗ بِذَهَبٍ

और तिबरानी के हवाले से हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में नक़ल किया गया है कि उनके दाँत सोने के तारों से बंधे हुए थे।

—नस्बुर-राय, लिल्-इमाम अल् ज़ैलअी, हिस्सा 4, पेज 237

इन रिवायत के बाद इसमें कोई शक व शुब्ह की गुंजाइश नहीं रही कि ब-ज़रूरत सोने के दाँत लगवाना जायज़ है, हाँ अगर तिब्बी ज़रूरत न हो और कोई शख़्स सिर्फ़ अपनी दौलतमंदी की ख़ातिर और तख़ाफ़ुर के लिए लगवाये तो जायज़ न होगा।

जिन साहब ने ना-जायज़ बतलाया उन्होंने शायद हिदाया वग़ैरह फ़िक़्ह हनफ़ी की किताबों को देखा होगा कि अगरचे इमाम मुहम्मद रह० ने इसकी इजाज़त दी है लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा रह० इजाज़त के हक़ में नहीं हैं मगर साहब-ए- हिदाया ने इमाम साहब के क़ौल-ए-अदम जवाज़ की वजह और बुनियाद यह बतलाई है कि दाँत में सोने के इस्तेमाल की ज़रूरत ही नहीं होती चाँदी वग़ैरह का इस्तेमाल काफ़ी हो जाता है।—हिदाया, हिस्सा 3, पेज 388

इससे समझा जा सकता है कि अगर माहिर डाक्टर इस पर

मुतमइन हो कि सोने के दाँतों की ज़रूरत है, चाँदी वग़ैरह से ज़रूरत पूरी न होगी तो फ़िर इमाम साहब के उसूल पर भी इजाज़त होगी। इलावा इसके ऊपर दी गई हदीसें व आसार का तक़ाज़ा और हक़ है कि फ़तवा इमाम मुहम्मद रह० के क़ौल पर दिया जाये। वल्लाहु आलम —अल्-फ़ुर्क़ान, माह रबीउल आख़िर 1393 हिजरी

मुदाहिन शुहदा में शामिल न होगा

हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक मर्तबा लोगों से फ़रमाया कि तुम्हें क्या हो गया कि तुम देखते हो कि कोई आदमी लोगों की इज़्ज़त व आबरू को मजरूह करता है और तुम उसको न रोकते हो न कोई बुरा मानते हो। उन हज़रात ने अर्ज़ किया कि हम इसकी बद्-ज़बानी से डरते हैं कि हम कुछ बोलेंगे तो वह हमारी भी इज़्ज़त व आबरू पर हमला करेगा। हज़रत फ़ारूक आज़म रज़ि० ने फ़रमाया अगर यह बात है तो तुम लोग शुहदा नहीं हो सकते। इब्ने कसीर ने यह रिवायत नक़ल करके इसका मतलब यह बतलाया कि ऐसी मदाहिनत करने वाले उन शुहदा में शामिल नहीं होंगे जो क़्यामत के रोज़ अम्बिया-ए-साबिक़ीन की उम्मतों के मुक़ाबले में शहादत देंगे।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 8, पेज 312

दावत के काम करने वाले साथियों के लिए 6 ग़ैन के जुमले जिनसे बचना ज़रूरी है, बचते रहे तो अल्लाह तआला की ज़ात से तरक़्क़ी की उम्मीद है

1. ग़लू से बचना (سورہ مائدہ:۷۷) لَا تَغْلُوْا فِیْ دِیْنِکُمْ
2. ग़िल से बचना (سورہ حشر:۱۰) لَا تَجْعَلْ فِیْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِیْنَ آمَنُوْا

3. ग़रूर से बचना (سورہ لقمان:۱۸) لَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ
4. ग़फ़लत से बचना (سورہ اعراف:۲۰۵) لَا تَكُنْ مِنَ الْغَافِلِيْنَ
5. ग़ीबत से बचना اَلْغِيْبَةُ اَشَدُّ مِنَ الزِّنَا
6. ग़ुस्से से बचना (سورہ آل عمران:۱۵۹) وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ...الخ

1. तुम अपने दीन में नाहक़ ग़लू मत करो।
2. हमारे दिलों में ईमान वालों की तरफ़ से कीना न होने दीजिए।
3. लोगों से अपना रूख़ मत फेर।
4. तू ग़फ़लत करने वालों में से मत हो जा।
5. ग़ीबत (अंजाम के ऐतिबार से) ज़िना से ज़्यादा सख़्त हैं
6. और आप तुन्द-ख़ू, सख़्त तबीयत होते तो यह आपके पास से सब मुन्तशिर हो जाते। इसलिए आप इनको मआफ़ कर दीजिए और आप इनके लिए इस्तिग़्फ़ार कर दिजिए और इनसे ख़ास-ख़ास बातों पर मश्वरा लेते रहा कीजिए, फिर जब आप राए पुख़्ता कर लें तो ख़ुदा तआला पर ऐतिमाद कीजिए।

40 साल की उम्र होने पर यह दुआ-ए-क़ुरआनी पढ़ने से उम्मीद है कि औलाद सालेह होगी नेक काम की ख़ास तौफ़ीक़ होगी

رَبِّ اَوْزِعْنِیْ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِیْ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ وَعَلٰی وَالِدَیَّ

وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰهُ وَاَصْلِحْ لِیْ فِیْ ذُرِّیَّتِیْ اِنِّیْ تُبْتُ اِلَیْكَ
وَاِنِّیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ. (معارف القرآن، جلد۷، صفحہ۸۰۶)

मनाक़िब-ए-अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि०

1. सिद्दीक़-ए-अक्बर रज़ियल्लाहु अन्हु को जन्नत के आठों दरवाज़ों से पुकारा जाएगा।

2. सिद्दीक़-ए-अक्बर रज़ियल्लाहु अन्हु के इंतक़ाल के वक़्त يـا ايتها النفس المطمئنة ... الخ फ़रिश्ते पढ़ने लगे। —मआरिफ़ुन क़ुरआन, हिस्सा 8

3. अल्लाह ने सलाम कहलवाया। —हदीस

4. सिद्दीक़-ए-अक्बर रज़ियल्लाहु अन्हु वाहिद सहाबी हैं जिनके माँ-बाप औलाद सब मुसलमान हुए। रूहुल मआनी में है कि यह ख़ुसूसियत सिर्फ़ सिद्दीक़ अक्बर रज़ियल्लाहु अन्हु की है।

(मआरिफ़ुल क़ुरआन फ़ी तफ़्सीर
رب أوزعنی ان اشکر نعمتك التی انعمت علیّ...الخ)

चार माह के बाद इस्क़ात-ए-हमल क़त्ल के हुक्म में है

बच्चों को ज़िन्दा दफ़न कर देना या क़त्ल कर देना, सख़्त गुनाह-ए-कबीरा और ज़ुल्म-ए-अज़ीम है और चार माह के बाद किसी हमल को गिराना भी इसी हुक्म में है क्योंकि चौथे महीने में हमल में रूह पड़ जाती है और वह ज़िन्दा इंसान के हुक्म में होता है। इसी तरह जो शख़्स किसी हामिला औरत के पेट पर चोट लगाये और उससे बच्चा मर जाये तो बा-इज्मा-ए-उम्मत मारने पर

इसकी दैत में गर्रा यानी एक ग़ुलाम या उसकी क़ीमत वाजिब होती है और पेट से बाहर आने के वक़्त वह ज़िन्दा था फिर मर गया तो पूरी देयत बड़े आदमी के बराबर वाजिब होती है और चार माह से पहले इस्क़ात-ए-हमल भी बदून-ए-इज़्तिरारी हालत के हराम है मगर पहली सूरत की निस्बत कम है क्योंकि इसमें किसी ज़िन्दा इंसान का क़त्ल-ए-सरीह नहीं है।

—मज़हरी, मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 8, पेज 683

आजकल ज़ब्त-ए-तौलीद के नाम से जो दवाएँ या मुआलिजात किए जाते हैं शरअन जायज़ नहीं हैं

कोई ऐसी सूरत इख़्तियार करना जिससे हमल क़रार न पाये जैसे आज कल दुनिया में ज़ब्त-ए-तौलीद के नाम से इसकी सैकड़ों सूरतें राइज हो गई हैं। इसको भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वाद-ए-ख़ुफ़िया फ़रमाया है यानी ख़ुफ़िया तौर से बच्चे को ज़िन्दा दरगोर कर दे। —कमा रवाहु मुस्लिम अन जुदामतु बिन्त वहब

और कुछ दूसरी रिवायात में जो अज़ल ऐसी तदबीर करना कि नुत्फ़ा रहम में न जाये इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से सकूत या अदम-ए-मुमानिअत मन्क़ूल है। वह ज़रूरत के मौक़ों के साथ मख़्सूस है। वह भी इस तरह कि हमेशा के लिए क़त्अ नसल की सूरत न बने। —मज़हरी

आजकल ज़ब्त-ए-तौलीद के नाम से जो दवाएँ या मुआलिजात किए जाते हैं उनमें कुछ ऐसे भी हैं कि हमेशा के लिए सिलसिला-

ए-नस्ब व औलाद का बंद हो जाये। इसकी किसी हाल में इजाज़त शरअन नहीं है। **वल्लाहु आलम** —मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 8, पेज 683

दिल की बीमारी को दूर करने का नब्वी नुस्ख़ा

हज़रत सअ्द इब्ने अबी वक़ास रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि मैं बीमार हुआ मेरी इयादत को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाये उन्होंने अपना हाथ मेरे कंधों के दर्मियान रखा तो उनके हाथ की ठंडक मेरी सारी छाती में फैल गई, फिर फ़रमाया कि इसे दिल की दौरा पड़ा है इसे हारिस बिन कलदा के पास ले जाओ जो सक़ीफ़ में मतब करता है, हकीम को चाहिए कि वह मदीना की सात अज्वा खजूरें गुठलियों समेत कूटकर उसे खिला दे।

फ़ायदाः— खजूर के फ़ायदों के बारे में यह हदीस बड़ी एहमियत की हामिल है क्योंकि तिब की तारीख़ में यह पहला मौक़ा है कि किसी मरीज़ के दिल के दौरा की तश्ख़ीस की गई।

—मुसनद अहमद, अबू नईम, अबू दाऊद

दिल की बीमारी के लिए मुजर्रब नुस्ख़ा

दिल पर हाथ रख कर एक सौ ग्यारह मर्तबा سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ पढ़कर दम करे इंशा अल्लाह फ़ायदा होगा। बहुत मर्तबा आज़माया गया है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दावत की मैदान में हालत का उतार चढ़ाव

1. कभी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़ाब क़ौसैन की वस्अतों में पहुंचाया गया।
2. कभी अबू जहल की जफ़ाओं का निशाना बनने के लिए भेजा गया।
3. कभी शाहिद और बशीर का लक़ब दिया गया।
4. कभी शाइर मजनूँ और साहिर के आवाज़े सुनवाये गये।
5. कभी لولاك لَمَا خَلَقْتُ الْاَفْلَاكَ (अगर तुम्हारी क़द्र व मंज़िलत मंज़ूर न होती तो हम आलम को पैदा न करते) के ख़िताब से नवाज़ा गया।
6. कभी وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَذِيْرًا (अगर हम चाहें तो तुम्हारी तरह हर हर गाँव में एक पैग़म्बर भेज दें) फ़रमा दिया गया।
7. कभी तमाम ख़ज़ानों की कुंजियाँ आपके हुजरे के दरवाज़ों पर डाल दी गईं।
8. कभी एक मुट्ठी जौ के लिए अबू शहमा यहूदी के दरवाज़े पर ले जाया गया।

—मक्तूबात सदी, पेज 534

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की 6 नसीहतें

1. जो आदमी ज़्यादा हंसता है, उसका रूअब कम हो जाता है।

2. जो मज़ाक़ ज़्यादा करता है लोग उसको हल्का और बे-हैसियत समझते हैं।
3. जो बातें ज़्यादा करता है, उसकी लग़्जिशें ज़्यादा हो जाती हैं।
4. जिसकी लग़्ज़िशें ज़्यादा होती जाती हैं, उसकी हया कम हो जाती है।
5. जिसकी हया कम हो जाती है उसकी परहेज़गारी कम हो जाती है।
6. जिसकी परहेज़गारी कम हो जाती है उसका दिल मुर्दा हो जाता है। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 562

चोरी और शैतानी असरात से हिफ़ाज़त

सोने से पहले 21 मर्तबा بِسْمِ اللّٰهِ पढ़े तो चोरी, शैतानी असरात और अचानक मौत से महफ़ूज़ रहेगा।

ज़ालिम पर ग़लबा

किसी ज़ालिम के सामने 50 मर्तबा بِسْمِ اللّٰهِ पढ़े तो अल्लाह तआला ज़ालिम को मग़लूब करके पढ़ने वाले को ग़ालिब कर देगा। —ब-हवाला ख़ज़ाना-ए-आमाल, पेज 8

ग़रीबी और ख़ुशहाली

ग़रीबी आती है सात चीज़ों के करने से।

1. जल्दी जल्दी नमाज़ पढ़ने से।

2. खड़े होकर पेशाब करने से।
3. पेशाब करने की जगह वुज़ू करने से।
4. खड़े होकर पानी पीने से।
5. मुँह से चिराग़ बुझाने से।
6. दाँत से नाख़ून काटने से।
7. दामन या आस्तनी से मुँह साफ़ करने से।

ख़ुशहाली आती है सात चीज़ों के करने से

1. क़ुरआन की तिलावत करने से।
2. पाँचों वक़्त की नमाज़ पढ़ने से।
3. ख़ुदा का शुक्र अदा करने से।
4. ग़रीबों और मजबूरों की मदद करने से।
5. गुनाहों की मआफ़ी मांगने से।
6. माँ, बाप और रिश्तेदारों के साथ अच्छा बर्ताव करने से।
7. सुब्ह के वक़्त सूरः यासीन और शाम के वक़्त सूरः वाक़िआ पढ़ने से।

—तामीर-ए-हयात, पेज 23, 25 सितम्बर, 2000 ई०

ज़हन और हाफ़िज़ा के लिए

786 मर्तबा بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पानी पर दम करके तुलूअ आफ़ताब के वक़्त पिए तो ज़हन खुल जाएगा और हाफ़िज़ा क़वी हो जाएगा इंशाअल्लाह।

बराए हिफ़्ज़ व हाफ़िज़ा

सूरः الم نشرح लिखकर पानी में घोलकर पिलाना हिफ़्ज-ए-क़ुरआन और तहसील-ए-इल्म के लिए ख़ास है।

जिनका हाफ़िज़ा कमज़ोर हो तो वह सात दिन तक इन आयात-ए-करीमा को रोटी के टुकड़ों पर लिख कर खा लिया करें इस तरह कि हफ़्ते को यह आयत लिखकर खाएः فتعلى الله الملك الحق इतवार के रोज़ यह लिखेः رب زدني علما पीर के रोज़ यह लिखे انه يعلم الجهر وما يخفى سنقرئك فلا تنسى मंगल के रोज़ यह लिखे لا تحرك به لسانك لتعجل به बुध के रोज़ यह लिखे ان علينا جمعه وقرانه जुमेरात के रोज़ यह लिखे فاذا قرانه فاتبع قرانه जुमे को यह लिखे सुब्ह के वक़्त बा-वज़ू लिखकर खिलाएं इन्शा अल्लाह हाफ़िज़ा क़वी होगा।

—फ़लाह-ए-दारैन, ब-हवाला ख़ज़ाना-ए-आमाल, पेज 17

ख़वास सूरः अज़्-ज़ुहा (हुसूल-ए-मुलाज़िमत के लिए)

सूरः अल्-ज़ुहा को आमिलीन ने पुर-तासीर माना है इसमें 9 मुक़ाम पर क़ाफ़ आया है आप नमाज़-ए-फ़ज्र के बाद वहीं बैठें यह सूरः पाक इस तरह पढ़ें कि जब काफ़ आये तो या करीम 9 मर्तबा पढ़ें यह अमल सिर्फ़ 9 दिन करें, मुलाज़िमत न मिली तो यह अमल 18 मर्तबा पढ़ें अगर फिर भी हाजत पूरी न हो तो 27 मर्तबा पढ़ें और हर क़ाफ़ पर 27 मर्तबा या करीम पढ़े, ब-फ़ज़्ले ख़ुदा शर्तीया मुलाज़िमत मिल जाएगी। (शरअी इलाज)

—ब-हवाला ख़ज़ाना-ए-आमाल, पेज 11

इमाम मालिक रह० का वाक़िआ

कुछ हासिदों ने इमाम मालिक रह० की सख़्त मारपीट की, ख़लीफ़ा-ए-वक़्त सज़ा देना चाहता था। हज़रत इमाम मालिक रह० ने सवारी पर सवार होकर शहर में ऐलान किया, मैंने उन सबको मआफ़ किया, किसी को सज़ा देने का कोई हक़ नहीं।

इमाम अहमद बिन हंबल रह० का वाक़िआ

इमाम अहमद बिन हंबल रह० को ख़लीफ़ा कोड़े लगवाता। इमाम साहब हर रोज़ मआफ़ कर देते पूछा गया क्यूँ मआफ़ कर देते हैं। फ़रमायाः मेरी वजह से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के किसी उम्मती को क़्यामत में अज़ाब हो इसमें मेरा क्या फ़ायदा है।

इब्राहीम बिन अदहम रह० का वाक़िआ

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रह० को सिपाही ने जूते मारे बाद में उसको मालूम हुआ कि यह बहुत बड़े बुज़ुर्ग हैं उसने मआफ़ी चाही फ़रमाया दूसरा जूता मारने से पहले पहला मआफ़ कर देता था, अकाबिर के हालात से तारीख़ भरी हुई है।

हालत-ए-मर्ज़ की दुआ

जो शख़्स हालत-ए-मर्ज़ में यह दुआ 40 मर्तबा पढ़े अगर मरा तो शहीद के बराबर सवाब मिलेगा और अगर अच्छा हो गया तो

तमाम गुनाह बख़्शे जाएंगे।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ

—उस्वा-ए-रसूल-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, पेज 578

नंगे सर की शहादत क़ुबूल नहीं

इस्लाम बुलंद अख़्लाक़ व किरदार की तालीम देता है और घटिया अख़्लाक़ व मुआशरत से मना करता है नंगे सर बाज़ारों और गलियों में निकलना इस्लाम की नज़र में एक ऐसा ऐब है जो इंसानी मुरव्वत व शराफ़त के ख़िलाफ़ है इसलिए हज़रात फ़ुक़्हा कराम फ़रमाते हैं कि इस्लामी अदालत ऐसे शख़्स की शहादात क़ुबूल नहीं करेगी, मुसलमानों में नंगे सर फिरने का रिवाज अंग्रेज़ी तहज़ीब व मुआशरत की नक़्क़ाली से पैदा हुआ है वर्ना इस्लामी मुआशरत में नंगे सर फिरने का ऐ़ब तसव्वुर किया जाता है।

—फ़तावा रहीमिया, हिस्सा 3, पेज 224, आपके मसाइल और उनका हल, हिस्सा 8, पेज 47

नमाज़ की बरकत

अता अरज़क को उनकी बीवी ने दो दिर्हम दिये ताकि उसका आटा ख़रीद कर लावें जब आप बाज़ार को चले तो रास्ते में एक ग़ुलाम को देखा कि खड़ा रो रहा है जब उससे वजह पूछी तो उसने कहा कि मुझे मौला ने दो दिर्हम दिये थे सौदे के लिए वह खो गये अब वह मुझे मारेगा। हज़रत ने दोनों दिर्हम उसे दे दिये और शाम तक नमाज़ में मश्ग़ूल रहे और इंतज़ार कर रहा था कि कुछ मिले, कुछ हासिल न हुआ। जब शाम हुई तो अपने एक दोस्त बढ़ई की दुकान पर बैठ गये उसने कहा रह खोरा ले जाओ तन्दूर

गर्म करने की ज़रूरत हो तो काम आयेगा और कुछ मेरे पास नहीं जो आपकी ख़िदमत करूं आप वह खोरा एक थैले में डालकर तशरीफ़ ले गये और दरवाज़े ही से वह थैला घर में फेंककर मस्जिद तशरीफ़ ले गये और नमाज़ पढ़कर बहुत देर तक बैठे रहे ताकि घर वाले सो जायें और उनसे मुख़ासमत न करें फिर घर आये तो देखा कि वह लोग रोटी पका रहे थे, फ़रमाया तुम्हें आटा कहाँ से मिला कहने लगे वही है जो आप थैले में लाये थे हमेशा उसी शख़्स से ख़रीद कर लाया कीजिए जिससे आज ख़रीदा है, फ़रमाया इन्शा अल्लाह मैं ऐसा ही करूंगा। —रौज़ुर्रियाहीन, पेज 260, 755 हिजूरी

बच्चों की बद्-तमीज़ी का सबब और उसका इलाज

बच्चों की बद्-तमीज़ी और नाफ़रमानी का सबब उमूमन वालिदैन के गुनाह होते हैं ख़ुदा तआला के साथ अपना मआमला दुरूस्त करें और तीन बाद सूरः फ़ातिहा पानी पर दम करके बच्चे को पिलाया करें। —आपके मसाइल, हिस्सा 7, पेज 208

तोहमत की सज़ा

ज़रक़ानी (शरह मवत्ता इमाम मालिक) में एक बड़ा अजीब वाक़िआ लिखा है कि मदीना मुनव्वरा के आसपास एक डेरे पर एक औरत मर गई है तो दूसरी उसे ग़ुस्ल देने लगी जो ग़ुस्ल दे रही थी जब उसका हाथ मरी हुई औरत की रान पर पहुंचा तो उसकी ज़बान से निकल गया। मेरी बहनो! (जो दो-चार साथ बैठी हुई थीं) यह जो औरत आज मर गई है उसके तो फ़्लां आदमी के

साथ ख़राब तअल्लुक़ात थे। ग़ुसल देने वाली औरत ने जब यह कहा तो क़ुदरत की तरफ़ से गिरफ़्त आ गई उसका हाथ रान से चिपट गया जितना खींचती वह जुदा नहीं होता, ज़ोर लगाती मगर रान साथ ही आती। देर लग गई मय्यत के वारिस कहने लगे बीबी जल्दी ग़ुसल दो शाम होने वाली है हमको जनाज़ा पढ़कर उसे दफ़नाना भी है, वह कहने लगी कि मैं तो तुम्हारे मुर्दे को छोड़ती हूँ मगर वह मुझे नही छोड़ता, रात हो गई मगर हाथ यूँ ही चिमटा रहा दिन आ गया, फिर हाथ चिमटा रहा अब मुश्किल बनी तो उसके वारिस उलमा के पास गये। एक मौलवी से पूछा मौलवी साहब! एक औरत दूसरी औरत को ग़ुस्ल दे रही थी तो उसका हाथ उस मय्यत की रान के साथ चिमटा रहा अब क्या किया जाये वह फ़तवा देता है कि छुरी के साथ उसका हाथ काट दो, ग़ुस्ल देने वाली औरत के वारिस कहने लगे कि हम तो अपनी औरत को माज़ूर कराना नहीं चाहते हम उसका हाथ नहीं काटने देंगे, उन्होंने कहा फ़्लां मौलवी के पास चलें उससे पूछा तो कहने लगे छुरी लेकर मरी हुई औरत का गोश्त काट दिया जाये मगर उसके वारिस कहने लगे कि हम अपना मुर्दा ख़राब करना नहीं चाहते। तीन दिन और तीन रात इसी हालत में गुज़र गये गर्मी भी थी, धूप भी थी, बदबू पड़ने लगी, आस पास के कई कई देहातों तक ख़बर पहुंच गई। उन्होंने सोचा कि यहां यह मस्‌ला कोई हल नहीं कर सकता, चलो मदीना मे वहां इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैह उस वक़्त क़ाज़ी अल्‌-क़ज़ात की हैसियत में थे। वह हज़रत इमाम मालिक रह० की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगे हज़रत! एक औरत मरी पड़ी है दूसरी उसे ग़ुसल दे रही थी उसका हाथ उसकी रान के साथ चिपट गया छूटता ही नहीं, तीन

दिन हो गये क्या फ़त्वा है? इमाम मालिक रह० ने फ़रमाया मुझे वहाँ ले चलो वहाँ पहुंचे और चादर की आड़ लेकर पर्दे के अन्दर खड़े होकर ग़ुसल देने वाली औरत से पूछा बीबी! जब तेरा हाथ चिमटा था तूने ज़बान से कोई बात तो नहीं कही थी, वह कहने लगी मैंने इतना कहा था कि यह जो औरत मरी है उसके फ़्लां मर्द के साथ ना-जायज़ तअल्लुक़ात थे। इमाम मालिक रह० ने पूछा। बीबी! जो तूने तोहमत लगाई थी क्या उसके चार चश्मदीद गवाह तेरे पास हैं? कहने लगी नहीं, फिर फ़रमाया क्या उस औरत ने ख़ुद तेरे सामने अपने बारे में इक़रार-ए-जुर्म किया था? कहने लगी नहीं। फ़रमाया फिर तूने क्यों तोहमत लगाई? उसने कहा मैंने इसलिए कह दिया था वह घड़ा उठाकर उसके दरवाज़े से गुज़र रही थी।

यह सुनकर इमाम मालिक रह० ने वहीं खड़े होकर पूरे क़ुरआन में नज़र दौड़ाई फिर फ़रमाने लगे। क़ुरआन पाक मे आता है:

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ الْمُحْصِنَاتُ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوْا بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ
فَاجْلِدُوْا هُمْ ثَمَانِيْنَ جَلْدَةً.

जो औरतों पर ना-जायज़ तोहमतें लगाते हैं फिर उनके पास चार गवाह नहीं होते उनकी सज़ा है कि उनको ज़ोर से 80 कोड़े मारे जाएं। तूने एक मर्तबा औरत पर तोहमत लगाई तेरे पास कोई गवाह नहीं था मैं वक़्त का क़ाज़ी अल्- क़ज़ात हुक्म करता हूँ जल्लादो! इसे मारना शुरू कर दो, जल्लादों ने उसे मारना शुरू कर दिया वह कोड़े मारे जा रहे थे सत्तर कोड़े मारे मगर हाथ यूंहि चिमटा रहा। 75 कोड़े मारे मगर हाथ फिर भी यूँ ही चिमटा रहा, 79 कोड़े मारे तो हाथ फिर भी न छूटा जब 80वां कोड़ा उसके

लगा तो उसका हाथ खुद ब-खुद छटकर जुदा हो गया।

—मौत की तैयारी, पेज 82

सिला-ए-रहमी

हमारे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि:—

1. सिला-ए-रहमी से मोहब्बत बढ़ती हैं।
2. माल बढ़ता है।
3. उम्र बढ़ती है।
4. रिज़्क़ में कशाइश होती है।
5. आदमी बुरी मौत नहीं मरता।
6. उसकी मुसीबतें और आफ़तें टलती जाती हैं।
7. मुल्क की आबादी और सर-सब्ज़ी बढ़ती है।
8. गुनाह मआफ़ किये जाते हैं।
9. नेकियाँ क़ुबूल की जाती हैं।
10. जन्नत में जाने का इस्तिहक़ाक़ हासिल होता हैं
11. सिला-ए-रहमी करने वाले से खुदा अपना रिश्ता जोड़ता है।
12. जिस क़ौम में सिला-ए-रहमी करने वाले होते हैं उस क़ौम पर खुदा की रहमत नाज़िल होती है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम अपने नस्बों को सीखो ताकि अपने रिश्तेदारों को पहचानकर उनसे सिला-ए-रहमी कर सको फ़रमाया कि सिला-ए-रहमी करने से मोहब्बत बढ़ती है, माल बढ़ता है और मौत का वक़्त पीछे हट

जाता है। —तिर्मिज़ी

जो शख़्स यह चाहता है कि उसके रिज़्क़ में कशाइश हो और उसकी उम्र बढ़ जाये तो उसको चाहिए कि वह अपने रिश्तेदारों से सिला-ए-रहमी करे। —बुख़ारी व मुस्लिम

जो चाहता हो कि उसकी उम्र बढ़े और उसके रिज़्क़ में कशाइश हो और वह बुरी मौत न मरे तो उसको लाज़िम है कि वह ख़ुदा से डरता रहे और अपने रिश्ते नातेवालों से सुलूक करता रहे। —अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब

जो शख़्स सद्क़ा देता रहता है और अपने रिश्ते नातेवालों से सुलूक करता रहता है उसकी उम्र को ख़ुदा दराज़ करता है और उसको बुरी तरह मरने से बचाता है और उसकी मुसीबतों और आफ़तों को दूर करता है। —अत्तर्ग़ीब वत्तहीब

रहम ख़ुदा की रहमत की एक शाख़ है इससे ख़ुदा ने फ़रमा दिया है कि जो तुझ से रिश्ता जोड़ लेगा उससे मैं भी रिश्ता मिलाऊंगा और जो तेरे रिश्ते को तोड़ देगा उसके रिश्ते को मैं तोड़ दूंगा। —बुख़ारी

फ़रमाया कि अल्लाह की रहमत उस क़ौम पर नाज़िल नहीं होती जिसमें ऐसा शख़्स मौजूद हो जो अपने रिश्ते नातों को तोड़ता हो। —शोबुल ईमान, बैहक़ी

बग़ावत और क़त्आ रहमी से बढ़कर कोई गुनाह उसका मुस्तौजब नहीं कि उसकी सज़ा दुनिया ही में फ़ौरन दी जाये और आख़िरत में भी उस पर अज़ाब हो। —तिर्मिज़ी व अबू दाऊद

फ़रमाया कि जन्नत में वह शख़्स घुसने न पायेगा जो अपने रिश्ते नातों को तोड़ता है। —बुख़ारी व मुस्लिम

हमारे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे रास्ते में एक ऐराबी ने आकर आप सल्ल० की ऊँटनी की नकेल पकड़ी और कहा कि या रसूलुल्लाह! मुझको ऐसी बात बताइये जिससे जन्नत मिले और दोज़ख़ से निजात हो, आप ने फ़रमाया कि तू एक ख़ुदा की इबादत कर और उसके साथ शरीक मत कर, नमाज़ पढ़, ज़कात दे, और अपने रिश्ते नाते वालों से अच्छा सुलूक करता रह, जब वह चला गया तो आप ने फ़रमाया कि यह अगर मेरे हुक्म की तामील करेगा तो इसको जन्नत मिलेगी। —बुख़ारी व मुस्लिम

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि अल्लाह तआला किसी क़ौम से, मुल्क को आबाद फ़रमाता है और उसको दौलतमंद करता है और कभी दुश्मनी की नज़र से उनको नहीं देखता, सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! उस क़ौम पर इतनी मेहरबानी क्यों होती है? फ़रमाया कि रिश्ते-नाते वालों के साथ अच्छा सुलूक करने से उनको मर्तबा मिलता है। —तर्ग़ीब वतर्हीब

फ़रमाया कि जो शख़्स नर्म मिज़ाज होता है उसको दुनिया व आख़िरत की ख़ूबियाँ मिलती हैं और अपने रिश्ते नाते वालों से अच्छा सुलूक करने और पड़ोसियों से मेल-जोल रखने और आम तौर पर लोगों से ख़ुश ख़ल्क़ी बरतने से मुल्क सर सब्ज़ और आबाद होते हैं और ऐसा करने वालों की उम्रें बढ़ती हैं।

—तर्ग़ीब वतर्हीब

एक शख़्स ने आकर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मुझसे एक बड़ा गुनाह हो गया है मेरी तौबा क्यों कर क़ुबूल हो सकती है।

आपने पूछा कि तेरी माँ ज़िन्दा है? उसने कहा नहीं, फ़रमाया कि ख़ाला, उसने कहा जी हाँ! फ़रमाया कि तू उसके साथ हुस्ने सलूक कर।
—तर्ग़ीब वतर्हीब

एक बार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भीड़ में यह फ़रमाया कि जो शख़्स रिश्तेदारी का पास व लिहाज़ न करता हो, वह हमारे पास न बैठे, यह सुनकर एक शख़्स उस भीड़ से उठा और अपनी ख़ाला के घर गया जिससे कुछ बिगाड़ था, वहाँ जाकर उसने अपनी ख़ाला से मअज़िरत की और क़ुसूर कराया। फिर आकर दरबार-ए-नबूव्वत में शरीक हो गया। जब वह वापस आ गया तो सरकार-ए-दो-आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उस क़ौम पर खुदा की रहमत नहीं नाज़िल होती जिसमें ऐसा शख़्स मोजूद हो जो अपने रिश्तेदारो से बिगाड़ रखता हो।
—तर्ग़ीब वतर्हीब

फ़रमाया कि हर जुमे की रात में तमाम आदमियों के अमल और इबादतें खुदा के दरबार में पेश होती हैं जो शख़्स अपने रिश्तेदारों से बद्-सुलूकी करता है उसका कोई अमल क़ुबूल नहीं होता।
—तर्ग़ीब वतर्हीब

सिला-ए-रहमी पर एक अजीब क़िस्सा

एक बार हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने औरतों को ख़ैरात करने का हुक्म दिया, और फ़रमाया कि और कुछ न हो तो ज़ेवर ही को ख़ैरात करें, ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने यह हुक्म सुनकर अपने ख़ाविन्द अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि तुम जाकर रसूलुल्लाह सल्ल० से पूछो, अगर कोई हर्ज न

हो तो जो कुछ मुझे ख़ैरात करना है वह मैं तुम ही को दे दूँ। तुम भी तो मुहताज हो, अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ि० ने कहा कि ख़ुद तुम जाकर पूछो। यह मस्जिद-ए-नब्वी सल्ल० के दरवाज़े पर हाज़िर हुईं वहाँ देखा तो एक बीबी और खड़ी थीं और वह भी इसी ज़रूरत से आई थीं, हैबत के मारे उन दोनों को जुर्रअत न पड़ती थी कि अन्दर जाकर ख़ुद हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछतीं बिलाल रज़ि० निकले तो उन दोनों ने कहा कि हज़रत से जाकर कहो कि दो औरतें खड़ी पूछती हैं कि हम लोग अपने ख़ाविन्दों पर, और यतीम बच्चों पर, जो हमारी गोद में हों, सद्क़ा कर सकते हैं या नहीं, बिलाल रज़ि० से चलते चलते यह भी कह दिया कि तुम यह न कहना कि हम कौन हैं? हज़रत बिलाल रजि० ने अर्ज़ किया। हज़रत सल्ल० ने फ़रमाया कि कौन पूछता है? हज़रत बिलाल रज़ि० ने कहा कि एक क़बीला-ए-अंसार की बीबी हैं और एक ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा। आप सल्ल० ने फ़रमाया कि कौन ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा)? उन्होंने कहा कि अब्दुल्लाह इब्ने मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कह दो कि उनको दोहरा सवाब मिलेगा, क़राबत की पासदारी का अलग और सद्क़ा करने का अलग। —बुख़ारी व मुस्लिम

ज़िक्र व दुआ के मुतआल्लिक़

जो शख़्स हर छींक के वक़्त "اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ عَلٰی کُلِّ حَالٍ مَّا کَانَ" कहे तो दाढ़ और कान का दर्द कभी भी महसूस न करेगा।

—हिस्ने हुसैन, इब्ने अबी शैबी, पेज 335

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा जो अबू राफ़े की वालिदा हैं उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया मुझे चन्द कलिमात बता दीजिए मगर ज़्यादा न हों, आप सल्ल० ने फ़रमायाः 10 मर्तबा اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहो अल्लाह फ़रमाएगा यह मेरे लिए है। और 10 मर्तबा سُبْحَانَ اللّٰهِ कहो अल्लाह फ़रमाएगा यह मेरे लिए है। और कहो اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श दे अल्लाह फ़रमाएगा मैंने बख़्श दिया। पस तुम इसको 10 मर्तबा कहो तो अल्लाह तआला हर मर्तबा फ़रमाएगा मैंने तुझे बख़्श दिया।

—हिस्ने हसीन, तिबरानी अन अबी अमामा रज़ि०, पेज 407

फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कि जो शख़्स इन कलिमात को यानी سُبْحَانَ اللّٰهِ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ के साथ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ कहे तो यह कलिमात उसी तरह जिस तरह उसने कहे लिख लिये जाते हैं। फिर अर्श के साथ लटका दिये जाते हैं और कोई गुनाह जो उसने किया हो इन कलिमात को नहीं मिटाएगा। यहां तक कि जब वह अल्लह तआला से क़्यामत के रोज़ मिलेगा तो वह कलिमे उसी तरह सर-ब-मुहर होंगे जिस तरह उसने कहे थे। —हिस्ने हसीन, बज़्ज़ार अन इब्ने अब्बास रज़ि०, पेज 401

हज़रत हसन रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत समरह बिन जुन्दुब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें एक ऐसी हदीस न सुनाऊं जो मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कई मर्तबा सुनी और हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से भी कई मर्तबा सुनी है। मैंने अर्ज़ किया ज़रूर सुनाएं। हज़रत समूरा रज़ि० ने फ़रमाया जो शख़्स सुब्ह व शाम

(1) اَللّٰهُمَّ اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ ऐ अल्लाह आप ही ने मुझे पैदा किया।

(٢) وَاَنْتَ تَهْدِيْنِى. और आप ही मुझे हिदायत देने वाले हैं।
(٣) وَاَنْتَ تُطْعِمُنِى. आप ही मुझे खिलाते हैं।
(٤) وَاَنْتَ تَسْقِيْنِ. आप ही मुझे पिलाते हैं।
(٥) وَاَنْتَ تُمِيْتُنِى. आप ही मुझे मार देंगे।
(٦) وَاَنْتَ تُحْيِيْنِى. और आप ही मुझे ज़िन्दा करेंगे।

पढ़े तो जो अल्लाह तआला से मांगेगा तो अल्लाह तआला ज़रूर उसको अता फ़रमाएंगे।

—रिवाहुत तिबरानी फ़िल औसत ब-अस्ना हसन मज्मउुल ज़वाइद,

मुन्तख़ब अहादीस, इल्म व ज़िक्र, दुआ पेज 442

इब्ने आदम की हक़ीक़त (जिसने अपने आपको पहचाना उसने अपने रब को पहचाना)

واخرج ابو نعيم فى الحلية عن محمد بن كعب القرظى قال قرات فى التورات او قال فى مصحف ابراهيم فوجدت فيها:- يقول الله يا ابن آدم ما انصفتنى خلقتك ولم تك شيئاً وجعلتك بشراً سويًا وخلقتك من سلالة من طين ثم جعلتك نطفة فى قرار مكين ثم خلقت النطفة علقة فخلقت العلة مضعة فحلقت المضغةَ عظاماً فكسوت العظام لحماً ثم انشاتك خلقاً آخر.

يا ابن آدم هل يقدر على ذلك غيرى؟ ثم خففت تفلك على امك حتى لا تتمرض بك ولا تتا ذى ثم افصيت الى الا معاء ان اتسعنى والى الجوارح ان تفرقى فاتسعت الامعاء من بعد ضيقها وتفرقت الجوارح من بعد تشبكها ثم او حيت الى الملك الموكل بالارحام ان يخرجك من بطن امك

فاستخلصتك على ريشة من جناحة فاطلعت عليك فاذا انت خلق ضعيف ليس لك سن يقطع ولا ضرس يطحن فاستخلصت لك فى صدر امك عرقاً يدر لك لبنا باردًا فى الصيف حارا فى اشتاء واستخلصته لك من بين جلد ولحم ودم و عروق ثم قذفت لك فى قلب والدتك الرحمة وفى قلب بيك التحنن يكدّان ويجهدان وير بيانك ويغذيانك ولا ينا منان حتىٰ ينوماك. ابن آدم انا فعلت ذلك به لا بشئٍ استعنت على قضائها يا ابن آدم فلما قطع سنك وطحن ضرسك اطعمتك فاكهة الصيف فى او انهاوفاكهة اشتاء فى اوانها فلما عرفت عنى ربك عصيتى فالان اذ عصيتنى فادعنى فانى قريب مجيب وادعنى فانى غفور رحيم.

وعن انس بن مالك ﷺ قال سمعت رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم يقول قال اللّٰه تعالى يا ابن آدم انك ما دوتنى ورجوتنى غفرت لك على ما كان منك ولا اُبالى يا ابن آدم لو بلغت ذنوبك عنان السماء ثم استغفرتنى غفرت لك يا ابن آدم انك لو اتيتنى بقراب الارض خطا يا ثم لقيتنى لا تشرك بى شيئًا لا تيتك بقرابها مغفرة (رواه الترمذى جامع العلوم والحكم، صفحہ ۳۲۳)

अबू नईम ने 'हलया' में हज़रत मुहम्मद बिन कअब क़रज़ी से रिवायत किया है वह फ़रमाते हैं कि मैंने तौरात में या फ़रमाया इब्राहीम अलैहिस्सलाम के मुसहहफ़ (सहीफ़ों) में पढ़ा तो उसमें यह पाया अल्लाह तआला फ़रमाता है: ऐ इब्ने आदम (आदम के बेटे) तून अदल/इंसाफ से काम न लिया। मैंने तुझे इस वक़्त पैदा किया जबकि तू कुछ भी न था और तुझे एक मुअतदल व मुनासिब इंसान बनाया और तुझको मिट्टी के ख़ुलासा (यानी ग़िज़ा) से बनाया फिर मैंने तुझको नुत्फ़े से बनाया जो कि (एक मुक़र्रर मुद्दत तक) एक महफ़ूज़ मुक़ाम (यानी रहम) में रहा। फिर मैंने

उस नुत्फ़े को ख़ून का लोथड़ा बना दिया फिर मैंने उस ख़ून के लोथड़े को (गोश्त की) बोटी बना दिया फिर मैंने इस बोटी (के कुछ हिस्सों) को हड्डियाँ बना दिया। फिर मैंने उन हड्डियों पर गोश्त चढ़ा दिया। फिर मैंने (उसमें रूह डालकर) उसको एक दूसरी ही (तरह की) मख़्लूक़ बना दिया। ऐ इब्ने आदम! क्या यह सब मेरे अलावा भी कोई कर सकता है।

फिर मैंने आँतों को हुक्म दिया कि फैल जाओ और हिस्सों को हुक्म दिया कि अलग अलग हो जाओ तो आँतें अपनी तंग जगह के बाद कुशादा हो गईं और हिस्से आपस में ख़लत मलत हो जाने के बाद अलग-अलग हो गये। फिर रहम पर मुक़र्रर फ़रिश्ते को मैंने हुक्म दिया कि तुमको तुम्हारी माँ के पेट से निकाले मैंने तुझको बाज़ू के नर्म परों पर निकाला फिर मैं तेरी तरफ़ मुतवज्जह हुआ तो एक कमज़ोर मख़्लूक़ था न तो तेरे दाँत थे जिससे तू काट सकता और न दाढ़ थी जिससे तू चबा सकता मैंने तेरे लिए तेरी माँ के सीने में एक रग पैदा की जो तेरे लिए गर्मियों में ठंडा दूध निकालती और सर्दियों में गर्म दूध और उसको तेरी जिल्द, गोश्त और ख़ून और रगों (की अफ़ज़ाइश व पैदावार) का ज़रिया बनाया। फिर मैंने तेरी माँ के दिल में तेरे लिए रहमत डाली और तेरे वालिद के दिल में मुहब्बत पैदा की कि दोनों मेहनत व मश्क़्क़त करते हैं और तेरी परवरिश करते हैं और तुझे ग़िज़ा फ़राहम करते हैं और जब तक तुझे न सुला दें ख़ुद नहीं सोते।

ऐ इब्ने आदम! यह सब मैंने इसलिए नहीं किया कि तू इन सब चीज़ों का हक़दार था और न ही अपनी किसी ज़रूरत को पूरा करने के लिए किया (हाजत पूरी करने के लिए किया) ऐ इब्ने आदम! फिर जब तेरे दाँत (चीज़ों को) काटने लगे और तेरी दाढ़

(सख़्त चीज़) तोड़ने लगी तो मैंने तुझ को गर्मियों में उसके मौसमी फल खिलाए और सर्दियों के फल उसके मौसम में, फिर जब तूने जान लिया कि मैं तेरा पालनहार हूँ तो तूने मेरी नाफ़रमानी शुरू कर दी अगर अब भी तू मेरी नाफ़रमानी करे फिर मुझे पुकारे तो मैं क़रीब हूँ (तेरी) दुआ को क़ुबूल करने वाला हूँ। तू मुझे पुकार कि मैं बहुत बख़्शने वाला, बहुत रहम करने वाला हूँ।

अल्लाह की तक़सीम पर राज़ी रहने में इंसान की आफ़ियत पोशीदा हैं

يَا ابْنِ آدَمَ خَلَقْتُكَ لِعِبَادَتِيْ فَلَا تَلْعَبْ قَدَّرْتُ لَكَ رِزْقِكَ فَلَا تَتْعَبْ فَإِنْ رَضَيْتَ بِمَا قَسَمْتُ لَكَ وَعِزَّتِيْ وَجَلَالِيْ اَرَحْتَ قَلْبِكَ وَجَسَدَكَ وَكُنْتُ عِنْدِيْ مَحْمُوْدًا وَإِنْ لَمْ تَرْضَ بِمَا قَسَمْتُ لَكَ سَلَّطْتُ عَلَيْكَ الدُّنْيَا تَرْقَضُ كَمَا تَرْقَضُ الْوَحْوَشِ فَلَا تَزِيْدُ مِمَّا قَسَمْتُ لَكَ وَكُنْتَ عِنْدِيْ مَذْمُوْمًا كَمَا فِيْ التَّوْرَاةِ.

ऐ इब्ने आदम! मैंने तुझ को अपनी इबादत के लिए पैदा किया तो तू लहूव लइब में न लग और मैंने तेरे रिज़्क़ को मुक़द्दर कर दिया है तो तू (उसको हासिल करने में) मत थक। अगर तू मेरी तक़्सीम पर राज़ी हो गया तो मेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम मैं तेरे दिल और जिस्म को राहत दूंगा और तू मेरे नज़दीक पसंदीदा बन जाएगा और अगर तू मेरी तक़्सीम किए हुए रिज़्क़ पर राज़ी न हुआ तो मैं तुझ पर दुनिया को मुसल्लत कर दूंगा फिर तू ऐसा मारा मारा फिरेगा जैसा कि वहशी जानवर फिरते हैं और मेरी तक़्सीम से ज़्यादा तो तुझे मिलेगा नहीं और तू मेरे नज़दीक

ना-पसंदीदा बन जाएगा।

ज़िम्मेदार को जायज़ है कि अपना फ़ैसला दिल में रखकर हक़ीक़त को मालूम करने के लिए उसके ख़िलाफ़ कुछ कहे

मुसनद अहमद में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं दो औरतें थीं जिनके साथ उनके दो बच्चे थे, भेड़िया आकर एक बच्चे को उठा ले गया अब हर एक दूसरे से कहने लगी कि तेरा बच्चा गया और जो है वह मेरा बच्चा है। आख़िर यह क़िस्सा हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के सामने पेश हुआ, आप ने बड़ी औरत को डिग्री दे दी कि यह बच्चा तेरा है यह यहाँ से निकलीं, रास्ते में हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम थे आप ने दोनों को बुलाया और फ़रमाया छुरी लाओ मैं इस लड़के के दो टुकड़े करके आधा आधा इन दोनों को दे देता हूँ इसपर बड़ी तो ख़ामोश हो गई मिस्कीन छोटी ने हाए वावैला शुरू कर दी कि ख़ुदा आप पर रहम करे आप ऐसा न कीजिए लड़का इस बड़ी का है इसी को दे दीजिए। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम इस मआमले को समझ गये और लड़का छोटी औरत को दिला दिया।

—बुख़ारी व मुस्लिम, तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 3, पेज 387

एहल-ए-जन्नत को कंगन पहनाये जाएंगे

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ جَنَّٰتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ۝

तर्जुमाः– अल्लाह तआला उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये जन्नत के ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिसके नीचे नहरें जारी होंगी उनको वहाँ सोने के कंगन और मोती पहनाये जाएंगे और पोशाक उनकी वहाँ रेशम की होगी।

यहाँ यह शुब्ह होता है कि कंगन हाथों में पहनना औरतों का काम और उनका ज़ेवर है मर्दों के लिए बुरा समझा जाता है। जवाब यह है कि दुनिया के बादशाहों की इमतियाज़ी शान रही है कि सर पर ताज और हाथों में कंगन इस्तेमाल करते थे जैसा कि हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुराक़ा बिन मालिक को जबकि वह मुसलमान नहीं थे और सफ़र-ए-हिजरत में आपको गिरफ़्तार करने के लिए तआक़ुब (पीछा करना) में निकले थे। जब उनका घोड़ा ब-इज़्न-ए-ख़ुदावन्दी ज़मीन में धंस गया और उसने तौबा की तो आप सल्ल० की दुआ से घोड़ा निकल गया उस वक़्त सुराक़ा बिन मालिक से वादा फ़रमाया था कि कस्रा शाह फ़ारस के कंगन माल-ए-ग़नीमत में मुसलमानों के पास आएंगे वह तुम्हें दिए जाएंगे और जब हज़रत फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में फ़ारस का मुल्क फ़तह हुआ और ईरान के यह कंगन दूसरे अम्वाल-ए-ग़नीमत के साथ आये तो सराक़ा बिन मालिक ने मुतालबा किया और उनको दे दिये गये। ख़ुलासा यह है कि जैसे सर पर ताज पहनना आम मर्दों का रिवाज नहीं, शाही ऐज़ाज़ है उसी तरह हाथों में कंगन भी शाही ऐज़ाज़ समझे जाते हैं इसलिए एहल-ए-जन्नत को कंगन पहनाये जाएंगे, कंगन के बारे में इस आयत में और सूरः फ़ातिर में यह है कि वह सोने के होंगे और सूरः निसा में यह कंगन चाँदी के बताये गये हैं इसलिए हज़रात मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि एहल-ए-जन्नत के

हाथों में तीन तरह के कंगन पहनाये जाएंगे।

1. सोने के। 2. चाँदी के। 3. मोतियों का जैसा कि इस आयत में सोने और मोतियों का ज़िक्र मौजूद है।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, पेज 238, पारा 17

जिन्नात की शरारत से बचने का नब्वी नुस्ख़ा

इब्ने अबी हातिम में है कि एक बीमार शख़्स जिसे कोई जिन सता रहा था, हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया तो आप ने यह आयत पढ़कर उसके कान में दम किया:

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ○ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ○ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ○ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ○

वह अच्छा हो गया, जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इसका ज़िक्र किया तो आप सल्ल० ने फ़रमाया अब्दुल्लाह तुमने उसके कान में क्या पढ़ा था, आपने बतला दिया तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया तुमने यह आयतें उसके कान में पढ़कर उसे जिला दिया वल्लाह इन आयतों को अगर कोई बा-ईमान शख़्स यक़ीन के साथ किसी पहाड़ पर पढ़े तो वह भी अपनी जगह से टल जाये।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 3, पेज 474, पारा 18, सूरः मोमिनून

सफ़र में निकल कर सुब्ह व शाम यह दुआ पढ़े

अबू नईम ने रिवायत नक़्ल की है कि हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक लश्कर में भेजा और फ़रमाया कि हम सुब्ह व शाम यह आयत तिलावत फ़रमाते रहें:

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ۝

(سورۂ مومنون: آیت ۱۱۵)

हमने बराबर इसकी तिलावत दोनों वक़्त जारी रखी। अल्हम्दुलिल्लाह हम सलामती और ग़नीमत के साथ वापस लौटे।

डूबने से बचने का नब्वी तरीक़ा

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं मेरी उम्मत का डूबने से बचाव, किश्तियों में सवार होने के वक़्त यह कहना है:

بِسْمِ اللّٰهِ الْمَلِكِ الْحَقِّ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌ بِيَمِيْنِهٖ سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ (سورۂ غافر، آیت:۶۷) بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰهَا اِنَّ رَبِّىْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ (سورۂ ہود، آیت:۴۱) (تفسیر ابن کثیر، جلد۳، صفحہ۴۷، پارہ۱۸، سورہ مومنون)

क़ातिलान-ए-हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने हज़रत अब्दुल्लह इब्ने सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु का दर्द भरा खुतबा

बग़वी ने अपनी सनद के साथ हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु का यह खुतबा नक़ल किया है जो उन्होंने हज़रत

उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़ हंगामे के वक़्त दिया था। खुतबे के अल्फ़ाज़ यह हैं, अल्लाह के फ़रिश्ते तुम्हारे शहर के गिर्द अहाता (घेरा) किये हुए हिफ़ाज़त में उस वक़्त से मश्ग़ूल थे जब से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना से तश्रीफ़ फ़रमा हुए और आज तक यह सिलसिला जारी था, खुदा की क़सम! अगर तुमने हज़रत उस्मान को क़त्ल कर दिया तो यह फ़रिश्ते वापस चले जाएंगे और फिर कभी न लौटेंगे, खुदा की क़सम तुममें से जो शख़्स इनको क़त्ल कर देगा वह अल्लाह के सामने दस्त बुरीदा हाज़िर होगा उसके हाथ न होंगे, और समझ लो कि अल्लाह की तलवार अब तक म्यान में थी, खुदा की क़सम! अगर वह तलवार म्यान से निकल आई तो फिर कभी म्यान में न जाएगी क्योंकि जब कोई नबी क़त्ल किया जाता है तो उसके बदले में 70 हज़ार आदमी मारे जाते हैं और जब किसी ख़लीफ़ा को क़त्ल किया जाता है तो 35 हज़ार आदमी मारे जाते हैं। —मज़हरी

चुनांचे क़त्ल-ए-हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से जो आपसी ख़ूनरेज़ी का सिलसिला शुरू हुआ था उम्मत में चलता ही रहा है और जैसे अल्लाह तआला की नेमत इस्तिख़्लाफ़ और इस्तिहकामे दीन की मुख़ालिफ़त और ना-शुक्री क़ातलान-ए-हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने की थी उनके बाद रवाफ़िज़ और ख़्वारिज की जमाअतों ने खुलफ़ा-ए-राशिदीन की मुख़ालिफ़त में गिरोह बना लिये इसी सिलसिले में हज़रत हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत का अज़ीम हादसा पेश आया।

نَسْأَلُ اللّٰهَ الْهِدَايَةَ وَشُكْرِ نِعْمَتِهٖ.

(معارف القرآن، جلد ٦، صفحه ٤٧، پاره ١٨، سورة نور)

मसाजिद के पन्द्रह आदाब

1. अव्वल यह कि मस्जिद में पहुंचने पर अगर कुछ लोगों को बैठा देखे तो उनको सलाम करें। और कोई न हो तो "اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ" कहे लेकिन यह उस सूरत में है जबकि मस्जिद के हाज़ीरीन नफ़्ली तिलावत व तस्बीह वग़ैरह में मश्ग़ूल न हों वर्ना उनको सलाम करना दुरूस्त नहीं।
2. दूसरे यह कि मस्जिद में दाख़िल होकर बैठने से पहले दो रक्अत तहय्यितुल मस्जिद की पढ़े, यह भी जब है कि इस वक़्त नमाज़ पढ़ना मकरूह न हो, जैसे ठीक आफ़ताब के निकलने या छुपने या इस्तिवा निस्फ़ुन्नहार (दोपहर) का वक़्त न हो।
3. तीसरे यह है कि मस्जिद में ख़रीद व फ़रोख़्त न करे।
4. चौथे यह कि वहाँ तीर और तलवार न निकाले।
5. पाँचवें यह कि मस्जिद में अपनी गुमशुदा चीज़ तलाश करने का ऐलान न करे।
6. छठे यह कि मस्जिद में आवाज़ बुलन्द न करे।
7. सातवे यह कि वहां दुनिया की बातें न करे।
8. आठवें यह कि मस्जिद में बैठने की जगह में किसी से झगड़ा न करे।
9. नवें यह कि जहाँ सफ़ में पूरी जगह न हो वहाँ घुसकर लोगों पर तंगी पैदा न करे।
10. दसवें यह कि किसी नमाज़ पढ़ने वाले के आगे से न गुज़रे।

11. ग्यारहवें यह कि अपने बदन के किसी हिस्से से खेल न करे।
12. बारहवें यह कि अपनी उंगलियाँ न चटख़ाये।
13. तेरहवें यह कि मस्जिद मे थूकने, नाक साफ़ करने से परहेज़ करे।
14. चौधवीं यह कि नजासत से पाक व साफ़ रहे, और किसी छोटे बच्चे या मजनूँ को साथ न ले जाये।
15. पन्द्रहवें यह कि वहाँ कस्रत से ज़िकरूल्लाह में मश्गूल रहे।

क़र्तबी ने यह पन्द्रह आदाब लिखने के बाद फ़रमाया है जिसने यह काम कर लिये उसने मस्जिद का हक़ अदा किया और मस्जिद उसके लिए हिर्ज़ व अमान की जगह बन गई।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 6, पेज 416, पारा 18, सूरः नूर

जो मकानात ज़िकरूल्लाह, तालीम-ए-क़ुरआन, तालीम-ए-दीन के लिए मख़्सूस हों वह भी मसजिद के हुक्म में है

तफ़्सीर बहर-ए-मुहीत में अबू हयान ने फ़रमाया कि فِي بُيُوتٍ का लफ़्ज़ क़ुरआन में आम है जिस तरह मसाजिद उसमें दाख़िल हैं इसी तरह वह मकानात जो ख़ास तालीम-ए-क़ुरआन, तालीम-ए-दीन व वअ़ूज़ व नसीहत या ज़िक्र व शग़ल के लिए बनाये गये हों जैसे मदारिस और ख़ानक़ाहें वह भी इस हुक्म में दाख़िल हैं, उनका भी अदब व एहतराम लाज़िम है।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 6, पेज 417, पारा 18, सूरः नूर

रफ़अ मसाजिद के मअनी

अल्लाह तआला ने इजाज़त दी है मस्जिदों को बुलन्द करने की, इजाज़त देने से मुराद उसका हुक्म करना है और बुलन्द करने से मुराद उनकी तअज़ीम करना। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि बुलन्द करने के हुक्म में अल्लाह तआला ने मस्जिदों में लग़्व काम करने और लग़्व कलाम करने से मना फ़रमाया है। —इब्ने कसीर

अक्रमा व मुजाहिद रह०, इमाम तफ़्सीर ने फ़रमाया कि रफ़ा से मुराद मस्जिद का बनाना है। जैसे बिना-ए- काबा के बारे में क़ुरआन में आया है: وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرَاهِيْمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ.

कि इसमें रफ़ा-ए-क़वाइद से मुराद बिना-ए-क़वाइद है। और हज़रत हसन बसरी रह० ने फ़रमाया कि रफ़ा मस्जिद से मुराद मसाजिद की ताज़ीम व एहतराम और उनकी नजासतों और गंदी चीज़ों से पाक रखना है जैसा कि हदीस में आया है कि मस्जिद में जब कोई नजासत लाई जाये तो मस्जिद उससे इस तरह सिमटती है जैसे इंसान की खाल आग से। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस शख़्स ने मस्जिद में से नापाकी और गंदगी और तक्लीफ़ देने वाली चीज़ को निकाल दिया अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में घर बना देंगें। —इब्ने माजा

और हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें हुक्म दिया कि हम अपने घरों में भी मस्जिदें यानी नमाज़ पढ़ने की मख़्सूस जगहें बनायें और उनको पाक साफ़ रखने का एहितमाम करें। —क़ुर्तबी

और असल बात यह है कि लफ़्ज़ تُرْفَعَ में मस्जिदों का बनाना भी दाख़िल है ओर उनकी तअज़ीम व तक्रीम और पाक व साफ़ रखना भी, पाक व साफ़ रखने में यह भी दाख़िल है कि हर निजासत और गंदगी से पाक रखें, और यह भी दाख़िल है कि उनको हर बदबू की चीज़ से पाक रखें। इसीलिए रसूल-ए-करीम सल्ल० ने लहसुन या प्याज़ खाकर बग़ैर मुँह साफ़ किये हुए मस्जिद में आने से मना फ़रमाया है। जो आम हदीस की किताबों में मारूफ़ है, सिग्रेट, हुक्क़ा तम्बाक़ू का पान खाकर मस्जिद में जाना भी उसी हुक्म में है मस्जिद में मिट्टी का तेल जलाना, जिसमें बद्बू होती है वह भी उसी हुक्म में है।

सही मुस्लिम में हज़रत फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है फ़रमाया कि मैंने देखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस शख़्स के मुँह से लहसुन या प्याज़ की बदबू महसूस फ़रमाते थे उसको मस्जिद से निकाल कर बक़ीअ में भेज देते थे, और फ़रमाते थे कि जिसको लहसुन प्याज़ खाना ही हो तो उसको ख़ूब अच्छी तरह पकाकर खाये कि उनकी बदबू मारी जाये। हज़रात फ़ुक़हा ने इस हदीस से इस्तिदलाल करके फ़रमाया कि जिस शख़्स को कोई ऐसी बीमारी हो कि उसके पास खड़े होने वालों को उससे तक्लीफ़ पहुंचे उसको भी मस्जिद से हटाया जा सकता है उसको खुद चाहिए कि जब ऐसी बीमारी में है तो नमाज़ घर में पढ़े।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 6, पेज 414, पारा 18, सूरः नूर

रफ़ा-ए-मसजिद का मतलब

रफ़ा-ए-मसाजिद का मफ़्हूम जम्हूर सहाबा व ताबिईन के नज़दीक यही है कि मस्जिदें बनाई जायें और उनको हर बुरी चीज़

से पाक साफ़ रखा जाये। कुछ हज़रात ने इसमें मसजिदों की ज़ाहिरी शान व शौकत और तामीरी बुलन्दी को भी दाख़िल क़रार दिया है।

हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने मसजिद-ए-नब्वी की तामीर साल की लकड़ी से शानदार बनाई थी। और हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने मसजिद-ए-नब्वी में नक़्श व निगार और तामीरी ख़ूबसूरती का काफ़ी एहतमाम करवाया था और यह ज़माना अजला सहाबा का था किसी ने उनके काम पर इनकार नहीं किया और बाद के बादशाहों ने तो मसजिदों की तामीरात में बड़े अम्वाल ख़र्च किये हैं। वलीद बिन अब्दुल मुल्क ने अपने ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में दमिश्क़ की जामा मसजिद की तामीर व तज़ईन पर पूरे मुल्क शाम की सालाना आमदनी से तीन गुना ज़्यादा माल ख़र्च किया। उनकी बनाई हुई मसजिद आज तक क़ायम है। इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रह० के नज़दीक अगर नाम व नमूद और शोहरत के लिए न हो अल्लाह के नाम और घर की ताज़ीम की नीयत से कोई शख़्स मसजिद की तामीर शानदार बुलन्द व मुस्तहकम ख़ूबसूरत बनाये तो कोई मनाही नहीं बल्कि उम्मीद सवाब की है।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 6, पेज 415, पारा 18, सूरः नूर

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का बुढ़िया की नसीहत से रोना

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एक मर्तबा चन्द सहाबा की जमाअत के साथ बड़े ज़रूरी काम से तशरीफ़ ले जा रहे थे रास्ते में एक बुढ़िया मिली जिसकी कमर मुबारक भी झुक गई थी और

लाठी के सहारे से आहिस्ता-आहिस्ता चल रही थीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया किफ़ या उमर! उमर ठहर जा। कहाँ लपका जा रहा है? हज़रत उमर रज़ि० ठहर गये और बुढ़िया लाठी के सहारे सीधी खड़ी हो गई और फ़रमाया ऐ उमर! मेरे सामने तेरे ऊपर तीन दौर गुज़र चुके हैं। एक दौर तो वह था कि तू सख़्त गर्मी के ज़माने में ऊँट चराया करता था, और ऊँट भी चराने नहीं आते थे, सुब्ह से शाम तक हज़रत उमर रज़ि० चराकर आते थे तो ख़त्ताब की मार पढ़ती थी कि ऊँटों को अच्छी तरह चराकर क्यों नहीं लाया? उनकी बहन उमर को यह कहती थी कि उमर तुझ से तो फली नहीं फूटती तो उस बुढ़िया ने कहा तू ऊँट चराया करता था और तेरे सर पर टाट का टुक्ड़ा होता था और हाथ में पत्ते झाड़ने का आंकड़ा होता था, दूसरा दौर वह आया कि लोगों ने तुझे उमैर कहना शुरू किया इसलिए कि अबू जहल का नाम भी उमर था उसकी तरफ़ से पाबन्दी थी कि मेरे नाम पर नाम न रखा जाये घर वालों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के नाम में तस्ग़ीर करके उमैर कहना शुरू कर दिया था। 2 हिजरी में ग़ज़वा-ए-बद्र हुआ। और उसमें अबू जहल मारा गया उस वक़्त तक उनको उमैर ही कहा जाता था। बुढ़िया ने कहा कि अब तेरा दौर यह है कि अब तुझे न कोई उमैर कहता था, न उमर, बल्कि अमीरूल मोमिनीन कहकर पुकारते हैं, इस तम्हीद के बाद बुढ़िया ने कहा: اِتَّقِ اللّٰهَ تَعَالٰى فِى الرَّعِيَّةِ रिआया के बारे में अल्लाह से डरते रहना, अमीरूल मोमिनीन बनना आसान है मगर हक़ वाले का हक़ अदा करना मुश्किल है, कुल हुक़ूक़ के बारे में बाज़ पुरस होगी, इसलिए हर हक़ वाले का हक़ अदा करो। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ज़ार-व-क़तार रो रहे हैं यहां तक कि दाढ़ी-ए-मुबारक से

टप-टप आँसू गिर रहे हैं। सहाबा जो साथ थे उन्होंने बुढ़िया की तरफ़ इशारा किया कि बस तशरीफ़ ले जाओ। हज़रत उमर रज़ि० के रोने की वजह से ज़बान भी न उठ सकी इशारे से ही मना फ़रमा दिया कि इनको फ़रमाने दो जो फ़रमा रही हैं जब वह चली गईं तब सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में से किसी ने पूछाः कि यह बुढ़िया कौन थीं जिसने आपका इतना वक़्त ज़ाये किया? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि अगर यह सारी रात खड़ी रहतीं तो उमर यहाँ से सरकने वाला नहीं था बजुज़ फ़ज्र की नमाज़ के। यह बीबी साहिबा ख़ौला बिन्त सोलबा हैं जिनकी बात की सुनवाई सातवें आसमान के ऊपर हुई और हक़ तआला ने इर्शाद फ़रमाया

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِیْ تُجَادِلُكَ فِیْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِیْٓ اِلَی اللّٰهِ الْاٰیَةِ.

(سورۃ المجادلہ، آیت:۱)

तर्जुमाः– बिल्-यक़ीन अल्लाह ने उस औरत की बात सुन ली जो आप से अपने शौहर के बारे में झगड़ रही थी और अल्लाह के आगे झींक रही थी। फ़रमाया उमर की क्या मजाल थी कि उनकी बात न सुने जिनकी बात सातवें आसमान के ऊपर सुनी गई।

—इस्लाम में इमानतदारी की हैसियत और मुक़ाम, पेज 18,
वअ़ज़ हज़रत मौलाना मुफ़्ती इफ़्तिख़ार साहब

हज़रत यहया उन्दुलसी की अमानतदारी

यहया उन्दुलसी (उन्दुलस जो किसी वक़्त में इल्म व फ़न का ख़ुसूसियत से इल्म व हदीस का मर्कज़ था हाफ़िज़ इब्ने अब्दुल बर और अल्लामा हमीदी और शैख़ अक्बर जैसी शख़्सियतें वहाँ की

मिट्टी से पैदा हुई) हदीस पाक का सबक़ देते थे और बे-शुमार लोग उनसे फ़ायदा उठाया करते थे। एक दिन हज़रत यहया ने पढ़ाने की लम्बी छुट्टी कर दी, तलूबा ने मालूम किया कि हज़रत इतनी लम्बी छुट्टी जिसकी मुद्दत भी मुतईयन नहीं किस वजह से की गई? फ़रमाया मुझे अफ़रीक़ा के आख़िरी किनारे पर क़ैरवान जाना है, अर्ज़ किया कि हज़रत क्यूँ वहाँ तो जाना बड़ा ही मुश्किल है, बड़े-बड़े बन हैं, और ज़हरीले जानवर। फ़रमाया कि एक बक़्क़ाल यानी लाला के मेरे तरफ़ साढ़े तीन आने यानी एक दिरहम है। उनके अदा करने के लिए जा रहा हूँ। लोगों ने अर्ज किया कि हज़रत एक दिरहम ही तो है। फ़रमाया मुझे एक हदीस पहुंची है और फिर अपनी सनद के साथ हदीस पढ़ी कि एक लाख एक लाख, एक लाख, एक लाख, एक लाख, एक लाख यानी छः लाख का नफ़्ली सद्क़ा करने में इतना सवाब नहीं जितना एक दिरहम हक़ वाले का अदा करने का सवाब है। अल्लाह हमें भी हुक़ूक़ अदा करने वाला बनाये और जिन लोगों ने हुक़ूक़ अदा किये हैं उनके सद्क़े और तुफ़ैल में हमें भी ईमान के तक़ाज़ों को पूरा करने वाला बना दे। आमीन अल्लाहुम्मा आमीन

—इस्लाम में इमानतदारी की हैसियत और मुक़ाम, पेज 30,

वाज़ः हज़रत मौलाना मुफ़्ती इफ़्तिख़ार साहब

एक हज़ार जिल्दों वाली तफ़्सीर

एक तफ़्सीर "حدائق ذات بهجة" एक हज़ार जिल्दों में थी अब उसका वजूद बाक़ी नहीं रहा। 25 जिल्दों में तो सूरः फ़ातिहा की तफ़्सीर थी और पाँच जिल्दों में बिस्मिल्लाह की तफ़्सीर थी।—इल्म कैसे हासिल किया जाता है, पेज 520

वाज़ः हज़रत मौलाना मुफ़्ती इफ़्तिख़ार साहब

अत्तहिय्यात सीखने के लिए एक महीने का सफ़र

इसी हदाईक़ के मुक़द्दमे में एक वाक़िआ रूबी करके नक़ल किया है. कोई हवाला या कोई तख़्रीज इसकी नहीं फ़रमाई, एक शख़्स हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर-ए-ख़िलाफ़त में मुल्क शाम से मदीना तैय्यबा हाज़िर हुए 70 या 80 साल उनकी उम्र थी। हज़रत उमर रज़ि० ने देखाः धूप में सफ़र करने की वजह से बिल्कुल स्याह फ़ाम हो गये थे, ज़मीन का रंग उनकी रंगत से ज़्यादा साफ़ है, बाल बढ़े हुए हैं। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा कि कैसे तशरीफ़ लाये? इस कमज़ोरी और बुढ़ापे में आपने इतना लम्बा सफ़र क्यों किया? बड़े मियाँ ने कहा اَلتَّحِيَّاتُ सीखने के लिए आया हूँ। इतनी बात सुनकर हज़रत उमर रज़ि० ऐसे रोए कि साहब-ए-हदाइक़ के अल्फ़ाज़ हैः حَتّٰى ابْتَلَّتْ لِحْيَتُهٗ इतना रोए कि दाढ़ी मुबारक तर हो गई, और टप-टप आँसू गिरने लगे, देर तलक रोते रहे और फ़िर क़सम खाकर फ़रमायाः क़सम है उस ज़ात आली की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है तुम्हें अज़ाब नहीं दिया जाएगा। क्यूँ? दीन की एक बात सुनने और सीखने के लिए उन्होंने अपने घर को छोड़ा और ऊँट के ऊपर उन्होंने वक़्त गुज़ारा।

तशहहुद सीखने के लिए सफ़र की वजह

सवाल पैदा होता है क्या मुल्क शाम में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में यह इंतज़ाम नहीं था कि कोई किसी को नमाज़ सिखा सके? जवाब यह है कि इंतिज़ाम था बड़े-बड़े सहाबा

रज़ियल्लाहु अन्हुम वहाँ मौजूद थे तो फिर क्या वजह है कि उन्होंने मुल्क शाम से मदीना तैय्यबा का सफ़र किया?

तशह्हुद नक़ल करने वाले सहाबी

इसकी वजह यह है कि اَلتَّحِيَّات के नक़ल करने वाले 24 सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं। अहादीस में ग़ौर करने से मालूम होता है कि सैग़ों में और अल्फ़ाज़ में जुज़वी इख़्तिलाफ़ है। कहीं तो है: شَهِدْتُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَشَهِدْتُ कहीं है: بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى بَرَكَةِ اللّٰهِ اَنَّ مُحَمَّدًا الرَّسُوْلُ اللّٰهِ ग़र्ज कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की अत्तहिय्यात और है। हज़रत सय्यदा आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की अत्तहिय्यात और है। हज़रत जाबिर रज़ि० की अत्तहिय्यात और है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ि० की अत्तहिय्यात और है। इसी तरह 24 सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अत्तहिय्यात नक़ल करने वाले हैं। लेकिन हमारे इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत इब्ने मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वाली अत्तहिय्यात इख़्तियार फ़रमाई है। और इस तरजीह की 22 वजूहात शर्राह हदीस ने बयान फ़रमाई है। इनाया फ़तुहुल क़दीर और फ़िक्ह की मुख़्तलिफ़ किताबों में इन वजूहात की तफ़्सील बयान की गई है इनमें से एक वजह यह है कि वह बड़े मियाँ इसलिए सफ़र करके आये थे, ताकि यह मालूम करें कि एहल-ए-मदीना का अमल कौन सी अत्तहिय्यात का है, क्योंकि मदीना-ए-पाक में अभी वह सहाबा भी मौजूद थे जिन्होंने रसूल-ए-पाक अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पीछे नमाज़ अदा की है तो मालूम हो जाये कि उन्होंने कौन सी अत्तहिय्यात रसूल-ए-पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुनी है उन्होने यह सफ़र इसलिए किया।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़्लाक़

क़ुबा तशरीफ़ ले जाने के लिए हिमार (गधे) की नंगी कमर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सवार हुए और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्ल० के साथ थे तो इर्शाद फ़रमाया कि अच्छा जाओ तुम भी सवार हो जाओ। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० में काफ़ी वज़न था, चढ़ने के लिए उछले मगर नहीं चढ़ सके तो हुज़ूर सल्ल० को लिपट गये जिससे दोनों गिरे। फिर हुज़ूर सल्ल० सवार हुए और फ़रमाया कि अबू हुरैरह तुम्हें भी सवार कर लूँ, अर्ज़ किया जैसे राये आली हो, फ़रमाया कि अच्छा चढ़ो, वह नहीं चढ़ सके बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को साथ लेकर गिरे। आप सल्ल० ने फिर सवार करने के लिए पूछा तो हुज़ूर ने अर्ज़ किया कि उस ज़ात पाक की क़सम जिसने आपको हक़ के साथ मबूऊ़स फ़रमाया है कि तीसरी दफ़ा में आपको नहीं गिराऊंगा लिहाज़ा अब सवार नहीं होता।

हुज़ूर-ए-अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी सफ़र में थे कि एक बकरी पकाने की तज्वीज़ हुई। एक शख़्स ने कहा कि उसको ज़िब्ह करना मेरा ज़िम्मे है, दूसरा बोला कि उसकी खाल खींचना मेरे ज़िम्मे, तीसरे ने कहा उसका पकाना मेरे ज़िम्मे है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि लकड़ियाँ इकट्ठी करना मेरे ज़िम्मे है। आप सल्ल० के साथियों ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! यह हम ही आप की तरफ़ से कर लेंगे। आप सल्ल० ने फ़रमाया कि हाँ मुझे मालूम है कि तुम मेरी तरफ़ से कर लोगे लेकिन मुझे यह बात नागवार है कि मैं अपने साथियों से इम्तियाज़ी शान में रहूँ। और

अल्लाह पाक को (भी) नापसंद है अपने बंदे की यह बात (कि वह अपने रफ़ीक़ों से इमतियाज़ी शान में रहे।।

हुज़ूर-ए-अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी सफ़र में नमाज़ के लिए उतरे और मुसल्ले की तरफ़ बढ़े फिर लौटे अर्ज़ किया गया कि कहाँ का इरादा फ़रमा लिया है, इर्शाद फ़रमाया कि अपनी ऊँटनी को बांधता हूँ। अर्ज़ किया कि इतने से काम के लिए हुज़ूर को तक्लीफ़ करने की क्या ज़रूरत है, हम खुद्दाम ही इसको बांध देंगे। इर्शाद फ़रमाया कि तुममें से कोई भी शख़्स दूसरे लोगों से मदद न तलब करे अगरचे मिस्वाक तोड़ने में हो।

एक रोज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के साथ बैठे हुए खजूरें खा रहे थे कि हज़रत सुहैब रज़ि० आशूब-ए-चश्म की वजह से एक आँख को ढाँके हुए आ गये, सलाम करके खजूरों की तरफ़ झुके तो हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि आँख तो दुख रही है और शीरीनी खाते हो? अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! अपनी अच्छी आँख की तरफ़ से खाता हूँ इसपर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हंसी आ गई।

एक रोज़ रतब नोश फ़रमा रहे थे कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आ गये उनकी आँख दुख रही थी वह भी खाने के क़रीब हो गये, इर्शाद फ़रमाया कि आशूब-ए-चश्म की हालत में भी शीरीनी खाओगे? वह पीछे हट कर एक तरफ़ जा बैठे। हुज़ूर सल्ल० ने उनकी तरफ़ देखा तो वह भी हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ देख रहे थे, आप सल्ल० ने उनकी तरफ़ खजूर फैंक दी और फिर एक, फिर एक और इसी तरह सात खजूरें फैंकी, फ़रमाया कि तुमको काफ़ी हैं जो खजूर ताक़ अदद के मुवाफ़िक़ खाई जाये वह मुज़िर (नुक़्सान देने वाली) नहीं। –माहनामा अल-महमूद, पेज 20 मई-जून 2001 ई०

महंगा बेचने के लिए ग़ल्ला जमा करना मुहलिक बीमारी का सबब है

मुसनद की एक रिवायत में है कि अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर फारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद से निकले तो अनाज फैला हुआ देखा, पूछा यह ग़ल्ला कहाँ से आ गया? लोगों ने कहा बिकने के लिए आया है, आपने दुआ की ख़ुदाया इसमें बरकत दे, लोगों ने कहा यह ग़ल्ला गिरा भाव बेचने के लिए पहले से जमा कर लिया था। पूछा किसने जमा किया था? लोगों ने कहा एक तो फ़रोख़ ने जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के मौला हैं और दूसरे आप के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम ने। आपने दोनों को बुलवाया और फ़रमाया तुमने ऐसा क्यों किया? जवाब दिया कि हम अपने मालों से ख़रीदते हैं लिहाज़ा जब चाहें बेचें, हमें इख़्तियार है। आप ने फ़रमाया सुनो मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि जो शख़्स मुसलमानों में महंगा बेचने के ख़्याल से ग़ल्ला रोककर रखे उसे ख़ुदा तआला मुफ़्लिस कर देगा या जुज़ामी। यह सुन कर हज़रत फ़रोख़ तो फ़रमाने लगे कि मेरी तौबा हैं मैं ख़ुदा तआला से फिर आप से अहद करता हूँ कि फिर यह काम न करूंगा, लेकिन हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० के ग़ुलाम ने फिर भी कहा कि हम अपने माल से ख़रीदते हैं और नफ़ा उठाकर बेचते हैं इसमें क्या हर्ज है? रावी-ए-हदीस हज़रत अबू यहया रह० फ़रमाते हैं कि मैंने फिर देखा कि उसे जज़ाम हो गया और जुज़ामी बना फिरता था।

इब्ने माजा में है कि जो शख़्स मुसलमानों का ग़ल्ला गिरे भाव बेचने के लिए रोक रखे अल्लाह तआला उसे मुफ़्लिस कर देगा या

जुज़ामी।

—तफ़सीर इब्ने कसीर, पेज 372

इंसान के तीन दोस्त

इल्म, दौलत और इज़्ज़त तीनों दोस्त थे। एक मर्तबा उनके बिछड़ने का वक़्त आ गया, इल्म ने कहा मुझे दरसगाहों में तलाश किया जा सकता है, दौलत कहने लगी मुझे उमरा और बादशाहों के महलों में तलाश किया जा सकता है, इज़्ज़त ख़ामोश रही, इल्म और दौलत ने इज़्ज़त से उसकी ख़ामोशी की वजह पूछी तो इज़्ज़त ठंडी आह भरते हुए कहने लगी कि जब मैं किसी से बिछुड़ जाती हूँ तो दोबारा नहीं मिलती।

दाअी की 10 सिफ़ात

﴿١﴾ فلذالك فادع.　　﴿٢﴾ واستقم كما امرت.

﴿٣﴾ ولا تتبع اهوآء هم　　﴿٤﴾ وقل امنت بما انزل الله من كتٰب

﴿٥﴾ وامرت لا عدل بينكم　　﴿٦﴾ الله ربنا وربكم.

﴿٧﴾ لنا اعمالنا ولكم اعمالكم.　　﴿٨﴾ لا حجة بيننا وبينكم.

﴿٩﴾ الله يجمع بيننا.　　﴿١٠﴾ واليه المصير.

1. सो आप इसी तरफ़ (इनको बराबर) बुलाते रहिए।
2. और जिस तरह आपको हुक्म हुआ है (उसपर) मुस्तक़ीम रहिए।
3. और उनकी (फ़ासिद) ख़्वाहिशों पर न चालिए।
4. और आप कह दीजिए कि अल्लाह ने जितनी किताबें नाज़िल फ़रमाई हैं सब पर ईमान लाता हूँ।

5. और मुझको यह (भी) हुक्म हुआ है कि (अपने और) तुम्हारे दर्मियान में अदल रखूँ।
6. अल्लाह हमारा भी मालिक है और तुम्हारा भी मालिक है।
7. हमारे आमाल हमारे लिए और तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिए।
8. हमारी तुम्हारी कुछ बहस नहीं
9. अल्लाह हम सबको जमा करेगा।
10. और (इसमें शक ही नहीं कि) उसी के पास जाना है।

हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने फ़रमाया कि यह आयत दस मुस्तक़िल जुम्लों पर मुश्तमिल है और हर जुम्ला ख़ास अहकाम पर मुश्तमिल है। गोया इसमें अहकाम की दस फ़ज़ीलतें मज़्कूर हैं। इसकी नज़ीर पूरे क़ुरआन में एक आयतलकुर्सी के सिवा कोई नहीं। आयतलकुर्सी में भी दस अहकाम की दस फ़ज़ीलतें आती हैं।

तौबा की हक़ीक़त

तौबा के लफ़्ज़ी मआनी लौटने और रूजू करने के हैं और शरई इस्तलाह में किसी गुनाह से बाज़ आने को तौबा कहते हैं और इसके सही व मोतबर होने के लिए तीन शर्तें हैं। एक यह कि जिस गुनाह में फ़िलहाल मुब्तला है उसको फ़ौरन छोड़ दे, दूसरे यह कि माज़ी में जो गुनाह हुआ हो उस पर नादिम हो और तीसरे यह कि आइंदा उसे छोड़ने का पक्का इरादा कर ले। और कोई शरई फ़रीज़ा छोड़ा हो तो उसे अदा या क़ज़ा करने में लग जाये और अगर हुक़ूक़ुल इबाद से मुतअल्लिक़ है तो इसमें एक शर्त यह भी है कि अगर किसी का माल अपने ऊपर वाजिब है और वह शख़्स ज़िन्दा है तो या उसे माल लौटाये अगर वारिस मौजूद नहीं

है तो बैतुल माल में दाख़िल कराये। बैतुल माल भी नहीं है या उसका इंतज़ाम सही नहीं है तो उसकी तरफ़ से सदक़ा कर दे और अगर कोई ग़ैर माली हक़ किसी का अपने ज़िम्मे वाजिब है, जैसे किसी को नाहक़ सताया है बुरा भला कहा है या उसकी ग़ीबत की है तो उसे जिस तरह मुमकिन हो राज़ी करके उससे मआफ़ी हासिल करे।

—मआरिफ़ुर क़ुरआन, हिस्सा 7, पेज 695

नीयत सब कुछ है

शैख़ सअ्दी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि एक बादशाह और एक दरवेश का इंतक़ाल हुआ, किसी ने ख़्वाब में देखा कि बादशाह तो जन्नत में टहल रहा है और दरवेश दोज़ख़ में पड़ा है। किसी बुज़ुर्ग से ताबीर मालूम की तो कहा कि वह बादशाह साहब-ए-तख़्त व ताज था मगर दरवेशी की तमन्ना करता था और दरवेशों को बड़ी हसरत की निगाह से देखता था, और यह दरवेश थे तो फ़क़ीर-ए-बे-नवा, मगर बादशाह को रश्क की निगाह से देखते थे।

इसी तरह अगर कोई मसिजद में है और उसका दिल लगा हुआ है कि जल्दी नमाज़ हो और मैं अपने काम को जाऊं तो गोया वह मस्जिद से निकल चुका और कोई बाज़ार में है और उसका दिल मस्जिद व नमाज़ में लगा हुआ है तो गोया वह नमाज़ ही में है। यही मानी है انتظار الصلٰوة بعد الصلٰوة के। ज़ुहद ख़ानक़ाह में बैठने का नाम नहीं है, मालूम नहीं हम कहाँ हैं इसका हाल तो क़्यामत के दिन मालूम होगा।

فمن ثقلت موازينه فاولٰئك هم المفلحون.

वहाँ इधर का पल्ला भारी हुआ तो उधर, अगर उधर का पल्ला भारी हुआ तो इधर। —हज़रत मौलाना याक़ूब साहब मुजद्ददी रह०

माख़ूज़ सोहबत ब-एहले दिल, तामीर हयात, पेज 21, 10 सितम्बर 2001 ई०

टी०वी० के साथ दफ़न होने का इब्रतनाक वाक़िआ

जब से टी०वी० देखने का रिवाज बढ़ा है, टी०वी० देखने वालों के मरने के बाद क़ब्र में अज़ाब होने के बड़े ही इब्रतनाक वाक़िआत भी सामने आ रहे हैं, जिस से हमें सबक़ लेना चाहिए क्योंकि अल्लाह तआला यह वाक़िआत इसलिए दिखाते हैं, ताकि हम लोग इब्रत हासिल करें। चुनांचे एक किताब "टी०वी० की तबाहकारियाँ" में एक औरत का बड़ा इब्रतनाक वाक़िआ लिखा है कि रमज़ान शरीफ़ के महीने में इफ़तार के वक़्त घर में एक माँ और एक बेटी थी, माँ ने बेटी से कहा कि आज घर पर मेहमान आने वाले हैं, इफ़तारी तैयार करनी है इसलिए तुम भी मेरी मदद करो और काम में लगो और इफ़तार तैयार कराओ! बेटी ने साफ़ ज़वाब दिया कि अम्माँ इस वक़्त टी०वी० पर एक ख़ास प्रोग्राम आ रहा है, मैं उसको देखना चाहती हूँ उससे फ़ारिग़ होकर कुछ करूंगी। चूंकि वक़्त कम था इसलिए माँ ने कहा कि तुम उसको छोड़ दो पहले काम कराओ मगर बेटी ने माँ की बात सुनी अनसुनी कर दी और फिर इस ख़्याल से ऊपर की मंज़िल पर टी०वी० लेकर चली गई कि अगर मैं यहाँ नीचे बैठी रही तो माँ बार-बार मुझे मना करेगी और काम के लिए बुलाएगी चुनांचे ऊपर कमरे में जाकर अंदर से कुंडी लगाई और प्रोग्राम देखने में

मशग़ूल हो गई, नीचे बेचारी माँ आवाज़ देती रह गई लेकिन उसने कुछ परवाह न की फिर माँ से इफ़तारी के लिए जो तैयारी हो सकी कर ली इतने में मेहमान भी आ गये और सब लोग इफ़तारी के लिए बैठ गये, माँ ने फिर बेटी को आवाज़ दी ताकि वह भी इफ़तार कर ले लेकिन बेटी ने कुई जवाब नहीं दिया तो माँ को तशवीश हुई, चुनांचे वह ऊपर गई और दरवाज़े पर जाकर दस्तक दी और उसको आवाज़ दी लेकिन अंदर से कोई जवाब नहीं आ रहा था, चुनांचे माँ ने उसके भाइयों और उसके बाप को ऊपर बुलाया, उन्होंने आवाज़ दी और दस्तक दी मगर जब अंदर से कोई जवाब न आया। आख़िर दरवाज़ा तोड़ा गया जब दरवाज़ा तोड़ कर अंदर गये तो देखा कि टी०वी० के सामने औंधे मुँह ज़मीन पर पड़ी है और इंतक़ाल हो चुका है अब सब घर वाले परेशान हो गये उसके बाद जब उसकी लाश उठाने की कोशिश की तो उसकी लाश न उठी और ऐसा महसूस होने लगा कि वह कई टन वज़नी हो गई है, अब सब लोग परेशान हो गये कि उसकी लाश क्यों नहीं उठ रही है, इसी परेशानी में एक साहब ने जो टी०वी० उठाया तो उसकी लाश भी उठ गई अब सूरतहाल यह हो गई कि अगर टी०वी० उठायें तो उसकी लाश हल्की हो जाये अगर टी०वी० रख दें तो उसकी लाश भारी हो जाये उस टी०वी० को उठाकर उसकी लाश नीचे लाये और उसको ग़ुस्ल दिया, कफ़न दिया। जब उसका जनाज़ा उठाने लगे तो फिर उसकी चारपाई ऐसी हो गई जैसे किसी ने उसके ऊपर पहाड़ रख दिया, लेकिन जब टी०वी० को उठाया तो आसानी से चारपाई भी उठ गई, तमाम घर वाले शर्मिन्दगी और मुसीबत में पड़ गये, आख़िर जब टी०वी० जनाज़े के आगे-आगे चला तब उसका जनाज़ा घर से

निकला अब उसी हालत में टी०वी० के साथ उस पर नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ी गई और क़ब्रस्तान ले जाने लगे, आगे टी०वी० पीछे जनाज़ा चला। फिर क़ब्रस्तान में ले जाने के बाद जब मय्यत को क़ब्र में उतारा और क़ब्र को बन्द करके और उसको ठीक करके जब लोग वापस जाने लगे तो लोगों ने कहा कि अब टी०वी० वापस ले चलो लेकिन जब टी०वी० उठाकर ले जाने लगे तो उस लड़की की लाश क़ब्र से बाहर आ गई, कितनी इब्रत की बात है। فاعتبروا یا اولی الابصار (ऐ अक़लमन्दो इब्रत हासिल करो) लोगों ने जल्दी सी टी०वी० को वहीं रख दिया और दोबारा टी०वी० उठाकर चले तो दोबारा उस लड़की की लाश क़ब्र से बाहर आ गई, अब लोगों ने कहा कि यह तो टी०वी० के साथ दफ़न होगी इसके अलावा कोई और सूरत नज़र नहीं आती। आख़िरकार उसकी लाश क़ब्र में तीसरी बार रखी और टी०वी० भी उसके सरहाने रख दिया और उसके साथ ही उसको दफ़न कर देना पड़ा। العیاذ باللہ अब ज़रा सोचिए कि उस लड़की का क्या हश्र हुआ होगा और क्या अंजाम हुआ होगा हमारी इब्रत के लिए अल्लाह तआला ने हमें दिखा दिया अब भी अगर हम इब्रत न पकड़ें तो हमारी ही ना-लायक़ी है। اَللّٰهُمَّ احْفَظْنَا

—तामीर-ए-हयात, 10 सितम्बर, 2001

दिल चार क़िस्म के हैं

मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दिल चार क़िस्म के हैं।

1. एक तो साफ़ दिल जो रौशन चिराग़ की तरह चमक रहा हो।

2. दूसरे वह दिल जो ग़िलाफ़ आलूद हो।
3. तीसरे वह दिल जो उलटे हों।
4. चौथे वह दिल जो मख़्लूत हैं।

पहला दिल तो मोमिन का है जो पूरी तरह नूरानी है। दूसरा काफ़िर का दिल है जिस पर पर्दे पड़े हुए हैं। तीसरा दिल ख़ालिस मुनाफ़िक़ों का है जो जानता है और इनकार करता है। चौथा दिल उस मुनाफिक़ का है जिसमें ईमान और निफ़ाक़ दोनों जमा हैं ईमान की मिसाल उस सब्ज़े की तरह है जो पाकीज़ा पानी से बढ़ रहा हो और निफ़ाक़ की मिसाल उस फोड़े की तरह है जिसमें पीप और ख़ून बढ़ता ही जाता है। अब जो माद्दा बढ़ जाये वह दूसरे पर ग़ालिब आ जाता है।

इस हदीस की इस्नाद बहुत ही उम्दा हैं।

—तफ़सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 1, पेज 89

तकब्बुर की दो अलामतें

हदीस में है: "اَلْكِبْرُ بَطَرُ الْحَقِّ وَغَمْطُ النَّاسِ."

1. हक़ का इनकार 2. लोगों को हक़ीर समझना किब्र है।

—तफ़सीर मस्जिद नब्वी सल्ल०, पेज 139

हर काम में ऐतदाल होना चाहिए

एक रात नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ से हुआ तो देखा वह पस्त आवाज़ में नमाज़ पढ़ रहे थे, फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को देखने का इत्तिफ़ाक़ हुआ तो वह ऊँची आवाज़ से नमाज़

पढ़ रहे थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोनों से पूछा तो हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने फ़रमाया मैं जिससे मसरूफ़े-ए-मुनाजात था वह मेरी आवाज़ सुन रहा था। हज़रत उमर फारूक़ रज़ि० ने जवाब दिया कि अपनी आवाज़ को क़द्रे बुलन्द करो और हज़रत उमर रज़ि० से कहा अपनी आवाज़ को कुछ पस्त रखो।

—तफ़्सीर मस्जिद नब्वी सल्ल०, पेज 798,
तफ़्सीर इब्ने कसीर, सूरः बनी इस्राईल, आयत 110

सबसे ज़्यादा क़ाबिल-ए-रश्क़ बंदा

अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरे दोस्तों में बहुत ज़्यादा क़ाबिल-ए-रश्क़ मेरे नज़्दीक वह मोमिन है जो सुब्क बार (यानी दुनिया के साज़ व सामान और माल व अयाल के लिहाज़ से बहुत हल्का-फुल्का) हो, नमाज़ में उसका बड़ा हिस्सा हो और अपने रब की इबादत ख़ूबी के साथ और सिफ़त एहसान के साथ करता हो और उसकी इताअत और फ़रमांबरदारी उसका शिआर हो। और यह सबकुछ इख़्फ़ा के साथ और ख़िलवत में करता और वह छुपा हुआ और गुमनामी की हालत में हो, और वह उस पर साबिर व क़ाने हो, फिर रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपन हाथ से चुटकी बजाई (जैसे कि किसी चीज़ के हो जाने पर इज़्हार-ए- तअज्जुब या इज़्हार-ए-हैरत के लिए चुटकी बजाते हैं) और फ़रमाया जल्दी आ गई उसकी मौत, और उस पर रोने वालियाँ भी कम हैं और उसका तर्का (छोड़ा हुआ सामान) भी बहुत थोड़ा सा है। —मुस्नद अहमद, जामेअ तिर्मिज़ी, सुनन इब्ने माजा

फ़ायदाः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इर्शाद का मतलब यह है कि अगरचे मेरे दोस्तो और अल्लाह के मक़्बूल बन्दों के अलवान व अहवाल मुख़्तलिफ़ हैं, लेकिन उनमें बहुत ज़्यादा क़ाबिल-ए-रश्क़ ज़िन्दगी उन एहल-ए-ईमान की है, जिनका हाल यह है कि दुनिया के साज़ व सामान और माल व अयाल के लिहाज़ से वह बहुत हल्के, मगर नमाज़ और इबादत में उनका ख़ास हिस्सा है, और इसके बावजूद ऐसे ना-मारूफ़ और गुमनाम कि आते जाते कोई उनकी तरफ़ उंगली उठाके नहीं कहता कि यह फ़्लां बुज़ुर्ग और फ़्लां साहब हैं, और उनकी रोज़ी बस बक़द्रे किफ़ाफ़, लेकिन वह उस पर दिल से साबिर व क़ाने... जब मौत का वक़्त आया तो एक दम रूख़्सत न पीछे ज़्यादा माल व दौलत, और न जायदादों, मकानात और बाग़ात की तक़्सीम के झगड़े, और न ज़्यादा उन पर रोने वालियाँ।

बिला शुब्ह बड़ी क़ाबिल रश्क़ है अल्लाह के ऐसे बन्दों की ज़िन्दगी, और अल्हुम्दु लिल्लाह इस क़िस्म की ज़िन्दगी वालों से हमारी यह दुनिया अब भी ख़ाली नहीं है।

—मआरिफ़ुल हदीस, हिस्सा 2, पेज 88

हज़रत सिद्दीक़-ए-अक्बर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने का अजीब वाक़िआ

हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि अलैह ने लिखा है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने इस्लाम से पहले और ज़ुहूर-ए-

नुबूव्वत से पहले शाम की तरफ़ तिजारत के लिए सफ़र फ़रमाया, शाम से क़रीब एक ख़्वाब देखा जिसकी ताबीर आप ने बहीरा राहिब से मालूम की उस राहिब ने कहा अल्लाह तआला आपका ख़्वाब सच्चा करेगा और आपकी क़ौम से एक नबी मबूअूस होगा, आप उनकी हयात में उनके वज़ीर होंगे और वफ़ात के बाद उनके ख़लीफ़ा होंगे, तो इस ख़्वाब को सिद्दीक़े अक्बर ने किसी से ज़ाहिर नहीं किया यहां तक कि हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबूवत अता हुई और ऐलाने नबूवत सुनकर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़-ए-अक्बर रज़ि० हाज़िर हुए और अर्ज़ किया! ऐ मुहम्मद सल्ल०! आपने जो दावा फ़रमाया है उसकी दलील क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इसकी दलील वह ख़्वाब है जो तुमने शाम में देखा था तो ग़ल्बा-ए-ख़ुशी से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुआनिक़ा फ़रमाया और आप सल्ल० की पेशानी का बोसा लिया।

—ख़साइसे कुबरा, हिस्सा 1, पेज 29,

कश्कोल-ए-मअरिफ़त, पेज 97 हज़रत मौलाना हकीम मुहम्मद अख़्तर साहब

एक मुजर्रब अमल बराए आफ़ियत-ए-अहल व अयाल

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मुझे अपनी जान और अपनी औलाद और अपने अहल व अयाल और माल के बारे में ख़ौफ़-ए-ज़रर रहता है, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया सुब्ह व शाम यह पढ़ लिया करोः

بسم الله على دينه ونفسى وولدى واهلى ومالى.

कुछ दिन के बाद यह शख़्स आये तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा अब क्या हाल है? अर्ज़ किया क़सम है उस ज़ात की जिसने हक़ के साथ आपको मब्अूस किया फ़रमाया मेरा सब ख़ौफ़ ग़ायब हो गया। —कन्ज़ुल उम्माल, हिस्सा 2, पेज 636,

कश्कोल मअरिफ़त, पेज 75 हज़रत मौलाना हकीम मुहम्मद अख़्तर साहब

तालिब-ए-दुनिया गुनाहों से नहीं बच सकता

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक दिन फ़रमाया क्या कोई ऐसा है कि पानी पर चले, और उसके पाँव न भीगें? अर्ज़ किया गया हज़रत! ऐसा तो नहीं हो सकता, आप सल्ल० ने फ़रमाया इसी तरह दुनियादार गुनाहों से महफ़ूज़ नहीं रह सकता।

—शुअबुल ईमान, बैहक़ी

फ़ायदाः— साहिब-ए-दुनिया (दुनियादार) से मुराद वही शख़्स है जो दुनिया को मक़्सूद व मतलूब बनाकर उसमें लगे, ऐसा आदमी गुनाहों से कहाँ महफ़ूज़ रह सकता है, लेकिन अगर बंदे का हाल यह हो कि मक़्सद व मतलूब अल्लाह तआला की रज़ा और आख़िरत हो, और दुनिया की मश्ग़ूली को भी वह अल्लाह तआला की रज़ा और आख़िरत की फ़लाह का ज़रिया बनाये तो वह शख़्स दुनियादार न होगा और दुनिया में बज़ाहिर पूरी मश्ग़ूली के बावजूद वह गुनाहों से महफ़ूज़ भी रह सकेगा।

—मआरिफ़ुल हदीस, हिस्सा 2, पेज 70

अल्लाह तआला अपने प्यारों को दुनिया से बचाता है

क़तादा बिन नोमान रहमतुल्लाहि अलैहि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब अल्लाह तआला किसी बंदे से मुहब्बत करता है तो दुनिया से उसको इस तरह परहेज़ कराता है जिस तरह कि तुम में से कोई अपने मरीज़ को पानी से परहेज़ कराता है जबकि उसको पानी से नुक़सान पहुंचता हो। —मुस्नद अहमद, जामे तिर्मिज़ी

फ़ायदाः— दुनिया दर-असल वही है जो अल्लाह से ग़ाफ़िल करे और जिस में मश्ग़ूल होने से आख़िरत का रास्ता खोता हो, तो अल्लाह तआला जिन बन्दो से मुहब्बत करता है और अपने ख़ालिस इनामात से उनको नवाज़ना चाहता है उनको इस मुरदार दुनिया से इस तरह बचाता है जिस तरह कि हम लोग अपने मरीज़ों को पानी से परहेज़ कराते हैं। —मआरिफ़ुल हदीस, हिस्सा 2, पेज 70

ख़ुशहाली चाहने वाली बीवी को अबूद्दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु का जवाब

हज़रत अबूद्दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी उम्मे दरदा से रिवायत है कि मैंने अबूद्दरदा से कहा कि "क्या बात है तुम माल व मन्सब क्यूँ तलब नहीं करते जिस तरह के फ़्लां और फ़्लां करते हैं।" उन्होंने फ़रमाया किः "मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि तुम्हारे आगे एक बड़ी दुश्वार गुज़ार घाटी है उसको गिरां-बार और ज़्यादा बोझ वाले आसानी से पार न कर

सकेंगे, इसलिए मैं भी पसन्द करता हूँ कि उस घाटी को पार करने के लिए हल्का फुल्का रहूँ। (इस वजह से मैं अपने लिए माल व मन्सब तलब नहीं करता)।"

—रिवाह बैहक़ी फ़ी शोबुल ईमान

किसी भाई की मुसीबत पर खुशी का इज़्हार मत करो

हज़रत वासिला इब्ने अल्-सक़अ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम किसी भाई की मुसीबत पर ख़ुशी का इज़्हार मत करो। (अगर ऐसा करोगे तो हो सकता है कि) अल्लाह को उसको उसकी मुसीबत से निजात दे दे और तुमको मुब्तला कर दे। —जामे तिर्मिज़ी

फ़ायदाः— जब दो आदमियों में इख़्तिलाफ़ पैदा होता है और वह तरक़्क़ी करके दुश्मनी व अदावत की हद तक पहुंच जाता है तो यह भी होता है कि एक के मुसीबत में मुब्तला होने से दूसरे को ख़ुशी होती है उसको शमातत कहते हैं हसद और बुग्ज़ की तरह यह ख़बीस आदत भी अल्लाह तआला को सख़्त नाराज़ करने वाली है और अल्लाह तआला कभी कभी दुनिया ही में इसकी सज़ा इस तरह दे देते हैं कि मुसीबत-ज़दा को मुसीबत से निजात देकर और उस पर ख़ुश होने वाले को मुसीबत में मुब्तला कर देते हैं।

—मआरिफ़ुल हदीस, हिस्सा 2, पेज 220

रियाकारों को नसीहत और रूस्वाई की सज़ा

हज़रत जुन्दुब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स कोई अमल सुनाने और शोहरत के लिए करेगा उसको शोहरत देगा और जो कोई दिखावे के लिए कोई नेक अमल करेगा अल्लाह तआला उसको ख़ूब दिखाएगा। —बुख़ारी व मुस्लिम

फ़ायदाः— मतलब यह है कि दिखावे और शोहरत की ग़र्ज़ से नेक आमाल करने वालों को एक सज़ा उनके इस अमल की मुनासिबत से यह भी दी जाएगी कि उनकी इस रियाकारी और मुनाफ़िक़त को ख़ूब मश्हूर किया जायेगा और सबको मुशाहिदा कराया जाएगा कि बदबख़्त लोग यह नेक आमाल अल्लाह के लिए नहीं करते थे, बल्कि नाम व नमूद दिखावे और शोहरत के लिए किया करते थे, अल्-ग़र्ज़ जहन्नम के अज़ाब से पहले उनको एक सज़ा यह मिलेगी कि महशर के सामने उनकी रियाकारी और मुनाफ़िक़त का पर्दा चाक करके सबको उनकी बद्-बातिनी दिखाई जायेगी। اَللّٰهُمَّ احْفَظْنَا —मआरिफ़ुल हदीस, हिस्सा 2, पेज 334

दीन के नाम पर दुनिया कमाने वाले रियाकारों को सख़्त तंबीह

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आख़िरी ज़माने में कुछ ऐसे मक्कार लोग पैदा होंगे जो दीन की आड़ में दुनिया का शिकार

करेंगे, वह लोगों पर अपनी दरवेशी और मिस्कीनी ज़ाहिर करने और उनको मुतअस्सिर करने के लिए भेड़ों की खाल का लिबास पहनेंगे, उनकी ज़बानें शकर से ज़्यादा मीठी होंगी मगर उनके सीनों में भेड़ों के से दिल होंगे। (उनके बारे में) अल्लाह तआला का फ़रमान है क्या यह लोग मेरे ढील देने से धोखा खा रहे हैं या मुझ से निडर होकर मेरे मुक़ाबले में जुरअत कर रहे हैं, तो मुझे अपनी क़सम है कि मैं मक्कारों पर उन्हीं में ऐसा फ़ित्ना खड़ा करूंगा जो उनमें के अक़्लमन्दों और दानाओं को भी हैरान बना के छोड़ेगा। —जामे तिर्मिज़ी

फ़ायदाः— इस हदीस से मालूम हुआ कि रियाकारी की यह ख़ास क़िस्म कि आबिदों, ज़ाहिदों की सूरत बनाकर और अपने अंदरूनी हाल के बिल्कुल उल्टे उन ख़ासान-ए-ख़ुदा की सी नर्म व शीरीं बातें करके अल्लाह के सादा-लौह बन्दों को अपनी अक़ीदत के जाल में फांसा जाये और उनसे दुनिया कमाई जाये, बद्तरीन क़िस्म की रियाकारी है और ऐसे लोगों को अल्लाह तआला की तंबीह है कि वह मरने से पहले इस दुनिया में भी सख़्त फ़ित्नों में मुब्तला किया जाएंगे। —मआरिफ़ुल हदीस, हिस्सा 2, पेज 334

आसान हिसाब

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि मैंने कुछ नमाज़ों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह दुआ करते हुए सुनाः اَللّٰهُمَّ حَاسِبْنِىْ حِسَابًا يَسِيْرًا

तर्जुमाः— ऐ अल्लाह मेरा हिसाब आसान फ़रमा।

मैंने अर्ज़ किया हज़रत आसान हिसाब का क्या मतलब है?

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आसान हिसाब यह है कि बंदे का आमालनामे पर नज़र डाली जाये और उससे दर-गुज़र की जाये (यानी कोई पूछगछ और जिरह न की जाये) बात यह है कि जिसके हिसाब में उस दिन जिरह की जायेगी, ऐ आइशा! (उसकी ख़ैर नहीं) वह हलाक हो जायेगा।

—रवाहु अहमद, मआरिफ़ुल हदीस, हिस्सा 2, पेज 230

रातों को अल्लाह के लिए जागने वालों का जन्नत में बे-हिसाब दाख़िला

अस्मा बिन्त यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमया कि क़्यामत के दिन सब लोग (ज़िन्दा किये जाने के बाद) एक बड़े और हमवार (सीधे) मैदान में जमा किये जाएंगे। (यानी सब मैदान-ए-महशर में जमा हो जाएंगे) फिर अल्लाह का मुनादी पुकारेगा कि कहाँ हैं वह बंदे जिनके पहलू रातों को बिस्तरों से अलग रहते थे (यानी बिस्तर छोड़कर जो रातों को तहज्जुद पढ़ते थे) वह उस पुकार पर खड़े हो जाएंगे और उनकी तादाद ज़्यादा न होगी फिर वह अल्लाह के हुक्म से बग़ैर हिसाब-किताब के जन्नत में चले जाएंगे उसके बाद बाक़ी तमाम लोगों के लिए हुक्म होगा कि वह हिसाब के लिए हाज़िर हों। —रवाहुल बैहक़ी फी शोबुल ईमान

उम्मत-ए-मुहम्मदिया की बहुत बड़ी तादाद का बग़ैर हिसाब के जन्नत में दाख़िला

हज़रत अबू अमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना आप फ़रमाते थे कि मेरे परवरदिगार ने मुझ से वादा फ़रमाया है कि मेरी उम्मत में से 70 हज़ार को वह बग़ैर हिसाब-किताब के जन्नत में भेजेगा और उनमें से हर हज़ार के साथ 70 हज़ार होंगे। और तीन हस्ये और मेरे परवरदिगार हस्यात में से (मेरी उम्मत में से बग़ैर हिसाब और बग़ैर अज़ाब के जन्नत में भेजे जाएंगे)।

फ़ायदाः– जब दोनों हाथ भरकर किसी को कोई चीज़ दी जाती है तो अरबी में उसको हस्या कहते हैं जिसको उर्दू और हिन्दी में लप भरकर देना कहते हैं, तो हदीस का मतलब यह है कि अल्लाह तआला का वादा है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत में से 70 हज़ार को बिला हिसाब और बिला अज़ाब जन्नत में दाख़िल करेगा और फिर उनमें से हर हज़ार के साथ 70 हज़ार और भी उसी तरह बिला हिसाब व अज़ाब जन्नत में जाएंगे और उस सबके अलावा अल्लाह तआला अपनी ख़ास शान-ए-रहमत से उस उम्मत की बहुत बड़ी तादाद को तीन मर्तबा करके और जन्नत में भेजेगा और यह सब वही होंगे जो बग़ैर हिसाब और बग़ैर अज़ाब के जन्नत में दाख़िल होंगे।

سُبْحَانَكَ وَبِحَمْدِكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

इन्तिबाहः– इस क़िस्म की हदीसों की पूरी हक़ीक़त उसी वक़्त खुलेगी जब यह सब बातें अमली तौर पर सामने आएंगी, इस दुनिया में तो हमारा इल्म व इदराक इतना नाक़िस है कि बहुत से इन वाक़िआत को सही तौर पर समझने से भी हम क़ासिर हैं जिनकी ख़बरें हम अख़बारों में पढ़ते हैं मगर इस क़िस्म के वाक़िआत का कभी हमने तजज़िया और मुशाहिदा किया हुआ नहीं होता।

صَدَقَ رَبُّنَا عَزَّوَجَلَّ...... وَمَا أُوْتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا

—रवाहु अहमद, तिर्मिज़ी व इब्ने माजा

ख़ज़ाना-ए-ग़ैब से दुआ पर रोज़ी का मिलना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में एक बंदा अपने अहल व अयाल के पास पहुंचा। जब उसने उनके फ़क्र व फ़ाक़े के हालत में देखा तो (अल्हाह के साथ अल्लाह से दुआ करने के लिए) जंगल की तरफ़ चल दिया, जब उसकी नेक बीबी ने देखा कि (शौहर अल्लाह तआला से मांगने के लिए गये तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम पर भरोसा करके उसने तैयारी शुरू कर दी) वह उठकर चक्की के पास आई और उसको तैयार किया (ताकि अल्लाह तआला के हुक्म से कहीं से कुछ ग़ल्ला आये तो जल्दी से उसको पीसा जा सके) फिर वह तंदूर के पास गई और उसको गरम किया (ताकि आटा पिस जाने के बाद फिर रोटी पकाने में देर न लगे) फिर उसने ख़ुद भी दुआ की और अल्लाह तआला से अर्ज़ किया कि ऐ मालिक! हमें रिज़्क़ दे, अब उसके बाद उसने देखा कि चक्की के चारों तरफ़ आटे के लिए जो जगह बनी होती है (जिसको चक्की का गिरांड और कहीं चक्की की फिर भी कहते हैं) वह आटे से भरी हुई है फिर वह तंदूर के पास गई तो देखा कि तंदूर भी रोटियों से भरा हुआ है (और जितनी रोटीयाँ उसमें लग सकती थीं लगी हुई हैं) इसके बाद उस बीवी के शौहर वापस आये और बीवी से पूछा कि मेरे जाने के

बाद तुमने कुछ पाया? बीवी ने बताया कि हाँ हमें अपने परवरदिगार की तरफ़ से मिला है (यानी बराह-ए-रास्त ख़ज़ाना-ए-ग़ैब से इसी तरह मिला है) यह सुनकर यह भी चक्की के पास गये (और उसको उठाकर देखा यानी तअज्जुब और शौक़ में शायद उसका पाट उठाकर देखा) फिर जब यह माजरा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़िक्र किया गया तो आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि मालूम होना चाहिए कि अगर उसको उठाकर न देखते तो चकी क़्यामत तक यूँ ही चलती रहती और उससे हमेशा आटा निकलता रहता। —मुस्नद अहमद

दौलत की हिर्स के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नसीहत

हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक बार मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कुछ माल तलब किया, आप सल्ल० ने मुझ अता फ़रमा दिया मैंने फिर मांगा, आप ने फिर अता फ़रमा दिया, फिर आप सल्ल० ने मुझे नसीहत फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया कि ऐ हकीम! यह माल सब को भली लगने वाली और लज़ीज़ शीरीं चीज़ है तो जो शख़्स इसको बग़ैर हिर्स और तमअ के सैर चश्मी और नफ़्स की फ़याज़ी के साथ ले उसके लिए उसमें बरकत दी जाएगी और जो शख़्स दिल के साथ लेगा उसके लिए उसमें बरकत नहीं होगी और उसका हाल ज़ौऊल बक़्र के उस मरीज़ का सा होगा जो खाये और पेट न भरे और ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है (यानी देने वाले का मक़ाम ऊँचा है और हाथ फैलाकर लेना एक घटिया बात है लिहाज़ा जहाँ तक हो सके इससे बचना चाहिए)। हकीम इब्ने

हिज़ाम कहते हैं कि (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह नसीहत सुनकर) मैंने अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह क़सम है उस पाक ज़ात की जिसने आपको नबी-ए-बरहक़ बनाकर भेजा है अब आप के बाद मरते दम तक किसी से कुछ न लूंगा। —बुख़ारी व मुस्लिम

फ़ायदाः— इस हदीस शरीफ़ के बारे में सही बुख़ारी ही की एक रिवायत में यह भी है कि हकीम बिन हिज़ाम ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में जो अहद किया था उसको फिर ऐसा निबाहा कि हुज़ूर सल्ल० के बाद हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने-अपने दौर-ए-ख़िलाफ़त में (जबकि सब ही को वज़ीफ़े और अतिये (इनामात) दिए जाते थे) उनको भी बुलाकर बारबार कुछ वज़ीफ़ा या अतिया देना चाहा लेकिन यह लेने पर आमादा ही नहीं हुए। और फ़त्हुल बारी में हाफ़िज़ इब्ने हजर ने मुस्नद इस्हाक़ बिन राहविया को हवाले से नक़ल किया है कि शेख़ैन के बाद हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माना-ए-ख़िलाफ़त व अमारत में भी उन्होंने कभी कोई वज़ीफ़ा या अतिया क़ुबूल नहीं किया, यहां तक कि हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर-ए-अमारत में 120 साल की उम्र में 54 हिजूरी में वफ़ात पाई।—मआरिफ़ुल हदीस, हिस्सा 2, पेज 296

जो अपनी मुसीबत किसी पर ज़ाहिर न करे उसके लिए बख़्शिश का वादा

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप सल्ल०

ने इर्शाद फ़रमाया कि जो बन्दा किसी जानी या माली मुसीबत में मुब्तला हो और वह किसी से इसका इज़्हार न करे और न लोगों से शिक्वा शिकायत करे तो अल्लाह तआला के ज़िम्मे है कि वह उसको बख़्श देंगे। —मअजम ओसत तिबरानी

फ़ायदा :– सब्र का आला दर्जा यह है कि अपनी मुसीबत और तक्लीफ़ का किसी से इज़्हार भी न हो और ऐसे साबिरों के लिए भी इस हदीस में मग़्फ़िरत का पुख़्ता वादा किया गया है और अल्लाह तआला ने उनकी बख़्शिश का ज़िम्मा लिया है अल्लाह तआला इन मवाईद पर यक़ीन और उनसे फ़ायदा उठाने के तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। —मआरिफ़ुल हदीस, हिस्सा 2, पेज 301

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपनी साहबज़ादी को सब्र की तल्क़ीन करना

हज़रत उसामा इब्ने जैद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहबज़ादी (हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा) ने आंहज़रत सल्ल० के पास कहला भेजा कि मेरे बच्चे का आख़िरी दम है और चल चलाओ का वक़्त है, लिहाज़ा आप इस वक़्त तशरीफ़ ले आयें, आप सल्ल० ने इसके जवाब में सलाम कहलाके भेजा और प्याम दिया कि बेटी अल्लाह तआला किसी से जो कुछ ले वह भी उसी का है और किसी को जो कुछ दे वह भी उसकी का है। अलग़र्ज़ हर चीज़ हर हाल में उसी की है (अगर किसी को देता है तो अपनी चीज़ देता है और

किसी से लेता है तो अपनी चीज़ लेता है) और हर चीज़ के लिए उसकी तरफ़ से एक मुद्दत और वक़्त मुक़र्रर है (और उस वक़्त के आ जाने पर वह चीज़ इस दुनिया से उठा ली जाती है) पस चाहिए कि तुम सब्र करो और अल्लाह तआला से इस सद्मे के अज्र व सवाब की तालिब (चाहने वाली) बनो। साहबज़ादी साहिबा ने फिर आप सल्ल० के पास प्याम भेजा और क़सम दी कि इस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़रूर ही तशरीफ़ ले आयें तो आप उठकर चल दिये और आपके असहाब में से हज़रत सअद बिन अुबादा रज़ि०, हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि०, हज़रत उब्बी बिन कअ़ब रज़ि० और हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० और कुछ और लोग भी आप सल्ल० के साथ हो लिए, तो वह बच्चा उठाकर आपकी गोद में दे दिया गया और उसका साँस उखड़ रहा था उसके इस हाल को देखकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों में आँसू बहने लगे इस पर हज़रत सअ़द बिन अुबादा रज़ि० ने अर्ज़ किया हज़रत यह किया? आप सल्ल० ने फ़रमाया कि यह रहमत के उस जज़्बे का असर है जो अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के दिलों में रख दिया है और अल्लाह की रहमत उन ही बन्दों पर होगी जिनके दिलों में रहमत का जज़्बा हो, (और जिनके दिल सख़्त और रहमत का जज़्बे से बिल्कुल ख़ाली हों वह ख़ुदा की रहमत के मुस्तहिक़ न होंगे)।–बुख़ारी व मुस्लिम

फ़ायदाः– हदीस के आख़िरी हिस्से से मालूम हुआ कि किसी सद्मे से दिल का मुतअस्सिर होना और आँखों से आँसू बहना सब्र के मनाफ़ी नहीं, सब्र का मुक़्तज़ी सिर्फ़ इतना है कि बंदे और सद्मे को अल्लाह तआला की मशीयत पर यक़ीन करते हुए उसको बन्दगी की शान के साथ अंगेज़ करे और अल्लाह तआला

की रहमत से मायूस और उसका शाकी न हो और उसकी मुक़र्रर की हुई हदूद का पाबंद रहे बाक़ी तबूअी तौर पर दिल का मुतअस्सिर होना और आँखों से आँसू बहना दिल की रिक़्क़त और उस जज़्बा-ए-रहमत का लाज़िमी नतीजा है जो अल्लाह तआला ने बन्दों की फ़ितरत में वदीयत रखा है और वह अल्लाह तआला की ख़ास नेमत है और जो दिल उससे ख़ाली हो वह अल्लाह तआला की निगाह-ए-रहमत से महरूम है। हज़रत सअ़द बिन अुबादा रज़ि० ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों से आँसू बहते देखकर तअज्जुब के साथ सवाल इसलिए किया कि इस वक़्त तक उनको यह बात मालूम नहीं थी कि दिल का यह तअस्सुर और आँखों से आँसू गिरना सब्र के मुनाफ़ी नहीं है।

—मआरिफ़ुल हदीस, हिस्सा 2, पेज 302

ख़ासान-ए-ख़ुदा ऐश व तनअउम की ज़िन्दगी नहीं गुज़ारते

हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब उनको यमन की तरफ़ रवाना किया तो नसीहत फ़रमाई कि मआज़ आराम तलबी और ख़ुश ऐशी से बचते रहना अल्लाह के ख़ास बंदे आराम तलब और ख़ुश ऐश नहीं हुआ करते। —मुस्नद अहमद

फ़ायदाः– दुनिया में आराम व राहत और ख़ुश ऐशी की ज़िन्दगी गुज़ारना अगरचे हराम और नाजायज़ नहीं है लेकिन अल्लाह के ख़ास बन्दों का मुक़ाम यही है कि वह दुनिया में तनअउम की ज़िन्दगी इख़्तियार न करें।

اَللّٰهُمَّ لَا عَيْشَ اِلَّا عَيْشُ الْاٰخِرَةِ

—मआरिफ़ुल हदीस, हिस्सा 2, पेज 97

ख़ादिम और नौकर को मआफ़ी दो अगरचे वह एक दिन में 70 बार क़ुसूर करे

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ कियाः या रसूलुल्लाह! मैं अपने ख़ादिम (ग़ुलाम या नौकर) का क़ुसूर कितना बार मआफ़ करूं? आप सल्ल० ने उसको कोई जवाब न दिया और ख़ामोश रहे, उसने फिर वही अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! मैं अपने ख़ादिम को कितनी दफ़ा मआफ़ करूं? आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हर रोज़ 70 मर्तबा। —जामेअ तिर्मिज़ी

फ़ायदाः– सवाल करने वाले का मक़्सद यह था कि हज़रत अगर मेरा खादिम या ग़ुलाम या नौकर बार-बार क़ुसूर करे तो कहाँ तक मैं उसको मआफ़ करूं और कितनी बार मआफ़ करने के बाद मैं उसको सज़ा दूँ? आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जवाब दिया कि मान लो अगर रोज़ाना 70 बार भी वह क़ुसूर करे तो तुम उसको मआफ़ ही करते रहो। हुज़ूर सल्ल० का मतलब यह था कि क़ुसूर का मआफ़ करना कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसकी हद मुक़र्रर की जाये बल्कि हुस्न-ए-अख़्लाक़ और तरह्हुम का तक़ाज़ा यह है कि अगर मान लो वह रोज़ाना 70 बार भी क़ुसूर करे तो उसको मआफ़ ही कर दिया जाये।

फ़ायदाः– जैसा कि बार-बार लिखा जा चुका है 70 का अदद ऐसे मौक़ों पर तहदीद के लिए नहीं होता बल्कि सिर्फ़ तक्सीर (ज़्यादा तादाद) के लिए होता है और ख़ासकर इस हदीस में यह बात बहुत ही साफ़ है। —मआरिफ़ुल हदीस, हिस्सा 2, पेज 186

दिल की क़सावत और सख़्ती का इलाज

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपनी क़सावत-ए-क़ल्बी (सख़्त दिली) की शिकायत की, आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि यतीम के सिर पर हाथ फेरा करो और मिस्कीन को खाना खिलाया करो। —मुस्नद अहमद

फ़ायदाः– सख़्त दिली और तंग दिली एक रूहानी मर्ज़ है और इंसान की बद्-बख़्ती की निशानी है, साईल (मांगने वाले) ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपने दिल और अपनी रूह की इस बीमारी का हाल अर्ज़ करके आप से इलाज पूछा था, आप सल्ल० ने उनको दो बातों की हिदायत फ़रमाई एक यह कि यतीम के सर पर शफ़क़त का हाथ फेरा करो और दूसरा यह कि फ़क़ीर मिस्कीन को खाना खिलाया करो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बतलाया हुआ यह इलाज इल्मुन नफ़्स के एक ख़ास उसूल पर मब्नी है बल्कि यह कहना चाहिए कि हुज़ूर सल्ल० के इस इर्शाद से इस उसूल की ताईद और तौसीक़ होती है वह उसूल यह है कि अगर किसी शख़्स के नफ़्स या दिल में कोई ख़ास कैफ़ियत न हो और वह उसको पैदा करना चाहे तो एक

तदबीर उसकी यह भी है कि इस कैफ़ियत के आसान और लवाज़िम को वह इख़्तियार कर ले, इंशाअल्लाह कुछ अर्सा के बाद वह कैफ़ियत भी नसीब हो जाएगी। दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत पैदा करने के लिए कसूरत-ए-ज़िक्र का तरीक़ा जो हज़रात सूफ़िया-ए-किराम में चलता था उसकी बुनियाद भी इसी उसूल पर है। बहरहाल यतीम के सर पर हाथ फेरना और मिस्कीन को खाना खिलाना असल में जज़्बा-ए-रहम के आसार में से है लेकिन जब किसी का दिल उस जज़्बे से ख़ाली हो वह अगर यह अमल ब-तकल्लुफ़ ही करने लगे तो इंशाअल्लाह उसके दिल में भी रहम की कैफ़ीयत पैदा हो जायेगी। —मआरिफ़ुल हदीस, हिस्सा 2, पेज 179

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की अज़मत

सही बुख़ारी में एक आयत के तहत ब-रिवायत अबूद्दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु नक़ल किया है कि अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु व उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दर्मियान किसी बात में इख़्तिलाफ़ हुआ, हज़रत उमर रज़ि० नाराज़ होकर चले गये। यह देखकर हज़रत अबू बक्र रज़ि० उनको मनाने के लिए चले, मगर हज़रत उमर रज़ि० ने न माना यहाँ तक कि अपने घर में पहुंच कर दरवाज़ा बन्द कर लिया, मजबूरन सिद्दीक़ अक्बर रज़ि० वापस आये और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो गये, उधर कुछ देर के बाद हज़रत उमर रज़ि० को अपने इस काम पर निदामत हुई और यह भी घर से निकल कर आंहज़रत सल्ल० की ख़िदमत में पहुंच गये और अपना वाक़िआ अर्ज़

किया। अबूद्दरदा रज़ि० का बयान है कि इस पर रसूलुल्लाह सल्ल० नाराज़ हो गये जब सिद्दीक़ अकबर रज़ि० ने देखा कि हज़रत उमर रज़ि० पर अताब (ग़ुस्सा) होने लगा तो अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! ज़्यादा क़ुसूर मेरा ही था, रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि क्या तुमसे इतना भी नहीं होता कि मेरे एक साथी को अपनी ईज़ाओं से छोड़ दो, क्या तुम नहीं जानते कि जब मैंने बइज़्न-ए-ख़ुदावन्दी यह कहा: يا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا

ऐ लोगो! मैं तुम सबकी तरफ़ ख़ुदा का भेजा हुआ (यानी उसका रसूल) हूँ तो तुम सबने मुझे झुठलाया सिफ़ अबू बक्र रज़ि० ही थे जिन्होंने पहली बार मेरी तस्दीक़ की।

—क़स्स मआरिफ़ुल क़ुरआन, अज़ माख़ूज़ तामीरे हयात, पेज़ 110, अक्तूबर 2001

अज़मत-ए-मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़िम्मे एक यहूदी का क़र्ज़ था, उसने आकर अपना क़र्ज़ मांगा तो आप सल्ल० ने फ़रमाया कि इस वक़्त मेरे पास कुछ नहीं, कुछ मोहलत दो, यहूदी ने शिद्दत के साथ मुतालिबा किया और कहा कि मैं आपको उस वक़्त तक न छोड़ूंगा जब तक मेरे क़र्ज़ अदा न कर दो। आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया तुम्हें इख़्तियार है मैं तुम्हारे पास बैठ जाऊंगा, चुनांचे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस जगह बैठ गये और ज़ुहर, अस्र, मग़िरब और इशा की और फिर अगले रोज़ सुब्ह की नमाज़ यहीं अदा फ़रमाई। सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हुम यह

माजरा देखकर रंजीदा और ग़ज़बनाक हो रहे थे और आहिस्ता-आहिस्ता यहूदी को डरा धमकाकर यह चाहते थे कि वह रसूलुल्लाह सल्ल० को छोड़ दे। रसूलुल्लाह सल्ल० ने इसको ताड़ लिया और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से पूछा यह क्या करते हो? तब उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! हम इसको कैसे बर्दाश्त करें कि एक यहूदी आप सल्ल० को क़ैद करे, आप सल्ल० ने फ़रमाया कि मुझे मेरे रब ने मना फ़रमाया है कि मैं किसी मुआहिद वग़ैरह पर ज़ुल्म करूं, यहूदी यह सब माजरा देख और सुन रहा था, सुब्ह होते ही यहूदी ने कहा: اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ

इस तरह मुशर्रफ़ ब-इस्लाम होकर उसने कहा या रसूलुल्लाह! मैंने अपना आधा माल अल्लाह के रास्ते में दे दिया और क़सम है खुदा तआला की मैंने इस वक़्त जो कुछ किया उसका मक़सद सिर्फ़ यह इम्तिहान करना था कि तौरात में आप सल्ल० के बारे में यह अल्फ़ाज़ पढ़े "मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह उनकी विलादत (पैदाइश) मक्के में होगी और हिजरत-ए-तैबा की तरफ़ और मल्क उनका शाम होगा, न वह सख़्त मिज़ाज होंगे, न सख़्त बात करने वाले, न बाज़ारों में शोर करने वाले फ़हश और बे-हयाई से दूर होंगे। मैंने अब तमाम सिफ़ात का इम्तिहान करके आप सल्ल० को सही पाया इसलिए शहादात देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप अल्लाह के रसूल हैं और यह मेरा आधा माल है आपको इख़्तियार है जिस तरह चाहें ख़र्च फ़रमायें और यह यहूदी बहुत मालदार था, आधा माल भी एक बहुत बड़ी दौलत थी, इस रिवायत को तफ़्सीर मज़हरी में ब-हवाला दलाइलुन नबुव्वत बैहक़ी नक़ल फ़रमाया है।

—क़स्स मआरिफ़ुल क़ुरआन, अज़ माख़ूज़ तामीरे हयात, पेज 67, अक्तूबर 2001

मक़रूज़ की नमाज़-ए-जनाज़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नहीं पढ़ाते थे

हदीस पाक में आया है कि हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसे लोगों की नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ाते थे जिनके ऊपर दूसरों का हक़ होता इसलिए नमाज़ से पहले हुज़ूर सल्ल० मालूम कर लिया करते थे कि इस पर किसी का हक़ तो नहीं, इसी वजह से एक बार एक सहाबा का जनाज़ा पढ़ाने से इनकार कर दिया मगर हज़रत अबू क़तादा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके क़र्ज़ की अदायगी की ज़िम्मेदारी ली उसके बाद आप सल्ल० ने नमाज़े जनाज़ा अदा की।

हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक आदमी का जनाज़ा लाया गया ताकि आप सल्ल० उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ा दें तो आप सल्ल० ने फ़रमाया कि तुम अपने साथी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ लो क्योंकि उनके ज़िम्मे क़र्ज़ है तो हज़रत अबू क़तादा रज़ि० ने कहा कि इसकी अदायगी मेरे ज़िम्मे है तो आप सल्ल० ने फ़रमाया पूरा करोगे? तो उन्होंने कहा जी हाँ मैं अदा करूंगा।

नोटः– जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर फ़तूहात हुईं मक़रूज़ के क़र्ज़ का ज़िम्मा खुद ले लेते थे और जनाज़े की नमाज़ पढ़ाते थे।

–आपके मसाइल और उनका हल, हिस्सा 3, पेज 131,

रहमतुल लिल् आलमीन, हिस्सा 1, पेज 266

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन सहाबी की नमाज़े

जनाज़ा पढ़ा दी। —निसाई शरीफ़, पेज 315

ख़िलाफ़े शरअ ख़्वाहिशात की पैरवी एक क़िस्म की बुत परस्ती है

اَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰهُ

इस आयत में उस शख़्स का जो इस्लाम व शरीअत के ख़िलाफ़ अपनी ख़्वाहिशात का पैरू हो यह कहा गया है कि उसने अपनी ख़्वाहिशात को माबूद बना लिया है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ख़िलाफ़े शरअ ख़्वाहिशाते नफ़्सानी भी एक बुत है, जिसकी परस्तिश की जाती है, फिर इस्तिदलाल में यह आयत तिलावत फ़रमाई। —क़ुर्तबी, मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 6, पेज 464

ख़ासान-ए-ख़ुदा के क़रीबी रिश्तेदार आमतौर से महरूम रहते हैं

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ

तर्जुमाः— अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डरा दे।

इब्ने असाकर में है कि एक मर्तबा हज़रत अबूद्दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद में बैठे हुए वअज़ फ़रमा रहे थे फ़त्वे दे रहे थे मजलिस खचाखच भरी हुई थी, हर एक की निगाहें आपके चहरे पर थीं और शौक़ से सुन रहे थे लेकिन आपके लड़के और घर के आदमी आपस में निहायत बे-परवाई से अपनी बातों में मश्ग़ूल थे, किसी ने हज़रत अबूद्दरदा रज़ि० को तवज्जह दिलाई कि और सब लोग तो दिल से आपकी इल्मी बातों में दिलचस्पी ले रहे हैं, आपके

एहले बैत इससे बिल्कुल बे-परवाह हैं वह अपनी बातों में निहायत बे-परवाही से मश्गूल हैं तो आप रज़ि० ने जवाब में फ़रमाया मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है दुनिया से बिल्कुल किनारा कशी करने वाले अंबिया अलैहिमुस्सलाम होते हैं और उन पर सबसे ज़्यादा सख़्त और भारी उनके रिश्तेदार होते हैं और इसी बारे में आयत وانذر से تعملون तक है।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 4, पेज 55

रोग़न-ए-ज़ैतून की बरकात

شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ

इससे ज़ैतून और उसके पेड़ के मुबारक और नाफ़ेअ व मुफ़ीद होना साबित होता है।

उलमा ने फ़रमाया है कि अल्लाह तआला ने इसमें बे-शुमार मुनाफ़ा और फ़वाइद रखे हैं उसको चिराग़ों में रोशनी के लिए भी इस्तिमाल किया जाता है और उसकी रौशनी हर तेल की रौशनी से ज़्यादा साफ़ शफ़्फ़ाफ़ होती है और उसको रोटी के साथ सालन की जगह भी इस्तिमाल किया जाता है उसके फल को बतौर तुफ़्का के खाया जाता है और यह ऐसा तेल है जिसके निकालने के लिए किसी मशीन या चर्ख़ी वग़ैरह की ज़रूरत नहीं ख़ुद-बख़ुद उसके फल से निकल आता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रोग़न-ए-ज़ैतून को खाओ भी और बदन पर मालिश भी करो क्योंकि यह शजर-ए-मुबारिका है।

—रवाह अल्-बग़वी व तिर्मिज़ी अन उमर रज़ि०, मरफ़ूअन मज़हरी,

मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 6, पेज 413

अल्लाह के आठ नाम जो सूरज पर लिखे हुए हैं

1. अल्-हय्यु। 2. अल्-आलिमु। 3. अल्-क़ादिरू। 4. अल्-मुरीदु। 5. अस्-समीउ। 6. अल्-बसीर। 7. अल्-मुतकल्लिम। 8. अल्-बाक़ी। —अल्-यवाक़ियत वल् जवाहर, बहस 16

शरीअत इस्लाम में शेअर व शाइरी का दर्जा

وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ

तर्जुमाः— और शाइरों की बात पर चलें वहीं जो बे-राह हैं।

ऊपर दी गई आयत के शुरू से शेअर व शायरी की सख़्त मज़म्मत और उसका इन्दल्लाह मब्ग़ूज़ होना मालूम होता है मगर आख़िर सूरत में जो इस्तिसना दी गई है, इससे साबित हुआ कि शेअर मुतलक़न बुरा नहीं बल्कि जब जिस शेअर में ख़ुदा तआला की नाफ़रमानी या अल्लाह के ज़िक्र से रोकना या झूठ नाहक़ किसी इंसान की मज़म्मत और तौहीन हो या फ़हश कलाम और फ़वाहिश के लिए मुहर्रक हो वह मज़्मूम व मकरूह है और जो अशआर इन मआसी और मकरूहात से पाक हों उनको अल्लाह तआला ने اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ... الاٰية के ज़रिए मुस्तसना फ़रमा दिया है और कुछ अश्आर तो हकीमाना मज़ामीन और वअज़ व नसीहत पर मुश्तमिल होने की वजह से ताअत व सवाब में दाख़िल हैं जैसा कि हज़रत उब्बी बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि اِنَّ مِنَ الشِّعْرِ حِكْمَةً यानी शेअर हिक्मत

होते हैं। —रिवाह अल्-बुख़ारी

हाफ़िज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया कि हिक्मत से मुराद सच्ची बात है जो हक़ के मुताबिक़ हो। इब्ने बत्ताल ने फ़रमाया जिस शेअर में ख़ुदा तआला की वहदानियत उसका ज़िक्र इस्लाम से उल्फ़त का बयान हो वह शेअर मरग़ूब व महमूद है और हदीस मज़्कूर में ऐसा ही शेअर शेअर है और जिस शेअर में झूठ और फ़हश बयान हो वह मज़्मूम है उसकी ज़्यादा ताईद नीचे दी गई रिवायतों से होती है।

1. हज़रत उमर बिन अश्-शरीद अपने बाप से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझ से उमय्या बिन अबी अस्-सलत के 100 अश्आर सुने।
2. मतरफ़ फ़रमाते हैं कि मैं ने कूफ़ा से बस्रा तक हज़रत इमरान बिन हुसैन के साथ सफ़र किया और हर मंज़िल पर वह शेअर सुनाते थे।
3. तिबरी ने किबार-ए-सहाबा और किबार-ए-ताबीईन के बारे में कहा कि वह शेअर कहते थे, सुनते थे और सुनाते थे।
4. इमाम बुख़ारी फ़रमाते हैं कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा शेअर कहती थीं।
5. अबू यअ्ला ने इब्ने उमर से मरफ़ूअन रिवायत किया है कि शेअर एक कलाम है अगर उसका मज़्मून अच्छा और मुफ़ीद है तो यह शेअर अच्छा है और मज़्मून बुरा या गुनाह का है सो शेअर बुरा है। —फ़त्हुल बारी

तफ़्सीर क़ुर्तबी में है कि मदीना मुनव्वरा के फ़ुक़्हा-ए-अशरा जो अपने इल्म व फ़ज़्ल में मारूफ़ हैं उनमें से उबैदुल्लाह बिन उतबा

बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु मश्हूर क़ादिर-ए-कलाम शाइर थे और क़ाज़ी ज़ुबैर बिन बक्कार के अश्आर अहले इल्म और एहल-ए-अक़्ल में से कोई बुरा नहीं कह सकता क्योंकि अकाबिर सहाबा जो उनके मुक़्तदा हैं उनमें कोई भी ऐसा नहीं जिसने खुद शेअर न कहे हों या दूसरों के अश्आर न पढ़े या सुने हों और पसन्द किया हो।

जिन रिवायतों में शेअर व शाइरी की मज़म्मत मज़्कूर है उनसे मक़्सूद यह है कि शेअर में इतना मसरूफ़ और मुन्हमक हो जाये कि अल्लाह के ज़िक्र, इबादत और क़ुरआन से ग़ाफ़िल हो जाये। इमाम बुख़ारी ने उसको एक मुस्तक़िल बाब में फ़रमाया है और इस बाब में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत नक़ल की है।

﴾لان يمتلئ جوف رجل قيحاً يريه خير من ان يمتلئ شعراً﴿

यानी कोई आदमी पीप से अपना पेट भरे इससे बेहतर है कि अश्आर से पेट भरे। इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मेरे नज़दीक उसका मतलब यह है कि शेअर जब अल्लाह के ज़िक्र और क़ुरआन और इल्म के इश्तिआल पर ग़ालिब आ जाये और शेअर मग़लूब है तो फिर बुरा नहीं है इसी तरह वह अश्आर जो फ़हश मज़ामीन या लोगों पर तअन व तश्नीअ या दूसरे ख़िलाफ़-ए-शरअ मज़ामीन पर मुश्तमिल हों वह ब-जमाअ उम्मत हराम व नाजायज़ हैं और यह कुछ शअ्र के साथ मख़्सूस नहीं जो नस्र कलाम ऐसा हो उसका भी यही हुक्म है। —क़ुर्तबी

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने गवर्नर अदी बिन नज़्ला को उनके ओहदे से इसलिए बर्ख़ास्त कर दिया कि

वह फ़हश अश्आर कहते थे। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमरू बिन रबीआ और अबुल् आस को इसी जुर्म में जिला-वतन करने का हुक्म दिया। अमर बिन रबीआ ने तौबा कर ली वह क़ुबूल की गई।

—क़ुर्तबी, मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 6,पेज 554-555

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की क़ब्र के बारे में हैरत अंगेज़ क़िस्सा

इब्ने अबी हातिम की एक हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी ऐराबी के हाँ मेहमान हुए उसने आप सल्ल० की बड़ी ख़ातिर तवाज़ो की, वापसी में आप सल्ल० ने फ़रमाया कभी हमसे मदीने में भी मिल लेना। कुछ दिनों बाद ऐराबी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कुछ चाहिए? उसने कहा, हाँ एक ऊँटनी दीजिए, साथ हौदज के और एक बकरी दीजिए जो दूध देती हो। आप सल्ल० ने फ़रमाया अफ़सोस तूने बनी इस्राईल की बुढ़िया जैसा सवाल न किया, सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पूछा वह वाक़िआ क्या है? आप सल्ल० ने फ़रमायाः जब हज़रत कलीमुल्लाह बनी इस्राईल को लेकर चले तो रास्ता भूल गये हज़ार कोशिश की लेकिन राह न मिली, आपने लोगों को जमा करके पूछा यह क्या अंधेर है? तो उल्मा-ए-बनी इस्राईल ने कहा बात यह है कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने आख़िर वक़्त में हमसे अहद लिया था कि जब हम मिस्र से चलें तो उनके ताबूत को भी यहाँ से अपने साथ लेते जायें। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने पूछा कि

तुम में से कौन जानता है कि हज़रत यूसुफ़ अलैहि० की तरबत कहाँ है? सबने इनकार कर दिया कि हम नहीं जानते हममें एक बुढ़िया के सिवाए और कोई भी हज़रत यूसुफ़ अलैहि० की क़ब्र से वाक़िफ़ नहीं, हज़रत मूसा अलैहि० ने उस बुढ़िया के पास आदमी भेजकर उसे कहलवाया कि मुझे हज़रत यूसुफ़ अलैहि० की क़ब्र दिखला, बुढ़िया ने कहा, हाँ दिखलाऊंगी लेकिन पहले अपना हक़ ले लूँ, हज़रत मूसा अलैहि० ने कहा तू क्या चाहती है? उसने जवाब दिया कि जन्नत में आपका साथ मुझे हासिल हो। हज़रत मूसा अलैहि० पर उसका यह सवाल बहुत भारी पड़ा, उस वक़्त वही आई कि इस बात को मान लो, उसकी शर्त को मंज़ूर कर लो। अब वह आपको एक झील के पास ले गई जिसके पानी का रंग भी मुतग़य्यिर हो गया था कहा कि इसका पानी निकाल डालो जब पानी निकाल डाला और ज़मीन नज़र आने लगी तो कहा अब यहाँ खोदो। खोदना शुरू हुआ तो क़ब्र ज़ाहिर हो गई, ताबूत साथ रख लिया अब जो चलने लगे तो रास्ता साफ़ नज़र आने लगा और सीधी राह लग गई। —तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 4, पेज 33

दरिया-ए-नील के नाम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़त

रिवायत है कि जब मिस्र फ़त्ह हुआ तो मिस्र वाले हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आये और कहने लगे कि हमारी पुरानी आदत है कि इस महीने में दरिया-ए-नील की भेंट चढ़ाते हैं और अगर न चढ़ाएं तो दरिया में पानी नहीं आता, हम ऐसा करते हैं कि इस महीने की 12वीं तारीख़ को हम एक बाकरा

लड़की को लेते हैं जो अपने माँ-बाप की इकलौती हो उसके वालिदैन को दे दिलाकर रज़ामंद कर लेते हैं और उसे बहुत उम्दा कपड़े और बहुत क़ीमती ज़ेवर पहनाकर, बनाव संवारकर इस नील में डाल देते हैं तो इसका पानी चढ़ता है वर्ना पानी चढ़ता ही नहीं।

सिपाहसालार-ए-इस्लाम हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ातेह मिस्र ने जवाब दिया कि यह एक जाहिलाना और अहमक़ाना रस्म है, इस्लाम इसकी इजाज़त नहीं देता, इस्लाम तो ऐसी आदतों को मिटाने के लिए आया है तुम ऐसा नहीं कर सकते वह बाज़ रहे।

दरिया-ए-नील का पानी न चढ़ा महीना पूरा निकल गया, लेकिन दरिया ख़ुश्क पड़ा हुआ है, लोग तंग आकर इरादा करने लगे कि मिस्र को छोड़ दें यहाँ की बूद-व-बाश तर्क कर दें। अब फ़ातेह मिस्र को ख़्याल गुज़रता है और दरबार-ए- ख़िलाफ़त को इससे मुत्तला (ख़बर) फ़रमाते हैं। उसी वक़्त ख़लीफ़ातुल मुस्लीमीन अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ से जवाब मिलता है कि आपने जो कुछ किया अच्छा किया अब में अपने इस ख़त में एक पर्चा दरिया-ए-नील के नाम भेज रहा हूँ तुम उसे लेकर नील के दरिया में डाल दो, हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस पर्चे को निकाल कर पढ़ा तो इसमें लिखा था कि ख़त है ख़ुदा तआला के बंदे अमीरूल मोमिनीन उमर की तरफ़ से अहल मिस्र के दरिया-ए-नील की तरफ़, बाद हम्द व सलात के मतलब यह है कि अगर तू अपनी तरफ़ से और अपनी मर्ज़ी से चल रहा है तो ख़ैर न चल और अगर अल्लाह तआला वाहिद क़ह्हार तुझे जारी रखता है तो हम अल्लाह से दुआ मांगते हैं कि वह तुझे जारी कर दे। यह पर्चा लेकर हज़रत अमीर अस्कर

रज़ियल्लाहु अन्हु ने दरिया-ए-नील में डाल दिया, अभी एक रात भी गुज़रने न पाई थी कि दरिया-ए-नील में 16 हाथ गहराई का पानी चलने लगा और उसी वक़्त मिस्र की ख़श्क-साली तरसाली से, गिरानी अरज़ानी से बदल गई। ख़त के साथ ही ख़ित्ते का ख़ित्ता सर-सब्ज़ हो गया और दरिया पूरी रवानी से बहता रहा, उसके बाद से हर साल जो जान चढ़ाई जाती थी वह बच गई और मिस्र से उस नापाक रस्म का हमेशा के लिए ख़ातमा हो गया।

—तफ़सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 4, पेज 213

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु और हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की हिफ़ाज़त साँप के ज़रिए

हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चारों तरफ़ बैठे हुए थे कि इतने में हज़रत उम्मे अयमन रज़ियल्लाहु अन्हा आईं और उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह! हसन रज़ि० और हुसैन रज़ि० गुम हो गये हैं, उस वक़्त दिन चढ़ चुका था, हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा से फ़रमाया उठो और मेरे दोनों नवासों को तलाश करो चुनाँचे हर आदमी ने अपना रास्ता लिया और चल पड़ा और मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रास्ता लेकर चल पड़ा, हुज़ूर सल्ल० चलते रहे यहां तक कि एक पहाड़ के दामन में पहुंच गये तो देखा कि हज़रत हसन रज़ि० और हुसैन रज़ि० दोनों एक दूसरे से चिमटे हुए खड़े हैं और पास ही एक काला नाग अपनी दुम पर खड़ा है जिसके मुँह से आग की चिंगारियाँ निकल रही हैं (शायद अल्लाह ने नाग

भेजा था कि बच्चों को आगे जाने से रोके)। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जल्दी से उस नाग की तरफ़ बढ़े, उस नाग ने हुज़ूर सल्ल० को मुड़कर देखा और चल पड़ा और एक सूराख़ में दाख़िल हो गया फिर हुज़ूर सल्ल० उन दोनों के पास गये। और दोनों को एक दूसरे से जुदा किया और दोनों के चेहरे पर हाथ फेरा और फ़रमाया मेरे माँ-बाप तुम दोनों पर क़ुर्बान हों, तुम दोनों अल्लाह के यहाँ कितने क़ाबिल-ए-इक्राम हो फिर एक को दाँए कंधे पर और दूसरे को बाँए कंधे पर बैठा लिया मैंने कहा तुम दोनों को खुश-ख़बरी हो कि तुम्हारी सवारी बहुत ही उम्दा है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह दोनों बहुत उम्दा सवार हैं और उनके वालिद उन दोनों से बेहतर हैं।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 869

ग़ार-ए-सौर का वाक़िआ

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से उनके हवारियों में से एक ने कहा मेरी ख़्वाहिश है कि हज़रत नबी आख़िरूज़्ज़माँ को देखूँ। उन्होंने अल्लाह तआला से दरख़्वास्त की वहाँ से जवाब मिला इस हालत में इस सूरत में तो नहीं देख सकते, तुम चाहो तो हम तुमको साँप बना दें और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस वक़्त हिजरत करेंगे मक्का-ए-मुकर्रमा से मदीना तैय्यबा की तरफ़ रास्ते में एक ग़ार में ठहरेंगे तुम इस ग़ार में जाकर ठहर जाओ वहाँ तुमको ज़ियारत हो जायेगी। चुनाँचे उसने मंज़ूर कर लिया उसको साँप बना दिया गया। वह आकर उस ग़ार में ठहर गया। वह मुंतज़िर रहा कई सदियाँ गुज़र गईं। जब हुज़ूर सल्ल० की बअ्सत हुई और फिर मुशरिकीन ने मक्का मुकर्रमा में चैन नहीं लेने दिया यहाँ तक

कि क़त्ल का मंसूबा बना लिया अब अल्लाह की तरफ़ से हिजरत का हुक्म हुआ। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस ग़ार मे आकर ठहरे और उस ग़ार-ए-सौर में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्ल० को बाहर बिठाया, फ़रमाया आप ठहर जायें मैं ग़ार को देख लूँ, ग़ार को देखने के लिए गये ताकि उसको साफ़ कर लें ठहरने के लिए। बाहर आये तो एक चादर थी आपके पास एक चादर ग़ायब थी। हुज़ूर अक्रम सल्ल० ने पूछा दूसरी चादर क्या हुई? बतलाया कि उसको मैंने जो सूराख़ थे उस चादर से फाड़ फ़ाड़कर वह सूराख़ बंद कर दिये कि उनमें कोई मूज़ी जानवर न हो। वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खिलाने- पिलाने की फ़िक्र में थे, एक बकरी वाले को देखा उससे पूछा, उसने बतलाया फ़्ला शख़्स की है, उन्होंने कहा दूध दूहने की इजाज़त दो। उसने कहा इजाज़त है। दूध दोहा और उसमें ज़रा ठंडा पानी मिलाकर ठंडा करके हुज़ूर सल्ल० को पिलाया। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० फ़रमाते हैं। شَرِبَ حَتّٰى رَضِيْتُ। हुज़ूर सल्ल० ने दूध पिया यहाँ तक कि मेरा जी खुश हो गया। क्या मुहब्बत थी, क्या तअल्लुक़ था कि दूध पियें हुज़ूर और जी खुश हो रहा है हज़रत अबू बक्र रज़ि० का। ख़ैर उस ग़ार को साफ़ करके अंदर लेकर गये और अर्ज़ किया कि आप मेरी रान पर अपना सर रखकर ज़रा आराम कर लें। हुज़ूर सल्ल० लेट गये देखा तो एक सूराख़ बाक़ी है। उस ग़ार में वहाँ हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने अपने पैर रख दिया उस सूराख़ में वह साँप था। वह साँप निकलने लगा तो देखा कि सूराख़ में कोई चीज़ अटकाव की है उसने काटा तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० को फ़िक्र हुई कि अब साँप के काटने से मैं तो मर जाऊंगा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

तन्हा रह जाएंगे, दुश्मन ताक में है, तलाश में फिर रहे हैं, जगह-जगह ढूंढते हुए हुज़ूर सल्ल० को पकड़ लेंगे, इस ग़म और सदमे से आँख से आँसू निकला, वह आँसूं हुज़ूर सल्ल० के ऊपर गिरा तब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या बात है, कहा हुज़ूर सल्ल०! मैं तो डसा गया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना लआब-ए-दहन लगा दिया उसकी बरकत से ज़हर का असर पैदा नहीं हुआ, वह साँप जो कई सदियों से वहाँ ठहारा हुआ था उसने कहा अल्लाह के बंदे अब दीदार का वक़्त आया तुमने पैर अड़ा लिया। इसमें तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हवारी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इतने मुश्ताक़ थे इसलिए कि हज़रत ईसा अलैहि० के ज़रिए से अहल-ए-किताब की बहुत मालूमात थीं।

—मज्मूआ बयानात तब्लीग़ी, पेज 149 अज़: मुफ़्ती महमूदुल हसन गंगोही

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुँह के लुक़्मे की बरकत से बेहया औरत बा-हया बन गई

हज़रत अबू अमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक औरत मर्दों से बे-हयाई की बातें किया करती थी और बहुत बेबाक और बद्-कलाम थी, एक मर्तबा वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास से गुज़री, हुज़ूर सल्ल० एक ऊँची जगह पर बैठे हुए सरीद खा रहे थे उस पर उस औरत ने कहा उन्हें देखो ऐसे बैठें हुए हैं जैसे ग़ुलाम बैठता है, ऐसे खा रहे हैं जैसे ग़ुलाम खाता है। यह

सुनकर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कौन सा बंदा मुझसे ज़्यादा बन्दगी इख़्तियार करने वाला होगा। फिर उस औरत ने कहा यह ख़ुद खा रहे हैं और मुझे नहीं खिला रहे हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तू भी खा ले, उसने कहा मुझे अपने हाथ से अता फ़रमायें। हुज़ूर सल्ल० ने उसको दिया तो उसने कहा, जो आप सल्ल० के मुहँ में है उसमें से दें। हुज़ूर सल्ल० ने उसमें से दिया जिसे उसने खा लिया। (उस खाने की बरकत से) उस पर शर्म व हया ग़लिब आ गई और उसके बाद उसने अपने इंतक़ाल तक किसी से बे-हयाई की कोई बात न की।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 704

इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि की ज़हानत के वाक़िआत

पहला वाक़िआः– एक शख़्स था उसकी बीवी उसको मुँह नहीं लगाती थी और सौ जान से उसका आशिक़ था, बीवी की तबीयत शौहर से नहीं मिलती थी, इसलिए वह तलाक़ लेना चाहती थी मगर मर्द तलाक़ नहीं देता था, मर्द उसको यही नहीं कि सताता नहीं था बल्कि मोहब्बत करता था मगर वह रहना ही नहीं चाहती थी। एक दिन दौनों मियाँ-बीवी बैठे हुए बातचीत कर रहे थे, बीवी कुछ कह रही थी, मर्द ने भी कोई जुमला कहा बस वह चुप होकर बैठ गई, मर्द ने कहा कि अगर सुब्ह सादिक़ से पहले-पहले तू न बोली तो तुझ पर तलाक़ है वह चुप हो गई और इरादा कर लिया कि मैं ख़ामोश रहूँगी ताकि इससे किसी तरह पीछा छूट जाये वह बेचारा परेशान हुआ और हर चंद बुलाना चाहता था मगर वह

बोलती ही नहीं थी। अब वह समझ गया कि यह तलाक़ लेना चाहती है और इस तरह बीवी मुझसे जुदा हो जायेगी। अब उसने फ़ुक्हा के दरवाज़े झांकने शुरू किये उनसे जाकर अपना हाल बयान किया, उन्होंने यही कहा कि अगर वह चुप रही तो तलाक़ पड़ जायेगी यह तो तेरी तरफ़ से शर्त है उसकी। सूरत यही है कि उसकी जाकर ख़ुशामद करो और सुब्ह सादिक़ से पहले किसी तरह बुलवाओ वर्ना सुब्ह सादिक़ होते ही वह तेरे हाथ से निकल जायेगी, सबने यही जवाब दिया फिर वह इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के पास पहुँचा, वह वहाँ का हाज़िर पाश था। मुतफ़क्किर और परेशान बैठ गया, इमाम साहब ने फ़रमाया कि आज क्या बात है परेशान क्यों हो? उसने कहा कि हज़रत वाक़िआ यह है कि बीवी से मैंने कह दिया कि तू अगर सुब्ह सादिक़ तक न बोली तो तुझ पर तलाक़, अब वह ख़ामोश होकर बैठ गई है। इमाम अबू हनीफ़ा रह० ने फ़रमाया तलाक़ नहीं पड़ेगी। मुतमईन रह। अब वह मुतमइन होकर आ गया, फ़ुक़्हा ने इमाम साहब पर तअन शुरू किया कि अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि हराम को हलाल बताना चाहते हैं, एक साफ़ सरीह हुक्म है उसको कह दिया कि तलाक़ नहीं पड़ेगी।

इमाम साहब रह० ने यह किया कि सुब्ह सादिक़ में जब आधा घंटा रह गया तो मस्जिद में जाकर ज़ोर-ज़ोर से तहज्जुद की अज़ान देना शुरू कर दी, उस औरत ने जब अज़ान की आवाज़ सुनी तो समझी सुब्ह सादिक़ हो गई, बस बोल पड़ी और कहने लगी सुब्ह सादिक़ हो गई अब मैं मुतल्लक़ा हो गई, अब मैं तेरे पास नहीं रहूंगी, जब तहक़ीक़ किया तो मालूम हुआ कि सुब्ह सादिक़ नहीं हुई वह तहज्जुद की अज़ान थी, लोग क़ायल हो गये

कि वाक़ई इमाम साहब फ़क़ीह भी हैं और मुदब्बिर भी।

—मजालिस हकीमुल इस्लाम, पेज 214

दूसरा वाक़िआः—

एक मर्तबा एक घर में चोरी हुई, चोर उसी मुहल्ले का था, चोरों ने घर वालों को पकड़ा और ज़बरदस्ती हलफ़ लिया कि अगर तू किसी को हमारा पता बतलायेगा तो तेरी बीवी पर तलाक़, उस बेचारे ने मजबूरन तलाक़ का हलफ़ लिया। वह चोर उसका सारा माल लेकर चले गये, अब वह बहुत पेरशान हुआ कि अगर मैं चोरों का पता बतलाता हूँ तो माल तो मिल जायेगा मगर बीवी हाथ से जाएगी और अगर पता नहीं बतलाता हूँ तो बीवी तो रहेगी मगर सारा घर ख़ाली हो जाता है तो माल और बीवी में तक़ाबुल पड़ गया तो माल रखे या बीवी रखे और किसी से कह भी नहीं सकता था क्योंकि वह अहद कर चुका था। फिर इमाम साहब रहमतुल्लाहि अलैहि की मज्लिस में हाज़िर हुआ, वह बहुत ग़मगीन और उदास और परेशान था, इमाम साहब रह० ने फ़रमाया कि आज तुम बहुत उदास हो क्या बात है, उसने कहा हज़रत मैं कह नहीं सकता, फ़रमाया कुछ तो कहो।

उसने कहा कि हज़रत अगर मैंने कहा तो न जाने क्या हो जायेगा, फिर फ़रमाया कि इज्मालन कहो, तो उसने कहा कि हज़रत चोरी हो गई है और मैंने यह अहद कर लिया है कि अगर मैंने उन चोरों का पता किसी को बतलाया तो बीवी पर तलाक़, मुझे मालूम है कि चोर कौन हैं, वह तो मुहल्ले के हैं लेकिन अगर पता बतलाता हूँ तो बीवी पर तलाक़ पड़ जायेगी। इमाम साहब ने फ़रमाया कि मुतमइन रह बीवी भी हाथ से नहीं जाएगी और माल

भी मिल जाएगा और तू ही पता बतलाएगा। कूफ़ा में फिर शोर हो गया कि अबू हनीफ़ा रह० यह क्या कर रहे हैं? यह तो एक अहद है जब वह पूरा करेगा तो बीवी पर तलाक़ पड़ जायेगी, यह इमाम साहब रह० ने कैसे कह दिया कि न बीवी जाएगी और न माल जाएगा। उलमा और फ़ुक्हा परेशान हो गये।

इमाम साहब रह० ने फ़रमाया कि कल ज़ुहर की नमाज़ मैं तुम्हारे मुहल्ले की मसजिद में आकर पढ़ूंगा। चुनांचे इमाम साहब तशरीफ़ ले गये, वहाँ नमाज़ पढ़ी और उसके बाद ऐलान कर दिया कि मसजिद के दरवाज़े बंद कर दिये जाएं कोई बाहर न जाये, इसमें चोर भी मौजूद थे, उस मसजिद का एक दरवाज़ा खोल दिया एक तरफ़ ख़ुद बैठ गये और एक तरफ़ उसको बिठा दिया और फ़रमाया कि एक-एक आदमी निकलेगा जो चोर न हो उसके बारे में कहते जांना यह चोर नहीं है। और जब चोर निकलने लगे तो चुप होकर बैठ जाना, चुनांचे जो चोर नहीं होते थे, उनके बारे में कहा जाता था कि यह चोर नहीं है, यह भी चोर नहीं और जब चोर निकलने लगता तो ख़ामोश होकर बैठ जाता इस तरह उसने बतलाया नहीं मगर बिना बतलाये सारे चोर जान लिये गये कि यह सब चोर हैं। चुनांचे चोर भी पकड़े गये, माल भी मिल गया और बीवी भी हाथ से नहीं गई यह तदबीर की बात है।

—मजालिस हकीमुल इस्लाम, पेज 216

बाग़ी, डाकू और माँ के क़ातिल की नमाज़े जनाज़ा नहीं

सवालः– क़ातिल को सज़ा के तौर पर क़त्ल कर दिया जाये।

उसकी नमाज़े जनाज़ा के बारे में क्या हुक्म है? अगर वालिदैन का क़ातिल हो उस सूरत में क्या हुक्म है? फ़ासिक़, फ़ाजिर और ज़ानी की मौत पर उसकी नमाज़े जनाज़ा के बारे में क्या हुक्म है?

जवाबः– नमाज़े जनाज़ा हर गुनाहगार मुसलमान की है, अलबत्ता बाग़ी और डाकू को अगर मुक़ाबले में मारे जायें तो उनका जनाज़ा न पढ़ा जाये न उनको ग़ुस्ल दिया जाये उसी तरह जिस शख़्स ने अपने माँ-बाप में से किसी को क़त्ल कर दिया हो और उसे किसासन क़त्ल किया जाये तो उसका जनाज़ा भी नहीं पढ़ा जाएगा और अगर वह अपनी मौत मरे तो उसका जनाज़ा पढ़ा जाएगा। ताहम सरबर-आवरदा लोग उसके जनाज़े में शिरकत न करें।

—आपके मसाइल और उनका हल, हिस्सा 3, पेज 132

चिल्ले की असलियत

सवालः– तब्लीग़ वाले चिल्ले में निकलने पर बहुत ज़ोर देते हैं क्या चिल्ले की कोई अस्लियत है? कि जिसकी वजह पर लोग चिल्ला लगाने के लिए कहते हैं?

जवाबः– चिल्ला यानी 40 दिन लगातार अमल की बहुत बरकत और तासीर है, 40 दिन तक अमल करने से रूह और बातिन पर अच्छा असर मुरत्तब होता है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कोह-ए-तूर पर 40 दिन का ऐतिकाफ़ फ़रमाया उसके बाद आपको तौरात मिली।

सूफ़िया-ए-किराम के यहाँ भी चिल्ले का एहतिमाम है लिहाज़ा यह बिल्कुल बे-असल नहीं है। एक हदीस में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

من صلى لله اربعين يوماً فى جماعة يدرك التكبيرة الاولٰى
كتب له براء تان براء ة من النفاق.

जिस शख़्स ने सिर्फ़ ख़ुदा की रज़ामंदी के लिए 40 दिन तक्बीर-ए-ऊला के साथ नमाज़ पढ़ी तो उसके लिए दो परवाने लिखे जाते हैं एक परवाना जहन्नम से निजात का दूसरा निफ़ाक़ से बरी होने का। —तिर्मिज़ी शरीफ़, हिस्सा 1, पेज 33, मिश्कात शरीफ़, पेज 102 बाब मा अल्ल मामून मिनल मताबअतः व हुक्मुल मस्बूक़ुल फ़ज़्ल सानी

इससे मालूम हुआ कि चिल्ले को हालात के बदलने में ख़ास असर है देखिए जब नुत्फ़ा मादर रहम में क़रार पाता है तो पहले चिल्ले में वह नुत्फ़ा अल्क़ा (यानी बंधा हुआ ख़ून) बनता है और दूसरे चिल्ले में वह अल्क़ा मुज़्आ (यानी गोश्त की बोटी बनता है) और तीसरे चिल्ले में मुज़ग़ा के कुछ हिस्सों को हड्डियाँ बना दिया जाता है और उन हड्डियों पर गोश्त चढ़ता है फिर उसके बाद (यानी तीन चिल्लों के बाद जिसके चार महीने होते हैं) उसमें जान पड़ती है। —ब्यानुल क़ुरआन

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में एक शख़्स एक औरत पर आशिक़ हो गया और उसकी मोहब्बत में दीवाना हो गया, वह औरत बड़ी पाकदामन अफ़ीफ़ा और समझदार थी, उसने उस शख़्स को कहलवाया कि 40 दिन तक हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि॰ के पीछे तक्बीर-ए-ऊला के साथ नमाज़ पढ़ो उसके बाद फ़ैसला होगा, उसने 40 दिन तक उसी तरह नमाज़ पढ़ी तो उसकी काया पलट गई और उसका इश्क़े मज़ाज़ी इश्क़े हक़ीक़ी में बदल गया, अब तक वह उस औरत का आशिक़ था अब अल्लाह का आशिक़ हो गया। और इश्क़ भी ऐसा कि अल्लाह की मोहब्बत उसके रग-व-पै में सरायत कर गई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु

को इस वाक़िए का बारे में इत्तिला हुई तो फ़रमायाः صدق الله و رسوله ان الصلوٰة تنهى عن الفحشاء والمنكر

बेशक अल्लह और उसके रसूल ने सच कहा यक़ीनन नमाज़ बे-हयाई और बुराई की बातों को रोकती है।

—फ़तावा रहीमिया, हिस्सा 6, पेज 384

नोटः— एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स 40 दिन इख़्लास के साथ अल्लाह की इबादत करे तो अल्लाह उसके दिल से हिक्मत के चश्मे जारी फ़रमा देते हैं। —रूहुल ब्यान, मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 4, पेज 58

ख़ुदकशी करने वाले की नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ें या नहीं

सवालः— ख़ुदकशी करने वाले मुसलमान की नमाज़े जनाज़ा पढ़नी जायज़ है या नहीं?

जवाबः— बेशक ख़ुदकशी गुनाहे कबीरा है मगर शरीअत-ए-मुतह्हिरा ने इसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ने की इजाज़त दी है अगर कुछ मज़हबी मुक़तदा ज़जरन लोगों की इब्रत के लिए नमाज़े जनाज़ा में शिरकत न करें तो उसकी गुंजाइश है मगर अवाम पर ज़रूरी है कि नमाज़े जनाज़ा पढ़ें, नमाज़े जनाज़ा पढ़े बग़ैर दफ़न न करें।

हदीस में है कि मुसलमान की नमाज़े जनाज़ा तुम पर लाज़िम है, वह नेक हो या बद। اَوْ كَمَا قَالَ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ । दुर्रे मुख़्तार में है: مَنْ قَتَلَ نَفْسِهٖ لَوْ عَمْدًا يُغسِلُ وَيُصَلّٰى بِهٖ يُفْتِىٰ तर्जुमाः— जो आदमी ख़ुद को

अमदन क़त्ल करे तो उसको ग़ुस्ल दिया जाये और उसकी नमाज़े जनाज़ा भी पढ़ी जाये। इसी पर फ़तवा है। واللہ تعالیٰ اعلم

—शामी, हिस्सा 1, पेज 815, फ़तावा रहीमीया, हिस्सा 1, पेज 367

जुमे के दिन इंतक़ाल होने की फ़ज़ीलत

सवालः— जुमे के दिन मौत की फ़ज़ीलत वारिद हुई है, यह फ़ज़ीलत कब से है और कहाँ तक है?

जवाबः— हदीस शरीफ़ से साबित है कि जुमे के दिन या जुमे की रात को वफ़ात पाने वाला मुसलमान मुनकर व नकीर के सवाल व जवाब से महफ़ूज़ रहता है। ثُمَّ ذِکْرَانِ مَنْ لَّا یُسْئَلُ ثَمَانِیَۃٌ - اِلٰی قَوْلِہٖ - وَالْمَیِّتُ یَوْمَ الْجُمُعَۃِ اَوْ لَیْلَتِہَا۔

—दुर्रे मुख़्तार मअ शामी, हिस्सा 1, पेज 798

अंबिया के नामों की वजह-ए-तसमिया

1. **आदम** का मतलब गंदुमगूं है। अबुल बश्र का यह नाम उनके जिस्मानी रंग को ज़ाहिर करता है।
2. **नूह** का मतलब आराम है। बाप ने उनको आराम व राहत का मूजिब क़रार दिया।
3. **इस्हाक़** का मतलब ज़ाहिक यानी हंसने वाला है, वह हश्शाश बश्शाश चेहरे वाले थे।
4. **याक़ूब** पीछे आने वाला। यह अपने भाई ऐसू के साथ तवाम पैदा हुए थे।
5. **मूसा** पानी से निकला हुआ। जब उनका संदूक़ पानी से निकाला गया तब यह नाम रखा गया।
6. **यहया** उम्र दराज़ बुढ़े माँ-बाप की बहतरीन आरज़ूओं का

तजुर्मान है।

7. ईसा सुर्ख़ रंग चेहरा, गुलगों की वजह से यह नाम तज्वीज़ हुआ। —रहमतुल लिल् आलमीन, हिस्सा 3, पेज 14

पाँच आदमी अल्लाह की ज़िम्मेदारी में हैं

हज़रम मआज बिन जबल फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि जो आदमी अल्लाह के रास्ते में निकलता है वह अल्लाह की ज़िम्मेदारी में होता है, और जो किसी बीमार की इयादत करने जाता है, वह भी अल्लाह की ज़िम्मेदारी में होता है और जो सुब्ह या शाम को मस्जिद में जाता है वह भी अल्लाह की ज़िम्मेदारी में होता है और जो मदद करने के लिए इमाम के पास जाता है वह भी अल्लाह की ज़िम्मेदारी में होता है। और जो घर बैठ जाता है और किसी की बुराई और ग़ीबत नहीं करता वह भी अल्लाह की ज़िम्मेदारी में होता है। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 815

इयादत करने का अजीब वाक़िआ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रहमतुल्लाहि अलैहि का वाक़िआ लिखा है कि जब आप मरज़ुल वफ़ात में थे, लोग आपकी इयादत करने के लिए आने लगे। इयादत के बारे में हुज़ूर अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीम यह है कि: مَن عَادَ مِنكُم فَلْيُخَفِّف यानी जो शख़्स तुममें से किसी बीमार की इयादत करने जाये जो उसको चाहिए कि वह हल्की फुल्की इयादत करे, बीमार के पास

ज़्यादा देर न बैठे क्योंकि कभी-कभी मरीज़ को ख़िलूवत (अकेलेपन) की ज़रूरत होती है और लोगों की मौजूदगी में वह अपना काम बे-तकल्लुफ़ी से अंजाम नहीं दे सकता है, इसलिए मुख़्तसर इयादत करके चले आओ और उसको राहत पहुँचाओ। तक्लीफ़ मत पहुँचाओ... बहरहाल हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० बिस्तर पर लेटे हुए थे। एक साहब इयादत के लिए आकर बैठ गये और ऐसे जमकर बैठ गये कि उठने का नाम ही नहीं लेते और बहुत से लोग इयादत के लिए आते रहे और थोड़ी मुलाक़ात करके जाते रहे मगर वह साहब बैठे रहे न उठे। अब हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० इस इंतज़ार में थे कि यह साहब चले जायें तो मैं ख़िलूवत में बे-तकल्लुफ़ी से अपनी ज़रूरियात का कुछ काम कर लूं, मगर खुद से उसको चले जाने के लिए भी कहना मुनासिब नहीं समझते थे। जब काफ़ी देर गुज़र गई और वह अल्लाह का नेक बन्दा उठने का नाम ही नहीं ले रहा था तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० ने उन साहब से फ़रमाया यह बीमारी की तक्लीफ़ तो अपनी जगह पर है ही लेकिन इयादत करने वालों ने अलग परेशान कर रखा है कि इयादत के लिए आते हैं और परेशान करते हैं।

आपका मक़्सद यह था कि शायद यह मेरी बात समझकर चला जाये मगर वह अल्लाह का बंदा फिर भी नहीं समझा। और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक से कहा कि हज़रत! अगर आप इजाज़त दें तो कमरे का दरवाज़ा बंद कर दूँ? ताकि कोई दूसरा शख़्स इयादत के लिए न आये, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने जवाब दिया। हाँ भई बंद कर दो मगर अंदर से बंद करने के बजाए बाहर से जाकर बंद कर दो... बहरहाल! कुछ लोग ऐसे होते हैं

जिनके साथ ऐसा मामला भी करना पड़ता है इसके बग़ैर काम नहीं चलता लेकिन आम हालत में ज़्यादा से ज़्यादा यह कोशिश की जाए कि दूसरा आदमी यह महसूस न करे कि मुझसे ऐराज़ बरता जा रहा है। अल्लाह तआला अपनी रहमत से हम सबको उन सुन्नतों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

—इस्लाही ख़ुतबात, हिस्सा 6, पेज 209

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत का तरीक़ा

बुज़ुर्गों ने लिखा है कि अगर किसी शख़्स को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत का शौक़ हो वह जुमे की रात में दो रक्अत नफ़्लि नमाज़ इस तरह पढ़े कि हर रक्अत में सूरः फ़ातिहा के बाद 11 मर्तबा आयतल कुर्सी और 11 मर्तबा सूरः इख़्लास पढ़े और सलाम फेरने के बाद 100 मर्तबा यह दुरूद शरीफ़ पढ़ेः

"اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ"

अगर कोई शख़्स चंद मर्तबा यह अमल करे तो अल्लाह तआला उसको हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब फ़रमा देते हैं शर्त यह है कि वह शौक़ और तालिबे कामिल हो और गुनाहों से भी बचता हो।

—इस्लाही ख़ुतबात, हिस्सा 6, पेज 104

आठ क़िस्म के लोग जिन से क़ब्र में सवाल नहीं किया जाएगा

शामी में लिखा है कि जिन लोगों से सवाल नहीं किया जाएगा वह आठ क़िस्म के लोग हैं। 1. शहीद। 2. इस्लामी मुल्क की सरहद की हिफ़ाज़त करने वाला। 3. मरज़े ताऊन में इंतक़ाल होने वाला। 4. ताऊन के ज़माने में ताऊन के अलावा किसी मरज़ से मरने वाला जबकि वह उस पर साबिर और सवाब की उम्मीद रखने वाला हो। 5. सिद्दीक़। 6. बच्चे। 7. जुमे के दिन या रात में मरने वाला। 8. हर रात **सूरः तबारकल्लज़ी** पढ़ने वाला और कुछ हज़रात ने इस सूरः के साथ **सूरः सज्दा** को भी मिलाया है। और अपने मरज़ मौत में **क़ुल हुवल्लाहु अहद** पढ़ने वाला और शारह रहमतुल्लाहि अलैहि ने इशारा फ़रमाया कि इनमें अंबिया अलैहिमुस्सलाम का इज़ाफ़ा किया जाएगा इसलिए कि वह सिद्दीक़ीन से दर्जे में बढ़े हुए हैं। —शामी, पेज 872

इब्राहीम बिन अदहम के वालिद का ख़ौफ़-ए-ख़ुदा

मज़कूर है कि एक दिन इब्राहीम बिन अदहम रहमुतल्लाहि अलैहि का बुख़ारा के बाग़ात की तरफ़ से गुज़र हुआ। आप एक नहर के किनारे (जो बाग़ात के अंदर से होती हुई निकलती थी)। बैठकर वुज़ू करने लगे, आपने देखा कि नहर मज़्कूर में एक सेब बहता हुआ आ रहा है, ख़्याल किया कि इसके खा लेने में कोई बात नहीं। चुनांचे उठाकर खा लिया जब खा चुके तो यह वसूवसा

पैदा हुआ कि मैंने सेब के मालिक से इजाज़त नहीं ली और ना-जायज़ तरीक़े पर खा लिया है, इस ख़्याल से मालिक-ए-बाग़ के पास गये कि जाकर उसे इस अम्र की इत्तिला दे दें ताकि उसकी इजाज़त से हलाल व मुबाह हो जाये, चुनांचे बाग़ के दरवाज़े को जहाँ से यह सेब बहकर आ रहा था खटखटाया, आवाज़ सुनकर एक लड़की बाहर आई आपने उससे कहा कि मैं बाग़ के मालिक से मिलना चाहता हूँ उसे भेज दो, उसने अर्ज़ किया कि वह औरत है। आपने फ़रमाया कि अच्छा उससे पूछ लो। मैं खुद हाज़िर हो जाऊं। चुनांचे इजाज़त मिल गई और आप उस ख़ातून के पास तशरीफ़ ले गये और सारा वाक़िआ उसको सुनाया। ख़ातून-ए-मज़्कूर ने जवाब दिया कि बाग़ आधा तो मेरा है और आधा सुलतान का है और वह यहां नहीं हैं बल्ख़ तशरीफ़ ले गये हैं। जो बख़ारा से दस दिन की दूरी पर है। उसने अपना सेब का आधा हिस्सा तो आपको माफ़ कर दिया। अब बाक़ी रहा दूसरा आधा अब उसे माफ़ कराने बल्ख़ तशरीफ़ ल गये जब वहाँ पहुंचे तो बादशाह की सवारी जुलूस के साथ जा रही थी उस हालत में आपने सारा वाक़िआ की बादशाह को ख़बर दी और आधे सेब की मआफ़ी के तालिब हुए। बादशाह ने फ़रमाया इस वक़्त तो मैं कुछ नहीं कहता आप कल मेरे पास तशरीफ़ ले आइये। उसकी एक निहायत हसीन व जमील लड़की थी और बहुत से शहज़ादों के शादी के पैग़ाम उसके लिए आ चुक थे लेकिन शहज़ादी का बाप यानी बादशाह इनकार कर दिया करता था क्योंकि लड़की इबादत और नेककारों को बहुत दोस्त रखती थी इसलिए उसकी ख़्वाहिश यह थी कि दुनिया के किसी ज़ाहिद से उसका निकाह हो। जब बादशाह महल में वापस आया तो लड़की से अदहम का सारा

क़िस्सा बयान किया और कहा कि मैंने ऐसा शख़्स कहीं नहीं देखा कि सिर्फ़ आधा सेब हलाल करने के लिए बुख़ारा से आया है। जब उस लड़की ने यह कैफ़ियत देखी सुनी तो निकाह मंज़ूर कर लिया। जब दूसरे दिन अदहम बादशाह के पास आये तो उसने उनसे कहा कि जब तक आप मेरी लड़की के साथ निकाह न करेंगे आपको आधा सेब मआफ़ नहीं करूंगा। अदहम ने बहुत मना करने के बाद मजबूर होकर निकाह करना मंज़ूर कर लिया। चुनांचे बादशाह ने लड़की का अदहम के साथ निकाह कर दिया। जब अदहम ख़ुलूवत में अपनी बीवी के पास गये तो देखा कि लड़की निहायत आरास्ता व पैरास्ता है और वह मकान भी जहाँ लड़की थी निहायत तकल्लुफ़ात के साथ मुज़य्यन है। अदहम एक गोशे में जाकर नमाज़ में मसरूफ़ हो गये यहां तक कि उस हालत में सुब्ह हो गई और लगातार सात शबें यानी रातें उसी तरह गुज़ार गईं और अब तक सुलतान ने सेब का आधा हिस्सा मआफ़ न किया था इसलिस आपने बादशाह को याद-दिहानी कहला भेजा कि अब वह मआफ़ फ़रमा दीजिए। बादशाह ने जवाब दिया कि जब तक आपका मेरी लड़की के साथ इज्तेमाअ का इत्तिफ़ाक़ का न होगा मैं मआफ़ न करूंगा। आख़िरकार रात हुई और अदहम अपनी बीवी के साथ इज्तेमाअ पर मजबूर हुए, आपने ग़ुस्ल किया, नमाज़ पढ़ी और चीख़ मारकर मुसल्ले पर सज्दे में गिर पड़े। लोगों ने देखा तो अदहम रहमतुल्लाहि अलैहि मुर्दा थे। उसके बाद लड़की से इब्रहीम रहमतुल्लाहि अलैहि पैदा हुए चूंकि इब्राहीम के नाना के कोई लड़का न था। इसलिए सल्तनत इब्राहीम को मिली आपके सल्तनत छोड़ने का वाक़िआ मशहूर है उसकी अस्ल भी यही है। —सफ़रनामा इब्ने बतूता, हिस्सा 1, पेज 106

एक नेकी पर जन्नत में दाख़िला

क़्यामत के दिन ऐसे एक शख़्स को हाज़िर किया जाएगा जिसके मीज़ान के दोनों पलड़े नेकी-बदी बराबर होंगे और ऐसी कोई नेकी नहीं होगी जिससे नेकी का पलड़ा झुक जाये, फिर अल्लाह तआला अपनी रहमत से फ़रमाएंगे कि लोगों में जाकर तलाश करो कि तुम्हें कोई नेकी मिल जाये, जिससे तुमको जन्नत में पहुँचाऊं, तो वह शख़्स बहुत हैरान व परेशान लोगों में तलाश करता रहेगा लेकिर हर शख़्स यही कहेगा कि मुझे अपने बारे में डर है कि मेरी नेकी का पलड़ा हल्का न हो जाये और मैं तुझसे नेकी का ज़्यादा मोहताज हूँ, तो वह शख़्स बहुत मायूस होगा इतने में एक शख़्स पूछेगा तुझे क्या चाहिए वह कहेगा। मुझे एक नेकी चाहिए और मैं बहुत लोगों से मिल चुका जिनकी हज़ारों नेकियाँ हैं लेकिन हर एक ने मुझे बख़ीली (कंजूसी) की है, तो वह शख़्स कहेगा कि मैंने भी अल्लाह तआला से मुलाक़ात की थी और मेरे सहीफ़े (कागज़ात) में सिर्फ़ एक ही नेकी है और मुझे यह गुमान है कि इससे मेरा कोई फ़ायदा नहीं होगा लिहाज़ा तू ही इसको मेरी तरफ़ से हदिया (तोहफ़े में) ले जा। (और अपनी जान बचा) वह शख़्स उस नेकी को लेकर बहुत मुसर्रत के साथ अल्लाह तआला अपने इल्म के बावजूद उससे पूछेंगे कि तेरी क्या ख़बर है, वह कहेगा, ऐ मेरे रब! उसने अपना काम इस तरीक़े से पूरा किया। (वह शख़्स पूरी हालत वहाँ बयान करेगा) फिर अल्लाह तआला उस शख़्स को हाज़िर करेगा जिसने उसको नेकी दी थी और उससे अल्लाह तआला कहेगा आज के दिन मेरी सख़ावत तेरी सख़ावत से कहीं ज़्यादा है लिहाज़ा अपने भाई का हाथ पकड़ और तुम दोनों जन्नत में चले जाओ।—अत्तज़्किरा, हिस्सा 1, पेज 310, ज़रक़ाई, हिस्सा 12, पेज 360

वालिद के साथ ख़ैर-ख़्वाही पर जन्नत में दाख़िला

ऐसा ही एक दूसरा वाक़िआ है कि एक शख़्स के दोनों मीज़ान के पलड़े बराबर होंगे। अल्लाह तआला उससे फ़रमाएंगे तू न तो जन्नती है और न जहन्नमी है, इतने में फ़रिश्ता एक सहीफ़ा लाकर उसके मीज़ान के एक पलड़े में रखेगा, जिसमें उफ़ (वालिदैन की तक्लीफ़ व सद्मे की आवाज़) लिखा होगा जो बदी के पलड़े को वज़नी कर देगा इसलिए कि वह (उफ) ऐसा कलिमा है जो दुनिया के पहाड़ों के मुक़ाबले में भारी है। चुनांचे उसके लिए जहन्नम का फ़ैसला होगा वह शख़्स अल्लाह तआला से जहन्नम से निजात पाने की दर्ख़्वास्त करेगा तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमाएंगे इसको वापस लाओ, फिर अल्लाह तआला उसे कहेंगे ऐ माँ-बाप के नाफ़रमान तू किस वजह से जहन्नम से छुटकारे की दर्ख़्वास्त करता है वह शख़्स कहेगा। ऐ रब! मैं जहन्नम में जाने वाला हूँ कि मुझे वहाँ से छुटकारा नहीं क्योंकि मैं वालिद का नाफ़रमान था और मैं अभी देख रहा हूँ कि मेरा बाप भी मेरी तरह जहन्नम में जाने वाला है लिहाज़ा मेरे बाप के बदले में मेरा अज़ाब दोगुना कर दिया जाये और उसको जहन्नम से छुटकारा दिया जाये। यह बात सुनकर अल्लाह तआला हंस पड़ेंगे और फ़रमाएंगेः (दुनिया में तू इसका नाफ़रमान था और आख़िरत में इसको बचा दिया, पकड़ो अपने बाप का हाथ और दोनों जन्नत में चले जाओ।)

—अत्तज़्किरा, हिस्सा 1, पेज 319, क़ुर्तबी, हिस्सा 1, ज़रक़ाई, हिस्सा 12, पेज 319

अमानत को अल्लाह तआला के सुपुर्द करने का अजीब वाक़िआ

अल्लामा दमैरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मैंने बहुत सी किताबों में यह रिवायत देखी है जिसको ज़ैद बिन अस्लम ने अपने वालिद के हवाले से नक़ल किया है, कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बैठे हुए लोगों से मुख़ातिब थे, तो एक शख़्स अपना लड़का साथ लिए हुए हाज़िर-ए-मजलिस हुआ उसको देखकर हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० ने फ़रमाया कि मैंने नहीं देखा किसी कव्वे के जो ज़्यादा मुशाबा हो तेरे इस कव्वे से। (यानी ज़्यादा काला)

उस शख़्स ने जवाब दिया कि ऐ अमीरूल मोमिनीन! इस लड़के को इसकी वालिदा ने उस वक़्त पैदा किया जबकि वह मर चुकी थी, यह सुनकर हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० सीधे होकर बैठ गये और फ़रमायाः इस बच्चे का क़िस्सा मुझे बयान कर, चुनांचे उस शख़्स ने कहा कि ऐ अमीरूल मोमिनीन! एक मर्तबा मैंने सफ़र का इरादा किया उस वक़्त इसकी वालिदा को इसका हमल था उसने मुझसे कहा कि तुम इस हाल मे मुझे छोड़कर जा रहे हो कि मैं हमल की वजह से बोझिल हो रही हूँ। मैंने कहाः استودع الله ما في بطنك (कि मैं इस बच्चे को जो तेरे बतन में है अल्लाह तआला के सुपूर्द करता हूँ)। यह कहकर मैं सफ़र में रवाना हो गया और कई साल के बाद घर वापस आया तो घर का दरवाज़ा बंद पाया दूसरों से मालूम किया कि मेरी बीवी कहाँ है? उन्होंने कहा कि उसका इंतक़ाल हो गया, मैंने إنا لله पढ़ा उसके बाद अपनी बीवी की क़ब्र पर गया। मेरे चचाज़ाद भाई मेरे साथ थे, मैं काफ़ी देर

तक क़ब्र पर रूका रहा और रोता रहा, मेरे भाई ने मुझे तसल्ली दी और वापसी का इरादा किया और मुझे लाने लगे, चंद गज़ ही हम आये होंगे कि मुझे क़ब्रिस्तान में एक आग नज़र आई मैंने अपने चचाज़ाद भाई से पूछा, यह आग कैसी है? उन्होंने कहा कि यह आग रोज़ाना रात के वक़्त भाभी मरहूमा की क़ब्र में नमूदार (पैदा) होती है, मैंने यह सुनकर اِنَّا لِلّٰہِ पढ़ा और कहा औरत बहुत नेक और तहज्जुद गुज़ार थी तुम मुझे दोबारा उस क़ब्र पर ले जाओ, चुनाँचे वह मुझे क़ब्र पर ले गये जब मैं क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुआ तो मेरे चचाज़ाद भाई वहीं ठिठक गये और मैं तन्हा अपनी मरहूमा बीवी की क़ब्र पर पहुंचा तो क्या देखता हूँ कि क़ब्र खुली हुई है और बीवी बैठी है और यह लड़का उसके चारों तरफ़ घूम रहा है अभी मैं इस तरफ़ मुतवज्जह था कि एक ग़ैबी आवाज़ आई कि अल्लाह तआला को अपनी अमानत सुपुर्द करने वाले अपनी अमानत वापस ले लो। और अगर तू उसकी वालिदा को भी अल्लाह तआला के सुपुर्द करता तो वह भी तुझको मिल जाती। यह सुनकर मैंने लड़के को उठा लिया मेरे लड़के को उठाते ही क़ब्र बराबर हो गई। अमीरूल मोमिनीन यह क़िस्सा जो मैंने बयान किया ख़ुदा की क़सम सही है। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पेज 180

27 साल के बाद अल्लाह के रास्ते से वापस आना

हज़रत इमाम रबीआ रहमतुल्लाहि अलैहि के वालिद अबू अब्दुर्रहमान फ़रोख़ को बुना उमय्या के अहद में ख़ुरासान की तरफ़ एक मुहिम पर जाना पड़ा, उस वक़्त रबीआ शिक्मे मादर (पेट) में

थे फ़रोख़ ने चलते वक़्त अपनी बीवी के पास 23 हज़ार दीनार घर के ख़र्चे के लिए छोड़ दिये थे। ख़ुरासान पहुँचकर कुछ ऐसे इत्तिफ़ाक़ात पेश आये कि फ़रोख़ पूरे 27 साल तक वतन (मदीना) वापस न आ सके। रबीआ की वालिदा बहुत रौशन ख़्याल और अक़्लमंद थीं, रबीआ सन शऊर (जवानी) को पहुंचे तो उन्होंने उनके लिए तालीम का अच्छे से अच्छा इंतज़ाम किया और इस सिलसिले में जितना रुपया उनके पास था सब ख़र्च कर डाला। 27 बरस के बाद जब फ़रोख़ मदीना वापस आये तो इस शान से घोड़े पर सवार थे और हाथ में नेज़ा था, मकान पर पहुंचकर नेज़े की नोक से दरवाज़ा खटखटाया, दस्तक सुनकर रबीआ दरवाज़े पर आये, बाप बेटे आमने सामने लेकिन एक दूसरे से बिल्कुल ना-आशना (अंजान) थे, रबीआ ने फ़रोख़ को अजनबी समझकर कहा:

يا عدو والله أتهجمعلى منزلي؟ فقال لا وقال فروخ يا عدو الله انت رجل دخلت على حرمتي.

ऐ दुश्मने ख़ुदा तू मेरे मकान पर हमला करता है, फ़रोख़ बोले नहीं, बल्कि ऐ दुश्मने ख़ुदा तू मेरे हरम में घुसा हुआ है, इसी में बात बढ़ गई और नौबत यहाँ तक पहुंची कि दोनों एक दूसरे से दस्ते गिरेबाँ हो गये इस शौर-व-ग़ुल और हंगामे की आवाज़ से आसपास के लोग जमा हो गये। धीरे-धीरे ख़बर इमाम मालिक बिन अनस रहमतुल्लाहि अलैहि को भी पहुंच गई। रबीआ उस वक़्त उम्र के लिहाज़ से नौजवान थे लेकिन उनके इल्म व फ़ज़ल का चर्चा दूर-दूर तक फैल गई थी और इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि जैसे अइम्मा-ए-हदीस उनके दर्स में शरीक होते थे, इमाम मालिक रह० और उनके कुछ दूसरे मशाइख़-ए-वक़्त इसलिए यहाँ

आये थे कि अपने उस्ताद हज़रत रबीआ की मदद करें, इमाम मालिक जिस वक़्त वहाँ पहुंचे रबीआ उस वक़्त फ़रोख़ से कह रहे थेः "खुदा के क़सम! मैं तुमको बादशाह के पास ले जाये बग़ैर नहीं मानूंगा" इस पर फ़रोख़ कहते हैं और मैं तुमको किस तरह बादशाह के सामने पेश करने से बाज़ रह सकता हूँ जबकि तुम यहाँ मेरी बीवी के पास हो। लोग दर्मियान में बीच बचाव करा रहे थे। शोर व शुग़्ब बराबर बढ़ता ही रहा यहाँ तक कि लोगों ने इमाम आली हज़रत मालिक बिन अनस रह० को आते हुए देखा तो सब चुप हो गये। इमाम मालिक रह० ने आते ही फ़रोख़ से मुख़ातिब होकर फ़रमाया बड़े मियाँ आप किसी दूसरे घर में क़्याम कर लीजिए। फ़रोख़ बोले यह तो मेरा ही घर है, मेरा नाम फ़रोख़ है और मैं फ़्लां का ग़ुलाम हूँ, हज़रत रबीआ की माँ ने अंदर से जो यह सुना बाहर निकल आई और उन्होंने कहा हाँ यह फ़रोख़ मेरे शौहर हैं और यह रबीआ मेरे लड़के हैं। फ़रोख़ जब ख़ुरासान की मुहिम पर जा रहे थे रबीआ मेरे शिक्म में थे। इस हक़ीक़त के खुल जाने पर बाप-बेटे दोनों ने मुआनिक़ा किया और ख़ूब मिलकर रोए और फ़रोख़ घर में दाख़िल हुए और बीवी से रबीआ की तरफ़ इशारा करके पूछा यह मेरे बेटा है? वह बोलीं हाँ! थोड़ी देर के बाद फ़रोख़ ने बीवी से रुपये के बारे में पूछा जो वह ख़ुरासान जाते हुए उन्हें दे गये थे और कहा कि लो मेरे साथ यह चार हज़ार दीनार हैं। यहाँ यह सब रुपया हज़रत रबीआ रह० की तालीम पर ख़र्च हो चुका था। बीवी बोलीं मैंने वह माल दफ़न कर दिया है चंद रोज़ के बाद निकाल दूंगी, अभी क्या जल्दी है। मामूल के मुताबिक़ हज़रत रबीआ रह० वक़्त पर मस्जिद में तशरीफ़ ले गये और दर्स शुरू कर दिया जिसमें इमाम मालिक

रह०, हसन बिन ज़ैद रह० बिन अबी अली और दूसरे ऐयाने मदीना शरीक थे। रबीआ की वालिदा ने दर्स का वक़्त पहचानकर फ़रोख़ से कहा कि जाओ नमाज़ मस्जिदे नब्वी में पढ़ना। अब फ़रोख़ यहाँ आये, नमाज़ पढ़ी फिर उन्होंने देखा कि दर्से हदीस का एक ज़बरदस्त हल्क़ा क़ायम है उनको सुनने का शौक़ हुआ, हल्क़ के क़रीब चले गये लोगों ने उनको देखकर रास्ता देना शुरू किया। हज़रत रबीआ रह० ने दर्स में ख़लल पड़ने के ख़्याल से सर झुका लिया और ऐसे हो गये कि जैसे उन्हें देखा ही नहीं फ़रोख़ इस हालत में इनको पहचान न कर सके। लोगों से पूछाः مَـــنْ هٰـــذَا الـرَّجُـلُ؟ فَـقَـالُوْا لَهُ هٰذَا رَبِيْعَةُ بِنْ اَبِىْ عَبْدِ الرَّحْمٰنِ यह कौन हैं? जवाब दिया रबीआ बिन अबी अब्दुर्रहमान। अबू अब्दर्रहमान फ़रोख़ ख़ुशी से बेताब हो गये और कहने लगे अल्लाह ने मेरे बेटे का मर्तबा बुलंद किया है।

घर वापस आये तो बीवी से बोले मैंने आज तुम्हारे बेटे को ऐसी शान में देखा है कि किसी साहिब-ए-इल्म व फ़िक़्ह को नहीं देखा। अब हज़रत रबीआ रह० की वालिदा ने कहा आपको क्या चीज़ ज़्यादा पसंद है। वह हज़ार दीनार या यह जाह व मंज़िलत-ए-इल्मी? फ़रोख़ बोले ख़ुदा की क़सम! यह वजाहत ज़्यादा महबूब है। कहने लगीं मैंने वह सब रुपया इसी पर ख़र्च कर दिया है। फ़रोख़ बोले तुमने वह रुपया सही काम में ख़र्च किया है।

—तारीख़े बग़दाद, हिस्सा 8, पेज 420